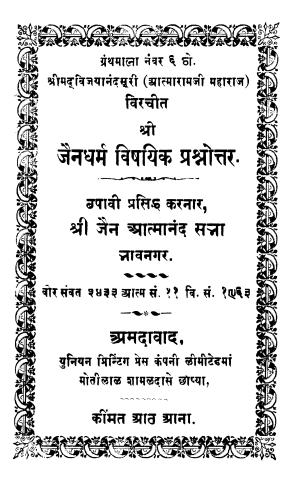
श्रेन अंधभाजा

EEINIÈG, CHGGAR. 1: 02.92-2824323 3008285



प्रस्तावनां.

षरीपकारी महात्मानिना लेखोनी महत्वता अपूर्व होय हे. तेना जोका थवानो आधार तेना प्राहकना अधिकार नपर रहे हे, एवा अपूर्व ले-खोनुं रहस्य आदर पूर्वक अञ्यासथोज प्रपट था य हे; अने तेनुं आदर पूर्वक अवण पहन अने मनन करवाथीज अंते ते प्रसदायी नीवमे हे.

पावेत्र जैन दर्शन जणावे हे के आ जगतमां अनादि कालयोज मिथात्व हे. जे मानवाने आ पणने प्रत्यक्त आदि कारणो मोजुद हे, आदा मि ध्यात्वना कारणरुप अज्ञानरुपी अंधकारनो नाश करवा परम हपकारी पूज्यपाद गुरु श्री विजया नंदसूरी (आत्मारामजो)ए आ जैनधर्म विषयोक्त प्रश्नोत्तर नामनो यंथ रच्यो हे, आ अने आ सिवायना बोजा आ महात्माए बनावेला यंथो प्रथमथीज प्रशंसनीय थता आवेला हे.

श्रा हित धर्मनो जे ज्ञावना तेमना मगज मां जन्म पामेली ते लेख रुपे बाहार श्रावतांज श्राखो डनीयाना पंगीतो-क्वानी धर्म गुरुन- बेखको अने सामान्य बोको उपर जे असर करे वे तेज तनी उपयोगिता दर्शाववाने बस वे.

जैनधर्म अनादि कालधीज हे, अने ते बौ इधर्मधो तदन अलग अने पेहेलाधीज हे, ते ते मज जैनमतना पुस्तकोनी जल्पिनकर्मनुं स्व-रूप-जीनप्रतिमानी पूजा करवानो तीर्धकरोए करेलो जपदेश विगेरे बीजो केटलीक जपयोगी वाबतोनो आ ग्रंथमां समावेश करेला हे.

वर्तमान कालमां व्यवहारिक केलवणी ली धेला युवको जेने जैनधर्मनुं तत्व शुं हे तेनाथी अजाण हे तेनेने तेमज अन्य धर्मीनेने आ प्रंथ आदांत वांचवायी जैनधर्मनुं हुटु हुटु स्वरूप के-टलेक अंशे मालम परे तेम हे.

कोइपण निष्पक्षपातो तत्व जोक्कासु पुरुष आ यंथनुं स्वरुप आद्यंत अवलोकरो तो एक जै नना महान् विद्याने जारतवर्षनी जेन प्रजा छ-पर आवा जनम यंथो रची महद् छपकार कीधो है. ते साथे आ विद्यान शिरोमणो महाशय पुरुष सांप्रत काले विद्यमान नयो तेने माटे अतुल खेद प्राप्त यशे.

बैवटे ग्रमारे श्रानंद सहित जणाववुं पमेबे के मरहुम पूज्यपादना हृ इयमां अनगार धर्मनी साथ परोपकारपणानी पवित्र गया जे पनी हती ते अथा तेमना परिवार मंमखना हृदयमां उतरी बे. पोताना गुरुनुं यथाशक्ति अनुकरण करवाने ते शिष्य वर्ग त्रिकरण शुद्धियो प्रवर्त हे तेनी साथे विद्या, ऐक्यता स्वार्पण अने परोपकार बुद्धि तेमना शिष्य वर्गमां प्रत्यक्ष मूर्तिमान जोवामां आवे वे अने तेन परम सात्विक होइ सर्वने ते-बांज देखे वे अने तेवाज करवा इत्ते वे अने ते-तनं जीवन गुरु जित्रमय हे आवा केटलांक गु-णोने लइने आवा महान् यंथोने प्रसिद्धीमां लावी जैन समुहमां मूकी जैनधर्मनुं अजवाल पामवा या ग्रंथनो यावृतो करवानो समय याज्यो है जो के या यंथनी प्रथम यावृती याजयो यहार वर्ष **उपर** संबत १ए४५ नी सालमां मरहुम गुरुराज नी समत्तोषो राजेश्री गीरधरलाल होराजाई पालणपुर दरबारी न्यायाधी हो बाहार पामी हती, परंतु तेनी एक नकल हालमां नहीं मलवाधी ते पूज्यपाद गुरुराजना परिवार मंमलनी आङ्गानुसा र तेनी आ बीजी आवृती अमोए बाहार पामेली है.

श्रावा उपयोगो महान ग्रंथ समारी सजा तरफथो बहार पमे तेमां श्रमोने मोटुं मान हे जेथो तें बाबतमां श्रमोने श्राङ्का श्रापनार ए म हान गुहराजना परिवार मंमलने श्रमो उपकार मानवो श्रा स्थले जूतो जता नशो.

वेवटे आ ग्रंथनो प्रथम आवृतो प्रकट क-रावनार राजेश्री गोरधरलाल हीराजाइए अमारी सजा तरफत्री बोजी आवृती प्रकट करवानी आपेल मान जरेलो परवानगो माटे तेननो पण नपकार मानीए बीए,

श्रा ग्रंथ उपावतांना दरम्यान कच्छ मोटी खाखरना रहेनार शंठ रणसीजाइ तेमज रवजी जाइ तथा नेणसीजाइ देवराजे तेनी सारी सं-ख्यामां कोपोचे लेवानो इच्छा जणाववाथी श्रावा इतन खाताना कार्यना उत्तजनार्थे श्रा तेनए क- रेखी मदद माटे अमो ते होने धन्यवाद आपीए हीये अने तेमां हो उरवजी जाइ देवराजे खरीदेख बुको तमाम पोते पोता तरफ यो वगर की मते आपवाना होवा थी तेमना आवा स्तुती जरेखा कार्यने माटे अमोने वधारे आनंद थाय है.

ग्रंथनी शुद्धता अने निर्दोषता करवानी सा वधानी राख्या बतां करी कोइ स्थले हुछी दोष-थी के प्रमादथो जूल थयेलो मालम पम तो सुझ पुरुषो सुधारी वांचशो अने अमोने लखी जणा वशो तो तेननो नपकार मानोशुं.

संवत १०६३ ना फागण सुद ५ श्री जैन आम्रानंद सन्ना. रविवार ने हेहीरोड.

ऋर्पणपत्रिकाः

सद्गुण संपन्न स्वधूर्म प्रेमी गुरुजक्त सुक रोठ श्रीरणशीमाई देवराज सु. मोटी खाखर. (कच्छ).

ब्राप एक नदार ब्रने श्रीमान जैन गृहस्य बो जैनधर्म प्रत्येनो तेमज मुनि महाराजान प्र त्येनो आपनो अवर्णनीय प्रेम, श्रद्धा, अने लाग्णी प्रसंशनीय हे. जैनधर्मना ज्ञाननो बहोलो फेलावो थाय तेवा यत्न करवामां आप प्रयत्नशील हो. श्रने तेवा उत्तम कार्यना नमुनारुपे श्रापे श्रा ग्रंथ बपाववामां योग्य मद्द आपी वे तेमज अमारी मा सन्ना उपर अत्यंत प्रीति धरावो हो. विगेरे कारलोची आ प्रंच अमें आपने अर्पण करवानी रजा बइए बीए.

प्रसिड्कर्ता.

जैन प्रश्नोत्तर.

अगुरामा	राका.
विषय.	प्रश्नोत्त र −अंक.
जिन अरु जिन शासन.	१ –२
तिर्थंकर.	\$- 8
महाविदेह आदि क्षेत्रोमें मनुष्यं	कों जानेकें
छिये हरकतो.	५
भारतवर्ष.	Ę
भारतवर्षमें तीर्थंकरो.	9-6
प्रस्तुत चोवीसीके तीर्थकरोका	मातापिता. ए
ऋषभदेवसें पहिछें भारतवर्षमें	धर्मका अभाव. १०
ऋषभदेवने चलाया हुवा धर्म	
आताहै, तिस विषयक व्या	
महावीरचरित.	12-93-98-29-22
	२३-२४-२ ५-२६- २७
	२८-२९-३०-३१-३२
	३३-३५-३६-३७-४२
	४३-४४-४५-४६-४७
	४८-४९-५०-५१-५२
	५३-५४-५५-५७-५७
	५९-८३-८४-८५-८६
	₹9-68-68-69
	ं १३४-१३६-१३७-१३८

ब्रातिवगेरा मदका फळ.

24-86

जैनीयोंए अपने स्वधांमकों भ्राता सहश	
जाननां.	१६-१७
जैनीयोमें ज्ञावि.	१७-२०
परोपकार.	₹8
ज्ञान.	∌ ९−४०~४१
अछेरा.	५६
मुनियोंका धर्म.	६६
श्रावकोंका धर्मे	ĘIJ
मुनियोंका-अरु श्रावकोंका कीस छीये	
धर्म पाळनां, तिस विषयक ब्यान.	६८
महावीर स्वामीने दिखलाये हुवे धर्म	
विषयक पुस्तकः ६९-७०-	60-50-90
जैनमतके आगम (सिद्धांत)	४७
देवाँद्ध गणिक्षमाश्रमणके पहिले जैन	
मतके पुस्तक.	૭ ૬
महावीर स्वामीके समयमें जैनीरार्जे.	७६–७७
त्रेविशमें तीर्थकर पार्श्वनाथ अरु तिनकी	
पट्टे परंपरी.	७९-८ ०
जैन बौद्धमेंसे नहीं किंतु अछग चला आताहै	. 69.
बुद्धकी उत्पत्ति.	८२
आयुष बढता नहींहै.	90-98
उत्तराध्ययन सूत्र.	९ ४
निर्वाण शब्दका अर्थः	. 94

आत्माका निर्वाण कब होताहै अरु पिछें तिसकों कोन कहां ले जाताहै. **98-99-94-99** अभव्य जीवका निर्वाण नहीं अरु मोक्षमार्ग बंध नही. १००=१०१-१०₹ अत्पाका अमरपणां अरु तिसका कर्ता ईश्वर नही. १०३-१०४-१०५-१०६ जीवकों पुनर्जन्म क्यों होताहै अरु तिसके वंध होनेमें क्या इलाजहै. 300-605 आत्माका कल्याण तीर्थंकर भगवान्सें होने विषयक ब्यान. १०९-११० जिन पूजाका फल किस रीतिसें होताहै तिस विषयक समाधान. 3 3 3 पुण्य पापका फल देनेवाला ईश्वर नहीं किंतु कर्म. ११२-११३-११४-११५-११६-११७-११८ जगत अकृत्रिमहै. 386 जिन पतिमाकी पूजा विषयक १२०-१२१-१२२-१२ ह ब्यान. देव अरु देवोंका भेद सम्यक्त्वी देवताकी साधु आवक भक्ति करे, शुभाशुभ कर्मके उदयमें देवता निमित्तहै. १२४-१२५-१२६-१२७ संपतिराजा अरु तिसके कार्य. 22<-236 लब्धि अरु शक्तिः १३०-१३१-१३२-१३३-१३५ ईश्वरकी मुर्त्ति.

बुद्धकी मूर्त्ति अरु बुद्ध सर्वज्ञ नही था	
तिस विषयक ब्यान.	\ % o-१४१-१४२
जैनमत ब्राह्मणोके मतसे नही किंतु	
स्वतः अरु पृथक् है	१४३
जैनमत अरु बुद्धमतके पुस्तकोंका मुकाब	छा. १ ४४−१४५
जैनमतके पुस्तकोंका संचय.	१ ६ –१४७
जैन आगम विषयक जैनीयोंकी बेदरका	-
अरु इसी छीये उनोंको ओलंभा	
जैनमंदिर अह स्वधामं वत्सछ करनेकी	
जैनमतका नियम सख्त अरु इसी छीये	
तिसके पसारेमें संकोच	૧
चौदपूर्व.	૧ લ ફ
अन्य मतावलंबियोने जैनमतकी कीई हू	
जैनमत मुजिब जगतकी व्यवस्था अ	<u> </u>
ब्यान अरु तिसकी १४८ प्रकृतियों	_
महावीर स्वामिसें छेकर देविद्धंगणि क्षम	ाश्रमण
तलक आचार्योकी बुद्धि अरु दिगं	
वरसें पिछें डूवा तिसका प्रमाण	१५०
देवदिगणि भ्रमाश्रमण ने महाबीर भग	बान् की
पट्टपरंपरासें चला आता इनको पुस्त	कोपर
आहर कीया तिम विषयक ह्यान प्र	।थरांके

माचीन छेल दिगंबर, लूंपक, दुंदक अरु

तेरापंथी मतवाळोंकों सत्यधर्म अंगीकार	
करनेकी विद्यप्तिः १५६	- १५७
जैनमत मुजब योजनका प्रमाण	१५८
गुरुके भेद तिनोकी उपमा अरु स्वरुप धर्मोपदेवा	
किस पार्से सुननां अरु किस पार्से न सुननां.	१५९
जगतके धर्मका रूप अरु भेद.	१६०
जैनधर्मी राजोंकों राज्य चळानेमें विरोध	
नही आताहै, तिस विषयक ब्यान	१६१
कुमारपाळ राजाका बारांत्रत अरु तिसने	
वो किस रीतिसें पा ले थे	१६२
हिंदस्तानके पंथो.	१ह३

॥ श्री अईं नमः॥

श्री जैन धर्म विषयिक प्रश्नोत्तर

पश्म-जिन और जिनशासन इन दोनो श-व्दोंका अर्थ क्याहै.

उत्तर-जो राग देष क्रोध मान माया लोज काम अज्ञान रति अरति शोक हास्य जुगुप्ता अर्थात् विणा मिण्यात्व इत्यादि नाव शत्रुयोंकों जीते तिसकों जिन कहते है यह जिन शब्दका अर्घहै. असे पूर्वोक्त जिनकी जो शिक्षा अर्थात् जन्मगीपवादरूप मार्गद्वारा दितको प्राप्ति अहि-तका परिहार ग्रंगीकार श्रीर त्याग करना तिसका नाम जिनशासन कहतेहै. तात्पर्य यहहैकि जि-नके कहे प्रमाण चलना यह जिनशासन शब्दका अर्थहें अनिध्धान चिंतामणि और अनुयोगद्दार वृत्यादिमेंहै.

प्र. १-जिनशासनका सार क्याहै,

ज.—जिनशासन और दादशांग यह एक-हीके दो नामहै इस वास्ते द्वादशांगका सार आ-चारंगहे और आचारंगका सार तिसके अर्घका य-ष्यार्थ जानना तिस जाननेका सार तिस अर्थका यद्यार्थ परकों उपदेश करना तिस उपदेशका सार यहिक च।रित्र श्रंगीकार करना श्रर्थात् प्राणिवध १ मुषावाद २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ए रात्रिज्ञोजन ६ इनका त्याग करना इसकों चारित्र कहतेहैं अथवा चरणसत्तरीके ७० सत्तर जेद और करण सत्तरिके 90 सत्तर जोद ये एकसौ चालीस १४० जेद मूल गुण उत्तर गुणरूप अंगीकार करे तिसकों चारित्र कदते है तिस चारित्रका सार निर्वाणहे अर्थात सर्व कर्मजन्य उपाधिरूप अ-न्निसं रहित शीतखीजूत दोना तिसका नाम नि-र्व्वाण कहतेहै तिस निर्वाणका सार अञ्याबाध अर्थात् शारीरिक और मानिसक पीमा रहित सदा सिद्ध मुक्त स्वरूपमे रहना यह पूर्वोक्त सर्व जिन-ज्ञासनका सारहे यह कथन श्री आचारंगकी नि-

प. ३-तीर्थकर कौन होते हैं और किस जगें होतेहैं और किस कालमें होतेहैं.

उ.—जे जीव तीर्थंकर होनेके जवसें तीसरें जनमें पहिलें वीस स्थानक अर्थात् वीस धर्मके कत्य करे तिन कृत्योंसे बमा जारी तीर्थंकर ना-मकर्भ रूप पुन्य निकाचित उपार्जन करे तब तहांसे काल करके प्रायें स्वर्ग देवलोकमें जल्पन्न होतेहै तहांसें काल कर मनुष्य क्षेत्रमें बहुत जारी रिव्हि परिवारवाले जनम शुद्ध राज्यकुलमें जन्पन होतेहैं जेकर पूर्व जन्ममें निकाचित पुन्यसें न्नो-ग्य कर्म जपार्जन करा होवे तबतो तिस जोग्य कर्मानुसार राज्य जोगविवास मनोहर जोगतेहै, नहीं जोग्यकर्म उपार्जन करा होवे तब राज्यजोग नहीं करतेहैं. इन तीर्थंकर होनेवाले जीवांको मा-ताके गर्जमेंदी तीन ज्ञान अर्थात् मित श्रुति अ-वधी अवइयमेवही होते है, दीक्षाका समय तोर्ध-करके जीव अपने ज्ञानसेंही जान खेतेहें जेकर माता पिता विद्यमान होवें तबतो तिनकी श्राज्ञा **बेके जेकर माता पिता विधमान नही होवें तब**

अपने जाइ श्रादि कुटंबकी ग्राज्ञा लेके दीका लें-नेके एक वर्ष पहिले लोकांतिक देवते आकर क-हते है दे जगवान ! धर्म तीर्ध प्रवर्तावो. तद पीछे एक वर्ष पर्यंत तीनसौ कोटि अववास्सी करोम असीखाख इतनी सोने मोहरें दान देके बने म-दोत्सवसें दीका स्वयमेव लतेहै किसीकों गुरु नहीं करतेहैं क्योंकि वेतो आपदी त्रैलोक्यके गुरु होनेवालेहै और ज्ञानवंतहै तद पीछे सर्व पापके त्यागी होके महा अनुत तप करके घाती कर्म चार क्तय करके केवली होतेहै. तद पोंडे संसार तारक जपदेश देकर धर्म तीर्थके करनेवाले असे पुरुष तोर्थंकर दोतेहैं. उपर कहे हुए वीस धर्म कृत्येंका स्वरूप संक्रेपसे नीचे लिखतेहै. अरिहंत १ सिड २ प्रवचन संघ ३ गुरु ब्राचार्य ४ स्डविर ५ ब-हुशुत ६ तपस्वी ७ इन सातों पदांका वात्सख्य अनुराग करनेसें इन सातोंके यथावस्थित गुण जन्कीर्तन अनुरूप जपचार करनेसें तीर्थंकर नाम-कर्म जीव बांधताहै इन पूर्वोक्त सातों अहैतादि पदोंका अपने ज्ञानमें वार वार निरंतर स्वरूप

चिंतन करे तो तीर्थंकर नाम कर्म बांधे ए दर्शन सम्यक्त ए विनय ज्ञानादि विषये १० इन दोनोकों निरतिचार पालेतो तीर्थंकर नाम कर्म बांघे. जो जो संयमके अवइय करने योग्य व्यापारहें ति-सकों आवर्यक कहतेहै तिसमें अतिचार न लगावे तो तीर्थंकर नाम कर्म बांघे ११ मूख गुण पांच महाव्रतमें और उत्तर गुण पिंम विशुद्ध्यादिक ये दोनो निरतिचार पाले तो तीर्थंकर नाम कर्म बांघे १२ क्रण लव मू हुर्नादि कालमें संवेग ज्ञा-वना शुज्ज ध्यान करनेसें तीर्थंकर नाम कर्म बां-धताहै १३ उपवासादि तप करनेसें यति साधु जनकों उचित दान देनेसें तीर्धकर नाम कर्म बां-घताहें १४ दश प्रकारकी वेयावृत्य करनेसें ती० १५ गुरु आदिकांकों तिनके कार्य करणेसे गुरु आ-दिकोंके चित्त स्वास्ब रूप समाधि उपजावनेसें ती० १६ अपूर्व अर्थात् नवा नवा ज्ञान पढनेसें ती० १७ श्रुत जिक्त प्रवचन विषये प्रजावना क-रनेसें ती० १८ झास्त्रका बहुमान करनेसें ती० १९ यथाशक्ति अर्हदुपदिष्ट मार्गकी देशनादि क-

रके शासनकी प्रजाबना करे तो तीर्थंकर नाम कर्म बांघेहैं २० कोई जीव इन वीसों कृत्योंमें चाहों कोइ एक कृत्यसें तीर्थंकर नाम कर्म बांघे है. कोइ दो कृत्योंसे कोइ तीनसे एवं यावत् को-इएक जीव वीस कृत्योंसें बांघेहैं यह उपरका क-यन ज्ञाता धर्मकथा १ कल्पसूत्र २ आवस्यकादि शास्त्रोंमे है. और तीर्थंकर पांच महाविदेह पांच जरनपांच ऐरवत इन पंदरां केत्रोमें उत्पन्न होते है और इस जरतखंनमें आर्य देश साढे पचीसमे उत्पन्न होतेहैं वे देश १५॥ साढे पचवीस ऐसेहैं.

उत्तर तर्फ हिमालय पर्वत और दक्तिण तर्फ विंध्याचल पर्वत और पूर्व पश्चिम समुद्रांत तक इसकों आर्यावर्त कहते हैं इसके बीचही साढे-पंचवीश देशहैं तिनमें तीर्थंकर उत्पन्न होतेहैं यह कथन अजिधान चिंतामणि तथा पन्नवणाआदि शास्त्रोंमेंहें. अवसर्थिणि कालके व आरे अर्थात् व हिस्से हैं तिनमें तीसरे चौथे विज्ञागमें तीर्थं-कर उत्पन्न होतेहें और उत्सर्थिण कालके व वि-ज्ञागोमेंसें तोसरे चौथे विज्ञागमें उत्पन्न होतेहें. यह कथन जंबूदीप प्रज्ञाप्ति आदि शास्त्रोंमेहे.

प. ध-तीर्थंकर क्या करतेहै और तीर्थंक-रोके गुणाका बरनन करो.

छ.—तीर्धकर न्नगवंत बदलेके जपकारकी इन्चा रहित राजा रंक ब्राह्मण और चंनाल प्रमुख सर्व जातिके योग्य पुरुषांकों एकांत हितकारक संसार समुझ्की तारक धर्मदेशना करतेहै और तीर्थंकर जगवंतके गुणतो इंइादिजी सर्व बरनन नहीं करसक्तेंद्रें तो फेर मेरे अख्प बुद्धीवालेकी तो क्या शक्तिहै तोजी संकेपसें जन्यजीवांके जानने वास्ते थोमासा बरनन करतेहै. अनंत केवल ज्ञान १ अनंत केवल दर्शन २ अनंत चारित्र ३ अनंत तप ध अनंत वीर्य ५ अनंत पांच लब्धि इ कमा **७ निर्लोजना ८ सरवता ए निरजिमानना १०** लाघवता १९ सत्य १२ संयम १३ निरिज्ञकता १४ ब्रह्मचर्य १५ दवा १६ परोपकारता १७ राग हेष रदित १८ हात्रु मित्रज्ञाव रहित १ए कनक पथर इन दोनो ऊपर सम जाव १० स्त्री और तृण ऊ. पर समन्नाव २१ मांसाहार रहित २२ मदिरा-

पान रिंदत २३ अजह्य जहाण रिंदत १४ अगम्य गमन रिंदत २५ करुणा समु ६ ६ सूर २७ वीर २८ घीर २ए अहो ज्य ३० परिनंदा रिंदत ३१ अपनी स्तुति न करे ३१ जो कोइ तिनके साथ विरोध करे तिसकों जी तारनेकी इञ्चावाले ३३ इत्यादि अनंत गुण तीर्धं कर जगवंतो मेहे सो को-इजी शक्तिमान नदी है जो सर्व गुण कह सके और लिख सके.

- प. ५-जैन मतमें जे केत्र माइविदेहादि-कहै तहां इहांका कोइ मनुष्य जा सक्ताहै कि नदी.
- ज.-नहीं जा सकताहै क्योंकी रस्तेमें बर्फ पाणी जम गयाहै और बमें बमें उंचे पर्वत र-स्तेमेहै बमी बमी नदीयों और जज्जम जंगल रस्ते-मेहे अन्य बहुत विघ्नहै इस वास्ते नदी जासक्ताहै.
- प्र. ६-त्ररत केत्र कोनसाहै श्रोर कितना लांबा चौमाहे.
- न.-जिसमें हम रहेतेहैं यही जरतखंतहैं इसकी चौनाइ दक्षिणसे नितर तक ५१६० किं-चित्र अधिक नत्सें झंगुलके हिसाबसें कोस होतेहैं

और वैताह्य प्रवर्तके पास लंबाइ कुळक अधिक ए०००० नवे हजार जत्से इंगुलके हिसाबसें कोस होतेहैं चीन रूसादि देश सर्व जैन मतवाले जरखंमके बीचही मानतेहैं यह कथन अनुयोगद्या-रकी चृणि तथा भंगुल सत्तरी प्रंथानुसारहै कितनके आचार्य जरतखंमका प्रमाण अन्यतरेंके योजनोंसें मानतेहैं परं अनुयोगद्यारकी चूणिं कर्ता श्री जिनदासगणि कमाश्रमणजी तिनके मतकों सिद्धांतका मत नहीं कहतेहैं.

- प. ७-जरत क्षेत्रमे आजके कालमें पहिला कितने तीर्थंकर हूएहै.
- उ.─इस अवसिंपिणि कालमें आज पहिलां चोवीस तीर्थंकर हूएहै जेकर समुचय अतीत का-लका प्रश्न पूजतेहो तब तो अनंत तीर्थंकर इस जरत खंममे होगएहै.
- प. 0-इस अवसर्षिणि कालमे इस ज्ञर-तखंनमें चोवोस तीर्थंकर हूएहै तिनके नाम कहो.
- न.-प्रथम श्री रूपजरेव १ श्री अजीत-नाथ १ श्री संज्ञवनाथ ३ श्री अज्ञिनंदननाथ ४

श्री सुमितस्वामी ५ श्री पद्मप्रज्ञ ६ सुपार्श्वनाय ७ श्री चंड्पज्ञ ७ श्रो सुविधिनाय पुष्पदंत ए श्री श्रीतलनाय१० श्री श्रेयांसनाय११ श्रीवासुपूष्य११ श्रीविमलनाय१३ श्री अनंतनाथ१४ श्री धर्मनाय १५ श्रीशांतिनाथ१६ श्री कुंथुनाय१७ श्रीअरनाय १० श्री मिल्लिनाय १ए श्री सुनिसुव्रतस्वामी २० श्रीनिमनाय११ श्री अरिष्टनेमि२२ श्री पार्श्वनाय १३ श्रीवर्द्मानस्वामी महावोरजी १४ ये नामहै.

प्र. ए-इन चौवीस तीर्धकरोंके माता पि-ताके नाम क्या क्याथे.

ग्र-नानि कुलकर पिता श्रीमहदेवी माता १ जितशत्रु पिता विजय माता १ जितारि पिता सेना माता ३ संबर पिता सिद्धार्था माता ४ मेघ पिता मंगला माता ५ धर पिता सुसीमा माता ६ प्रतिष्ठ पिता एण्वी माता ७ महसेन पिता लक्ष्मणा माता ७ सुप्रीव पिता रामा माता ए हढरण पिता नंदामाता १० विश्व पिता विश्वश्रो माता ११ वसुपूज्य पिता जया माता १२ कतव-म्मी पिता इयामा माता १३ सिंहसेन पिता सु

यशा माता १४ जानु पिता सुव्रता माता १५ विश्वसेन पिता ग्रचिरा माता १६ सूर पिता श्री माता १७ सुदर्शन पिता देवी माता १८ कुंज पिता प्रज्ञावति माता १ए सुमित्र पिता पदमा-वति माता २० विजयसेन पिता बप्रा माता ११ समुइविजय पिता शिवा माता ११ अश्वसेन पिता वामा माता २३ सिद्धार्थ पिता त्रिशला माता २४ ये चौवीस तीर्थंकरोके क्रमसें माता पिताके नाम जान लेने चौवीसही तीर्थंकरोके पिता रा-जेथे. वीसमा २० छोर वावीसमा ये दोनो हरि-वंश कुलमे उत्पन्न हुएथे श्रोर गीतम गोत्री थे शेष १२ बावीस तीर्थंकर ईक्ताकुवंशमें उत्पन्न 'हुएथे श्रीर काइयप गोत्री थे.

प. १०-श्रो रुषन्नदेवजीसे पहिलां इस न-रतखंममे जैन धर्म था के नदी.

9.—श्री रूपजदेवजीसे पहिलां इस अव-सर्पिणि कालमें इस जरतखंडमे जैनधर्मादि कोइ मतकाजी धर्म नहीथा इस कथनमें जैन शा-स्त्रही प्रमाणहें.

- प. ११-जेसा धर्म श्रीक्रषभदेवस्वामीने चलायाचा तैसादी ब्राज पर्यंत चलाब्राताहै वा कुच्च फेरफार तिसमें हूब्राहै.
- छ.-श्रीक्रषज्ञदेवजोने जैसा धर्म चलायाथा तैसाही श्री महावीर जगवंते धर्म चलाया इसमें किंचित्मात्रज्ञी फरक नहींहै सोइ धर्म आजकाल जैन मतमें चलताहै.
- त्र.-११-श्री महावीरस्वामी किस जगें जन्मेथे और तिनके जन्म हुआंको आज पर्यंत १ए४ए संवत तक कितने वर्ष हुएहै.
- ज.-श्रीमाहावीरस्वामी क्तियकुंमग्राम नगरमें जत्पन्न हुएथे और आज संवत १ए४५ तक १४०७ वर्षके लगन्नग हुएहे विक्रमसें ५४२ वर्ष पहिले चैत्र शुदि १३ मंगलवारकी रात्रि और ज-त्तराफाढगुनि नक्तत्रके प्रथम पादमें जन्म हुआथा.
 - प. १३ क्तियकुं मयाम नगर किस जगेंचा.
- ज.-पूर्व देशमें सूबेबिहार अर्थात् बहार ति-सके पास कुंमलपुरके निजदीक अर्थात् पासहीया.
 - प्र. १४-महावीर ज्ञगवंत देवानंदा ब्राह्म-

णीकी कूखमें किस वास्ते उत्पन्न हूये.

उ.-श्रीमहावीर जगवंतके जीवने मरी-चीके जवमें अपने जंच गोत्र कुलका मद अर्थात् अजिमान कराथा तिस्सें नीच गोत्र बांध्याथा सो नीच गोत्रकर्म बहुत जवोंमें जोगना पडा तिस-मेंसें थोमासा नीच गोत्र जोगना रह गयाथा ति-सके प्रजावसें देवानंदाकी कूखमें जत्पन्न हुए जर नीच गोत्र जोगा.

त्र. १५-तो फेर जेकर हम लोक अपनी जात तर कुलका मद करे तो अञ्चा फल होवेगा के नही, मद करना अञ्चाहै के नही.

ठ.—जेकर कोइन्नी जीव जातिका १ कु-तका १ बतका ३ रूपका ४ तपका ५ ज्ञानका ६ तानका ९ अपनी ठकुराइका ७ ये आंठ प्र-कारका मद करेगा सो जीव घणे न्नवां तक ये पूर्वोक्त आठहो वस्तु अठी नही पावेगा अर्थात् आठोही वस्तु नीच तुच्च मिलेंगा इस वास्ते बुद्धि-मान पुरुषकों पूर्वोक्त आठदो वस्तुका मद करना अच्चा नहीहै. प. १६-जितने मनुष्य जैनधर्म पालते होवे तिन सर्व मनुष्योंको अपने जाइ समान मानना चाहियेके नहीं. जेकर जाइ समान मानेतो तिनके साथ खाने पीनेकी कुठ अमचलहै के नहीं.

उ. जितने मनुष्य जैन धर्म पालते होवे तिन सर्वके साथ अपने ज्ञाइ करतांजी अधिक पियार करना चाहिये. यह कथन श्राइ दिनकृत्य यंथमें है श्रोर तिनोकी जातीयां जेकर लोक व्य-वहार अस्पृदय न होवें तदा तिनके साथ खाने पीनेकी जैन शास्त्रानुसार कुढ अमचल मालुम नदी होतीहै क्योंकि जब श्रोमहावीरजीसें ७० वर्ष पीं और श्रीपार्श्वनायजों के पीं बहे पाट श्रीरत्नप्रज्ञसूरिजीनें जब मारवामके श्रीमाख नगरसें जिस नगरीका नाम अब जिल्लमाल क-देतेंह तिस नगरसें किसी कारणसें जीमसेन रा-जेका पुत्र श्रीपुंज तिसका पुत्र उत्पत्तकुमर ति-सका मंत्री कहम ए दोनो जले १८ इजार कुटंब सदित निकलके योधपुर जिस जगेहैं तिससें वीस कोसके लगन्नग उत्तर दिशिमे लाखों आदमीयोकी वस्ती रूप उपकेशपट्टन नामक नगर वसाया, तिस नगरमें सवाबक्त आदमीयांकों रत्नप्रज्ञसू-रिने श्रावक धर्ममे स्बाप्या तिस समय तिनके अगरह गोत्र स्वापन करे तिनके नाम तातहम गोत्र १ बापणा गोत्र १ कर्णाट गोत्र ३ वलहरा गोत्र ध मोराक्त गोत्र ५ कुलहट गोत्र ६ विरहट गोत्र ७ श्री श्रीमाल गोत्र ७ श्रेष्टि गोत्र ए सु-चिंती गोत्र १० आइचणाग गोत्र ११ जूरि गोत्र ज्ञटेवरा १२ ज्ञाइ गोत्र १३ चीचट गोत्र १४ कुं-जट गोत्र १५ मिंसु गोत्र १६ कनोज गोत्र १७ लघुश्रेष्टी १८ येह अठारही जैनी होनेसे परस्पर पुत्र पुत्रीका विवाह करने लगे और परस्पर खाने पीने लगे इनमेसें कितने गोत्रांवाले रजपूतथे और कितने ब्राह्मण और बनियेजी थे इस वास्ते जेकर जैन शास्त्रमें यह काम विरुद्ध होता तो आचार्य महाराज श्रीरत्नप्रज्ञसूरिजी इन सर्वकों एकहे न करते. इसी रीतीसें पीछे पोरवाम उसवाखादि वंश द्यापन करे गये है, अन्य कोइ अमचलतो नहों है परंतु इस कालके वैश्य लोक अपने समान किसी दूसरी जातिवालेको नही समऊतेहैं यह श्रमचलहै

त्र. १७—जैन धर्म नही पालता होय तिसके साथ तो खाने पीने आदिकका व्यवहार न करे परंतु जो जैन धर्म पालता होवे तिसके साथ उक्त व्यवहार होसके के नही.

ज.-यह व्यवहार करना न करना तो बिणये लोकोंके आधीनहैं∙ और हमारा अन्निप्राय तो हम जपरके प्रश्नोत्तरमें लिख आएहैं.

प्र. १८-जेन धर्म पालने वालोंमें अलग अलग जाती देखनेमें आतीहे ये जेन शास्त्रानु-सार हैं के अन्यश्राहे और ए जातियों किस वख-तमे हूइहै.

ज.—जैन धर्म पालने वाली जातियों शा-स्त्रानुसारे नहीं बनीहै, परंतु किसी गाम, नगर पुरुष धंधेके अनुसारे प्रचलित हूइ मालम पर्नती है. श्रीमाल जसवालकातों संवत् जपर लिख आ-यह और पोरवाम वंश श्रीहरिज्ञ इसूरिजीने मे-वाम देशमें स्डापन करा और तिनका विक्रम संवत् स्वर्गवास होनेका एएए का प्रंथोमे लिखाहै और जेपुरके पास खंमेला गामहै तहां वीरात् ६४३ मे वर्षे जिनसेन आचार्यने ए२ गाम रज-पूतोकें और दो गाम सोनारोके एवं सर्व गाम **08 जैनी करे तिनके चौरासी गोत्र स्टापन करे** सो सर्व खंमेखवाल बनिये जिनकों जैपुरादिक देशोंमें सरावगी कहतेहैं. ख्रोर संवत् विक्रम १९७ में हंसारसें दश कोशके फासलेपर अयोहा ना-मक नगरका चजान टेकरा बना नारीहै तिस अयोहे नगरमें विक्रम संवत् ११७ के लगन्नग राजा अप्रके पुत्रांको अर्थेर नगरवासी कितनेही इजार लोकांकों लोहाचार्यने जैनी करा, नगर छ-क्कम हुआ. पीं राजभ्रष्ट होनेसें और व्यापार व-णिज करनेसें अप्रवाल बनिये कहलाये. इसी तरे इस कालकी जैनधर्म पालने वाली सर्व जातियां श्री महावीरसे ७० वर्ष पींग्रेसें लेके विक्रम संवत् १५९५साल तक जैन जातियों श्राचार्योने बनाइहै तिनसें पहिलां चारोही वर्ष जैन धर्म पालते थे इस समयेकी जातियों नद्दीशी इस प्रश्नोत्तरमें जो लेख मैने जिखाहें सो बहुत यंद्योमें मेने ऐसा जेख बां-

चाहै परंतु मैने अपनी मनकल्पनासे नही लिखाहै.

प. १ए-पूर्वोक्त जातीयों में से एक जाती वाले दूसरी जाति वालें से अपनी जातिकों उत्तम मानते हैं और जाति गर्व करते हैं तिनकों क्या फल हो वेगा.

5.-जो अपनी जातिकों उत्तम मानतेहैं यह केवल अज्ञानसें रूढी चली हूइ मालम होती है क्योंके परस्पर विवाह पुत्र पुत्रीका करनां और एक जाणेंमें एक के जोमणा और फेर अपने आ-पकों उंचा माननां यह अज्ञानता नहीतो दूसरी क्यांहै. और जातिका गर्व करनैवाले जनमांतरमें नीचजाति पावेंगे यह फल होवेगा.

प्र. २०—सर्व जैन धम पालनवालीयों वैदय जातियां एकठी मिल जायें और जात न्यात नाम निकल जावे तो इस काममें जैनशास्त्रकी कुठ मनाइहै वा नहीं.

उ.-जैन शास्त्रमेंतो जिस कामके करनेसें धर्ममें दूषण लगें सो बातकी मनाइहै. शेषतो लो-कोनें अपनी अपनी रूढीयों मान रखोहै उपरले प्रश्नोमें जब इसवाल बनाएथे तब अनेक जा-तियोकी एक जाति बनाइथी इस वास्ते अबजी कोइ सामर्थ पुरुष सर्व जातियोंको एकठो करे तो क्या विरोधहै.

प. २१—देवानंदा ब्राह्मणीकी कूखथी त्रि-शला क्तत्रियाणीकी कूखमें श्रीमहावीरस्वामीकों किसने श्रीर किसतरेंसें हरण किना.

उ-प्रथम देवलोक के इंड्की आज्ञासें तिसके सेवक दरिनगमेषी देवतानें संहरण कीना तिसका कारण यहहाँके कदाचित् नीच गोत्रके प्रजावसें तीर्थंकर दोने वाला जीव नीच कुलमें उत्पन्न दोवे परंतु तिस कुलमें जन्म नदी होताहै इस वास्तै अनादि लोक स्थीतीके नियमोसें इंड् से-वक देवतासें यह काम करवाताहै.

प. २२-अपनी शक्तिसें महावीरस्वामी त्रिशलाकी कूलमें क्यों न गये.

छ .— जन्म, मरण, गर्जमें छत्पन्न होनां यह सर्व कर्मके अधीनहै. निकाचित् अवदय जोगे विना जेन दूर होवे ऐसे कर्मके छदयमे किसीकीजी

शक्ति नदी चल सक्तिहै. और जो लोक इश्वराव-तार देइधारीकों सर्वशक्तिमान् मानतेहैं सो निके-वल अपने माने ईश्वरकी मद्दत्वता जनाने वास्ते. जेकर पक्तपात बोमके विचारीये तो जो चाहेसो कर सके ऐसा कोइन्नी ब्रह्मा, शिव, हरि, क्रायस वगेरे मानुष्योमे नही हुआहै. इनोंके कर्तव्योकी इनका पुस्तकें वांचीये तब यथार्थ सर्व शक्ति वि-कल मालुम होजावेंगे. इस कारणसें सर्व जीव अपने करें कर्माधीनहैं इस देतुसे श्रीमहावीर-स्वामी अपनी शक्तिसें त्रिशला माताकी कृखमें नही जासकेंद्रे

प. १३-महावीरस्वामीके कितने नामथे

5.—वीर १ चरमतीर्थकृत २ महावीर ३ वर्धमान ४ देवार्य ५ ज्ञातनंदन ६ येह नामहै १ वीर बहुत सूत्रों में नामहे १ चरमतीर्थकृत कल्पादि सूत्रें २ महावीर ३ वर्षमान यहतो प्रसिद्ध ब- हुत शास्त्रों में देवार्य, आवश्यकमें ज्ञातनंदन, ज्ञा-तपुत्र, आचारंग दशाश्रुतस्कंधे ६ वहां एक हे हेमा-चार्यकृत अजिधानचिंतामणि नाममालामेहै.

प. २८-श्रीमहावीरस्वामीका बना जाइ ओर तिनकी बहिनका क्या क्या नामग्रा

ज्ञ-श्री महावीरस्वामीके बमे ज्ञाइका नाम नंदिवर्द्धन और बहिनका नाम सुदर्शना था.

प. १५- श्रीमहावीरके उपर तिनके माता पिताका अत्यंत रागया के नही.

ज.—श्रीमहावीरके जपर तिनके माता पि-ताका अत्यंत राग था क्योंकि कटपसूत्रमें लिखा है कि श्रीमहावीरजीने गर्जमे ऐसा विचार क-राके हलने चलनेसें मेरी माता इख पावेहै. इस वास्ते अपने शरीरकों गर्जमेही हलाना चलाना बंघ करा. तब त्रिशला माताने गर्जके न चलनेसें मनमें ऐसें मानाके मेरा गर्ज चलता हलता नहीहै इस वास्ते गल गया है, तबतो त्रिसला माताने खान, पान, स्नान, राग, रंग, सब बेामके बहुत यार्च ध्यान करना शुरु करा, तब सर्व राज्यज्ञवन शोक व्याप्त हुआ. राजा सिद्धार्थजी शोकवंत हुआ. तब श्रीमहावोरजीने अवधिक्वानसे यह बनाव देखा तब विचार कराके गर्जमे रहे मेरे ऊपर माता

पिताका इतना बमा जारी स्नेहहै तो जब में इनकी रूबर दीका लेकंगा तो मेरे माता पिता अवइय मेरे वियोगसें मर जाएगे, तब श्रीमहा-वीरजीने गर्जमेही यह निश्चय कराकि माता पि-ताके जीवते हुए मैं दीका नही लेकुंगा.

प्र. २६—इन श्रीमहावीरजीका वर्डमान नाम किस वास्ते रखा गया.

 च.—जब श्रीमहावीरजी गर्जमें श्राये त-बसें सिद्धार्थराजाकी सप्तांग राज्य लक्ष्मी वृद्धि-मान् हुइ, तब माता पिताने विचाराके यह हमारे सर्व वस्तुकी वृद्धि गर्जके प्रजावसें हुइहै. इस वास्ते इस पुत्रका नाम हम वर्द्धमान रखेंगे; ज-गवंतके जन्म पीं सर्व न्यात वंशीयोकी ह्रबरु पुत्रका नाम वर्द्धमान रखा.

प. १७–इनका महावीर नाम किसर्ने दीना.

उ. परीषह और उपसर्थसें इनकों जारी मरणांत कप्ट तक हुए तोजी किंचित मात्र अ-पना धीर्य और प्रतिक्वासें नहो चलायमान हुए है, इस वास्ते इंड, हाक और जक्त देवतायोंने श्रीमहावोर नाम दीना. यह नाम बहुत प्रसिद्धहै.

प. १८-श्रीमहावीरकी स्त्रीका नाम क्या था और वह स्त्री किसको बेटीथी.

छ.-श्रीमाहावीरको स्त्रीका नाम यशोदा था, श्रौर सिद्धार्थ राजाका सामंत समरवीरकी पुत्रो थी जिसका कौिमन्य गोत्र था.

त्र. १ए-श्रीमहावीरजीने यशोदा स्त्रीके साथ अन्य राज्य कुमारोंकी तरे महिलोंमें जोग विलास कराथा.

5.—श्री महावीरजीके जोग विदासकी सा-मय्री महित बागादि सर्वथी. परंतु महावीरजी तो जन्मसेंही संसारिक जोग विदासोंसे वैराग्य-वान् निस्पृद्द रहते थे; और यशोदा परणी सोजी माता पिताके आयहसें और किंचित् पूर्व जन्मो-पार्जित जोग्य कर्म निकाचित जोगने वास्ते. अन्यथातो तिनकी जोग्य जोगनेमे रित नही थी

प्र. ३०-श्रीमहावीरजीके कोइ संतान हुआ या तिसका नाम क्याथा.

छ-एक पुत्री हुइथो तिसका नाम प्रिय

दर्शना थाः

प्र. ३१-श्रीमहावीरस्वामी अपने पिताके घरमें मुखसें त्यागी वा जोगी रहेथे.

छ.—श्रीमहावीरजी १८ ग्रावीस वर्षतक तो जोगी रहे पींछे माता पिता दोनो श्री पार्श्व-नायजी २३ में तीर्थंकरके श्रावक श्राविका थे. वेह महावोरजीकी १८ मे वर्षकी जिंदगीमें स्व-र्गवासी हुए पींं श्री महावीरजीने अपने बमे जाइ राजा नंदिवर्द्धनकों दीका बेनें वास्ते पूछा, तब नंदिवर्द्धनने कहाकी अबहीतो मेरे मातापिता मरेहै और तत्कालही तुम दीका लेनी चाइतेहो यह मेरेकों बमा जारी वियोगका इख होवेगा, इस वास्ते दो वर्ष तक तुम घरमे मेरे कइनेसे रहों, तब महावीरजी दो वरस तक साधुकी तरे त्यागी रहै.

प्र. ३१-महावीरजीका बेटीका किसके साथ विवाद कराथा.

ज.-कत्रियकुंमका रहने वाला कौशिक गो-त्रिय जमालि नामा क्तिय कुमारके साथ वि- वाइ करा था.

प्र. ३३-श्रीमहावीरजीकों त्यागी होनेका क्या प्रयोजन था.

उ-सर्व तीर्धंकरोका यदी अनादि नियम हैकि त्यागी होके केवलकान उत्पन्न करके स्व परोपकारके वास्तें धर्मांपदेश करनां. तीर्धंकर अ-पने अवधिकानसे देख खेतेहैिक अब हमारे सं-सारिक जोग्य कर्मं नदी रहाहै और अमुक दिन हमारे संसार गृहवास त्यागनेकांदै तिस दिनहीं त्यागी हो जातेहैं. श्रोमहावीरस्वामोकी बाबतजी इसी तरें जान खेनां.

प्र. ३४—परोपकार करनां यह हरेक म-नुष्यकों करनां जिचतहै.

ग्रान्तिकार करनां यह सर्व मनुष्योंकों करनां जित्तहै, धर्मी पुरुषकोंतो अवदयदी क-रनां जित्तहै.

प्र. ३५—श्रीमहावीरजीने किस वस्तुका त्याग करा था.

उ.—सर्व सावद्य योगका अर्थात् जीव-

हिंसा १ मृषावाद २ ब्रदत्तादान ३ मैथुन स्त्री ब्रादिकका प्रसंग ४ सर्व परिग्रह ५ इत्यादि सर्व पके कृत्य करने करावने ब्रनुमतिका त्याग कराथा.

प्र.३६—श्रीमहावीरजीने अनगारपणा कब लीनाषा और किस जगेमें लीनाषा और कितने वर्षकी उमरमें लीनाथा

ग्र-विक्रमसें पहिलें ५११ वर्षे मगिसर वदी दशमीके दिन पिग्नले पहरमे जनराफाल्गुनी नक्षत्रमें विजय महुर्नमें चंड्प्रज्ञा शिवकामें बै-ग्रेक चार प्रकारके देवते और नंदि वर्द्धन राजाप्र-मुख हजारों मनुष्योंसें परिवरे हुए नानाप्रकारके वाजित्र बजते हुए बमे जारी महोत्सवसें न्यात-वनषंम नाम बागमे अशोकवृक्षके देगे जन्मसें तीस वर्ष व्यतीत हुए दीक्षा लोनीथी. मस्तकके केश अपने हाथसें लुंचन करे और अंदरके क्रोध, मान, माया, लोजका लुंचन करा.

प. ३७—श्री महावीरजीकों दीका लेनेसें तुरत ही किस वस्तुकी प्राप्ति हुइग्री

ज्ञ--चौथा मनःपर्यवज्ञान जत्पन्न हुआयाः

प्र. ३0—मनःपर्यवज्ञान जगवंतकों गृह स्थावस्थामें क्युं न हुआ.

उ.—मनःपर्यवज्ञान निर्प्रय संयमीकोंही होताहै अन्यको नही.

प्र∙ ३ए--- ज्ञान कितने प्रकारकेहैं,

ज---पांच प्रकारके ज्ञानहै.

प.४०-तिन पांचो ज्ञानके नाम क्या क्याहै.

ਰ.—मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान १ अवधि-ज्ञान ३ मनःपर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

प्र. ४१—इन पांची ज्ञानोंका योमासा स्वरूप कहो.

उ — मित्र निवादी सुने के जो जान होवे तथा चार प्रकारकी जो बुढि है सो मितिजान है, इसके ३३६ तीनसों उत्तीस नेद हैं. जो कदने सुनने में आवे सो श्रुतिज्ञान है; तिसके १४ चोदह नेद हैं अवधिज्ञान सर्व रूपी वस्तुकों जाने देखे; तिसके ६ नेद हैं मनः पर्यवज्ञान अवदाह चीप के अंदर सर्व के मन चितित अर्थको जाने देखें तिसके दोय १ नेद हैं केवल ज्ञान नृत, न

विष्यत्, वर्तमानकालकी वस्तु सूक्ष्म बादर रूपी अरूपी व्यवध्यान रहित व्यवधान सहित दूर नेमें अंदर बादिर सर्व वस्तुकों जाने, देखेदै; इस झानके जेद नहीदै इन पांचो कानोका विशेष स्वरूप देखना होवेतो नंदिसूत्र मलयगिरि वृत्ति सदित वांचना वा सुन लेना.

त्र. ४१—श्रीमहावीरस्वामी अनगार हो कर जब चलने लगेथे तब तिनके जाइ राजा नंदिवर्द्धनने जो विलाप कराथा सो थोमासा श्लो-कोमें कद दिखलावो.

च — त्वया विना वीर कथं व्रजामे। ॥ गृ-देधुना शृन्य वनोपमाने ॥ गोष्टी सुखं केन स-हाचरामो । जोक्स्यामहे केन सहाथ बंधो ॥ १ ॥ अस्यार्थः ॥ हें वीर तेरे एकलेको बोमके हम सूने बन समान अपने घरमें तेरे विना क्युंकर जा-वेंगे, अर्थात् तेरे विना हमारे राजमहिलमे इमारा मन जानेको नही करताहै, तथा हे बंधव तेरे विना एकांत बेठके अपने सुख इखको बातां क-रन रूप गोष्टी किसके साथ मैं करूंगा तथा हे

बंधव तेरे विना में किसके साथ बैठके जोजन जीसुगा; क्योंके तेरे विना श्रन्य कोइ मेरा त्रि-शलाका आया जाइ नहीं है १ सर्वेषु कार्येषु च वीर वीरे ॥ त्यामंत्रणदुर्शनतस्तवार्थ ॥ प्रेमप्रक-र्षादन्नजामहर्षे निराश्रया श्रायकमाश्रयामः ॥१॥ अर्थ ।। दे आर्थ उत्तम सर्व कार्यके विषे वीर वीर ऐसे हम तेरेकों बुलातेथे और हे आर्य तेरे देख-नेसे इम बहुत प्रेमसें इर्षकों प्राप्त होतेथे; अब इम निराश्रय होगयेहै, सो किसकों आश्रित होवे, अर्थात् तेरे विना इम किसकों हे वीर हे वीर कहेंगे, और देखके हर्षित होवेगे ॥१॥ अति प्रियं बांघव दर्शनं ते ॥ सुघांजनं नाविक दास्म दृक्त्णोः नीरागचिनोपिकदाचिदस्मान् ॥ स्मरि-ष्यित प्रौढ गुणान्निराम ॥३॥ श्रस्यार्थः ॥ दे बां-धव तेरा दर्शन मेरेकों अधिक प्रियहै, सो तुमारे दर्शन रूप अमृतांजन हमारी आंखो में फेर कद पमेगा. हे महा गुणवान् वीर तूं निराग चित्तवाला है तोज्ञी कदेक हम प्रिय बंधवांकों स्मरण क-रेंगा ३ इत्यादि विलाप करेंथे.

प्र. ४३—श्रीमहावीरस्वामी दीका लेके जब प्रथम विहार करनें लगेथे तिस अवसरमें राक्षइंड्नें श्रीमहावीरजीकों क्या बिनती करीथी

प्र- ४४--तब श्रीमहावीरजीने इंडको क्या उत्तर दीनाथा.

ज.—तब श्रीमहावीरजीने इंडकों ऐसें कहा के हे इंड यह वात कदापि अतीत कालमें नहीं हुइँहें अबजी नहीं हैं और अनागत कालमें जी नहीं होवेगी के किसीजी देवेंड असुरेंडादिके साहाय्यसें तोर्थंकर कर्मक्रय करके केवलक्कान जन्त्रक करतेहैं; किंतु सर्व तीर्थंकर अपने १ प्राक्रमसें केवलक्कान जत्पन्न करतेहैं इस वास्ते हमजी दूसरेकी साहाय्य विना अपनेही प्राक्रमसें केवल-

ज्ञान उत्पन्न करेंगे.

प्र. ४५—क्या श्रीमहावीरजीकी सेवामें इंडादि देवते रहते थे.

जि.—बद्ममस्वावस्वामें तो एक सिद्धार्थनामा देवता इंड्को आङ्कासें मरणांत कष्ठ डर करने वास्ते सदा साथ रहता था; और इंद्रादि देवते किसि किसि अवसरमें वंदना करने सुखसाता पूजने वास्ते और उपसर्ग निवारण बास्ते आते थे और केवलङ्कान उत्पन्न हूआ पीजतो सदाही देवते से-वामे हाजर रहतेथे.

प्र ४६—श्रीमहावीरजीने दीका खीया पींचे क्या नियम धारण कराषा.

उ-्यावत् बद्यस्य रहं तावत् कोइ परी-पह उपसर्ग मुऊकों होवे ते सर्व दोनता रहित अन्य जनकी साहायसें रहित सहन करं. जिस स्वानमे रहनेसें तिस मकान वालेकों अप्रीति उ-त्पन होवे तो तहां नहीं रहेनां १ सदाही कार्यो-त्सर्ग अर्थात् सदा खमा होके दोनो बाहां इारी-रके अनलगती हुइ हैं उकों लांबी करके पगोंमे चार श्रंगुल श्रंतर रखके थोमासा मस्तक नीचा नमावी एक किसी जीव रहित वस्तु उपर दृष्टि लगाके खमा रहुंगा १; गृहस्तका विनय नहीं क-रुंगा ३; मोन धारके रहुंगा ४; हाथमेही लेके जो-जन करुंगा, पात्रमे नहीं ५, ये श्रक्तिग्रह नियम धारण करेथे

त्र-४७-श्रीमहःवीरस्वामीजीने बद्मस्ब का-वमे कैसे कैसे परीयह परीषह जपसर्ग सहन करे थे तिनका संकेपसें ब्यान करो.

उ प्रथम उपसर्ग गोवालीयने करा ? शुलपाणिके मंदिरमें रहे तहां शूलपाणी यक्तने उपसर्ग करे ते ऐसे अहप्ट हासी करके मराया १
हाषीका रूप करके उपसर्ग करा १ सर्पके रूपसें
३ पिशाचके रूपसें ४ उपसर्ग सरा, पीठे मस्तकमे
१ कानमे २ नाकमे ३ नेत्रोंमे ४ दांतोमें ५ पुंठमें
६ नखेमें ७ अन्य सुकुमार अंगोमें ऐसी पीमा कीनीके जेकर सामान्य पुरुष एक अंगमेन्नी ऐसी
पीमा होवे तो तत्काल मरण पावे, परं न्नगवंतनेतो मेरुकी तरें अचल होके अदीन मनसें सहन

करे, श्रंतमे देवता श्रकके श्री महावीरजीका से-वक बना शांत हुआ। चंम कोशिक सर्पने मंक मारा परं जगवंततो मरा नही, सर्प प्रतिबोध हूआ, सुदंष्य नाग कुमार देवताका उपसर्ग सं-बल कंबल देवतायोंने निवारा. जगवंततो कायो-रत्तर्गमें खेमथे. लोकोंने बनमे अग्नि बालो लोक तो चले गये पीढे अग्नि सूके घासादिकों बालती हूइ जगवंतके पर्गों हेठ आ गइ, तिस्से जगवंत के पग दग्ध हूए परं ज्ञगवंतने तो कायोत्सर्ग बोमा नहीं. तहांही खमे रहे. कटपूतना देवीने माघ-मासके दिनोंमें सारी रात जगवंतके इारीरकों श्रत्यत शोतल जल गंटा, जगवंततो चलायमान नही हुए. श्रंतमे देवी धकके जगवंतकी स्तुति करने लगी. संगम देवताने एक रात्रिमें वीस ज-पसर्ग करे वे एसेहैं जगवंतके जपर धूलिकी वर्षा करी जिस्सें जगवंतके आंख कानादि श्रोत बंद होनेसें स्वासोत्साससें रहित हों गये तोज्ञी ध्या-नसे नही चले १ पीछे बज्रमुखी कीमीयों बनाके न्नगवंतका शरीर चालनिवत् सन्निइ करा २ बज्र

चूंचवाले दंशोने बहु पीमा करी ३ तीक्षा चूंच-वाली घीमेल बनके खाया ४ बिद्ध ए सर्प्य ६ न-**उ**ल ७ मूसे **ए के रूपोसें मंक** मारा और मांस नोची खाधा. हाष्री ए हथणी १० बनके सूंफ दांतका घाव करा पग हेठ मर्दन करा तोन्नी न्न-गवंत वज रूपन्न नाराच नामक संहनन वाले होनेसे नही मरे. पिशाच बनके अहहहास्य करा ११ सिंह बनके नख दानायोंसे बिदारचा, फामचा १२ सिडार्थ त्रिशायाका रूप करके पुत्रके स्नेइके बिलाप करे १३ स्कंधावारके लोक बनाके जग-वंतके पर्गों उपर हांनी रांधी १४ चंनालके रू-पसें पंखियोंके पंजरे जगवंतके कान बाहु आ-दिमे लगाये तिन पक्तीयोंने शरीर नोंचा १५ पीछे खर पवनसें ज्ञगवंतकों गेंदकी तरे जन्नाख २ के घरती ऊपर पटका १६ पींचे कलिका पवन क-रके जगवंतकों चक्रकी तरे घुमाया १९ पींचे चक्र मारा जिससें जगवंत जानु तक जूमिमे धस गये १८ पीं प्रजात विकुर्वी कहने लगा विहार करो. जगवंततो अवधिज्ञानसे जानतेथे के अबीतो रा-

त्रिदै १ए पीं देवांगनाका रूप करके हाव ज्ञा-वादि करके जपसर्ग दीना २० इन वीसों जपस-गौंसें जब न्नगवंत किंचित् मात्रन्नी नही चले तब संगमदेवताने बमास तक जगवंतके साथ रहके उपसर्ग करे, अंतमें धकके अपनी प्रतिकासें अष्ट होके चला गया अनार्य देशमे जगवंतको बहुत परीसह उपसर्ग हुए अंतमे दोनो कानोंमें गोवा-बीयोंने कांसकी सखीयो माखी तिनसें बहुत पीमा हुइ सा मध्यम पावापुरी नगरीमे खरकवैद्य सि-इार्घ नामा बाणियाने कांसकी सखीयों कानो-मेंसे काढी जगवंत निरुपक्रमायुवाले थे इससें **उ**पसर्गोमे मरे नहीं, अन्य सामान्य मनुष्यकी क्या शक्तिहै, जो इतने डुख होनेसें न मरे. वि-होष इनका देखना होवेतो आवश्यक सूत्रसं देख लेना.

त्र. ४०-श्रीमहावीरस्वामीकों उपसर्ग हो-नेका क्या कारण था.

ज.-पूर्व जन्मांतरोमें राज्य करणेसें अत्यंत पाप करे वे सर्व इस जन्ममेही नष्ट होने चाहिये इस वास्ते असाता वेदनीय कर्म निकाचितनें अ-पने फल रूप जपसर्गसें कर्म जोग्य कराके दूर दोगये, इस वास्ते बहुत जपसर्ग हुए.

प्र, ४ए-श्रीमहावीरजीने परीषहे किस वा-स्ते सहन करे और तप किस वास्ते करा.

ज.-जेकर जगवंत परीषहे न सहन करते श्रौर तप न करते तो पूर्वोपार्जित पाप, कर्म, क्रय न होते, तबतो केवलज्ञान श्रौर निर्वाण पद ये दोनों न प्राप्त होते इस वास्ते परीषहे जपसर्ग सहन करे, श्रौर तपज्ञी करा.

प्र. ५०-श्रीमहावीरजीने वदास्वावस्वामें तप कितना करा और जोजन कितने दिन कराथा, व.-इसका स्वरूप नोचलेयंत्रसे समऊ लेनां.

40			
पखवा भीयातप	Dr (D)	ल तप छर II एकत्र करे	मास ६ ९ ५
अहाइ हो मासी फेट मा मास क मास तप स तप पण तप तप	Dr or	सर्वकाल तप जैर पारषा एकत्र करे	१२ वर्ष मास दिन १५
रेड मा स तप	DY.	की कि म	•
दो मासी तप	lis*	सर्व पा रखां	∂RÈ
अहाइ मास तप	DY.	अहम तप	or ~
तीन मासी	DY	निव	2000
चार मासी	2/	सर्वता जड तप	0
ज मासीतप १मासीमासी	पांच दिन न्यून	महा जड् सर्वतो तप ४ जड्	æ
ब मासी	तप १	जड प्रति मा तप	ति य

प. ५१-श्रीमहावीरजीकों दीका लीये पीं के कितने वर्ष गये केवलकान उत्पन्न हुआथा.

3.-११ वर्ष ६ मास ऊपर १५ पंदरादिन इतने काल गये पोंछे केवलज्ञान ऊत्पन्न हुआथा.

प. ५२-श्रीमहावीरजीकों केवलङ्गान कैसी अवस्टामें और किस जों, जत्पन्न हुआथा.

ग्र-वैशाख शुदि १० दशमीके दिन पिग्नें चौथे पहरमें जुँजिक गाम नगरके बाहिर राजुः बालुका नामे नदीके कांग्रे कपर वैयावृत्त नामा व्यंतर देवताके देहरेके पास द्यामाक नामा गृहः पितके खेतमें साल वृक्तके नीचे गाय दोहनेके अवसरमें जैसें पगथलीयोंके जार बेग्नेंह तैसं उत्किटका नाम आसने बैग्ने आतापना खेनेकी जगें आतापना खेते हुए, तिस दिन दूसरा उपवास ग्रह जक्त पाणि रहित करा हुआथा. शुक्ल ध्यानके दूसरे पादमे आह्र हुआकों केवलङ्गान हुआथा.

प. ५३-नगवंतकों जब केवलज्ञान जत्पन हुआ था तब तिनकी केसी अवस्था हुइथी.

उ.-सर्वज्ञ सर्वद्शीं अरिहंत जिन केव्यी

रूप अवस्वा हुइथी.

त्र. ५४-जगवंतकी प्रथम देशनासें किसी-कों जाज हुआथा.

ਰ.—नही ॥ शुनने बालेतो थे, परंतु कि सीकों तिस देशनासें गुण नही जल्पन्न हुआ.

प. ५५-प्रथम देशना खाखी गइ तिस ब-नावकों जैन शास्त्रमें क्या नाम कहतेहै.

ग्र.—अन्नेरा जूत भर्यात् आश्चर्य जूत जैन शास्त्रमें इस बनावका नाम कहाहै.

प. ५६ — अन्नेरा किसकों कहतेहैं.

ज.-जो वस्तु अनंते काल पीठे आश्चर्य कारक होवे तिसकों अन्नेरा कहते है, क्यों कि को-इजी तीर्थं करकी देशना निःफल नही जाती है और श्रीमहावीर जीकी देशना निष्फल गइ, इस वास्ते इसको अन्नेरा कहते है.

प्र. ५९ -श्रीमहावीरजीतो केवलज्ञानसें जा-नते थे कि मेरी प्रथम देशनासें किसीकोंजी कुछ गुण नहीं होवेगा, तो फेर देशना किस् वास्ते दीनी.

उ.—सर्व तीर्थंकरोंका यद अनादि नियम

है कि जब केवलज्ञान जला होवे तब अवदयही देशना देते है तिस देशनासे अवदयमेव जीवांकों गुण प्राप्त होताहै, परं श्रीवीरकी प्रथम देशनासें किसीको गुण न हुआ; इस वास्ते अग्नेरा कहाहै।

त्र. ५७-श्रीमहावीर जगवंते दूसरी देशना किस जगें दीनीथी.

5.—जिस जगें केवलक्कान उत्पन्न हुआ था तिस जगासें ४० कोसके अंतरे अपापा नामा, नगरी थी, तिससें इशान कोनमे महासेन वन नामे उद्यान था तिस वनमें श्रोमहावीरजी आए; तहां देवतायोने समवसरण रचा तिसमें बैठके श्रीमहावोर जगवंते देशना दूसरी दोनी

प. ५ए-दूसरी देशना सुनने वास्ते तहां कोन कोन आये थे और तिस दूसरी देशनामें क्या बना जारी बनाव बना था और किस कि-सनें दीका लोनी, और जगवंतके कितने शिष्य साधु हुए, और बनी शिष्यणी कोन हूइ.

न नेकों अथि थे.

न्नगवंतकी देशना सुनके बहुत नर नारी अपापा नगरीमें जाके कहने लगे, आजतो हमारो पुन्यदशा जागी जो हमने सर्वक्रके दर्शन करे. श्रौर तिसकी देशना सुनी हमने तो ऐसी रचना-वाला सर्वज्ञ कदेश देखा नही; यह वात नगरमे विस्तरी तिस अवसरमें तिस अपापा नगरोमें सोमल नामा ब्राह्मणनें यज्ञ करनेका प्रारंत्र कर रका था, तिस यज्ञके कराने वाले इग्योरं ब्राह्म-शोंके मुख्याचार्य बुलवाये थे, तिनके नामादि सर्व ऐसें थे. इंड्जूति १ अग्निज़्ति २ वायुज़्ति ३ वे तीनो सगे जाइ, गौतम गोत्री, इनका जन्म गाम मगधदेशमें गोर्बरगाम, इनका पिता बसुन्नृति, माताका नाम पृथिवी, उमर तीनोकी गृहवासमें क्रमसे ५०। ४६। ४२। वर्षकी इनके विद्यार्थी ५०० पांच पांचसौ चतुर्दश विद्याके पारगामी चौथा श्रव्यक्त नामा १ जारद्वाज गोत्र १ जन्म गाम कोल्लाक सन्निवेस ३ पिताका नाम धन-मित्र ४ माता वारुणी नामा ५ गृहवासें उमर पण वर्षकी ६ विद्यार्थी पण सौ 9 विद्या

का जान ए पांचमा सुधर्म नामा १ अग्निवैदया-यन गोत्री १ जन्म गाम कोल्लाक सन्निवेस ३ पिता धम्मिल ध जिङ्ला माता ए गृहवास ५० वर्ष ६ विद्यार्थी ५०० सो ७ विद्या । १४ । ए. ब्रहा मंभिकपुत्र नाम १ वाशिष्ट गोत्र २ जन्म गाम मौर्य सन्निवेश ३ पिता धनदेव ४ माता विजय-देवा ५ गृहवास ६५ वर्ष ६ विद्यार्थी ३५० सौ ७ विद्या। १४। ए सातमा मौर्य पुत्र नाम १ का-इयप गोश्र १ जन्म गाम मौर्य सन्निवेस ३ पिता मौर्य नाम ४ माता विजयदेवा ए गृहवास ए३ वर्ष ६ विद्यार्थी ३५० सो ७ विद्या । १४ । ७. आ-वमा अकंपित नाम १ गौतम गोत्र १ जन्म गाम मिथिला ३ पिता नाम देव ४ माता जयंती ५ गृ-इवास् ४० वर्ष ६ विद्यार्थी ३०० सौ, विद्या १४। **ए. नवमा अ**चलस्राता नाम १ गोत्र हारीत २ जन्म ग्राम कोशला ३ पिता नाम वसु ५ नंदा माता ए गृहवास धह वर्ष ६ विद्यार्थी ३०० सो, विद्या १४। ए. दसमेका नाम मेतार्य १ गोत्र को-मिन्य २ जन्म गाम कौशला वत्स न्न्रामिमे ३

पिता दत्त ध माता बरुणदेवा ए गृहवास ३६ वर्ष ६ विद्यार्थी ३०० तीनसौ ७ विद्या १४ । ए. इ-ग्यारमा प्रजास नामा १ गीत्र कोिनन्य २ जन्म राजगृह ३ पिता बल ४ माता ऋतिज्ञहा ५ गृह-वास १६ वर्ष ६ विद्यार्थी ३०० सौ ७ विद्या १४ । ए. इस स्वरूप वाले इग्यारे मुख्य ब्राह्मण यज्ञ पानेमें थे तिनोके कानमें पूर्वोक्त शब्द सर्वज्ञकी महिमाका पना, तब इंद्रजृति गौतम अजिमान सें सर्वज्ञका मान जंजन करने वास्ते जगवंतके पास आया । तिनकों देखके आश्चर्यवान् हुआ; तब जगवंतने कदा हे इंइज़ृति गौतम तुं श्रायाः तब गौतम मनमें चिंतने लगा मेरे नाम लेनेसें तो मै सर्वज्ञ नही मानुं, परं मेरेरिदय गत संज्ञाय दूर करे तो सर्वज्ञ मानुं. तब जगवंतने तिनके वेद पद और युक्तिसे संशय दूर करा. तब ५०० सौ बात्रा सहित गौतमजीने दोक्ता खीनी, ए बमा शिष्य हुआ. इसी तरे इग्यारेद्दीके मनके संशय दूर करे और सर्वने दीका लीनी. सर्व ४४०० सौ इग्यारे श्रिविक शिष्य हुए. इग्यारोंके भनमें जीवहै के

नही ? कर्महैंके नदी २ जो जीवहें सोइ शरीरहै वा शरीरसे जीव अलगहै ३ पांच जूतहे वा नही ४ जैसा इस जन्ममे जीवहै जन्मांतरमें ऐसाही होवेगा के अन्य तरेंका होवेगा ए मोक्तहें के नही ६ देवते है के नहीं 9 नारकी है के नहीं ए पुन्य है के नहीं ए परलोकहें के नहीं १० मोक्तका ज-पाय है के नहीं ११. इनके दूर करनेका संपूर्ण क-थन विशेषावदयकमेहै तिस दिनही चंपाके राजा द्धिवाइनको पुत्री कुमारी ब्रह्मचारणो चंदनवाः लाने दीका लीनी. यह बमो शिष्यणी हुइ, इसके साथ कितनीही स्त्रीयोंने दीका खीनी. दूसरी दे-शनामे यह बनाव बनाया.

प. ६०-गणधर किसकों कहतेहै.

5.—जिस जीवनें पूर्व जन्ममे शुज्ज करणी करके गणधर होनेका पुन्य उपार्जन करा होवे सो जीव मनुष्य जन्म लेके तीर्धंकरके साथ दीका लेताहै अथवा तीर्थंकर अर्हतको जब केवलकान होताहै तिनके पास दीका लेताहै, और बमा शि-ष्य होताहै; तीर्थंकरकें मुखसें त्रिपदी सुनके ग- णघर खिंघमें चौदहे पूर्व रचतादे और चार जा-नका घारक होताहै. तिसकों तीर्थंकर जगवंत गणघर पद देतहें और साधुयोंके समुद्राय रूप ग-णकों धारण करता है, तिसकों गणधर कहतेदें.

प्र.६१-श्रीमहावीरजीके कितने गणघर हुए थे.

ज.-इग्यारें गणधर हुए थे, तिनके नामजपर लिख आएहै.

प. ६२-संघ किसकों कइतेहैं.

उ.-साधु १ साध्वी २ श्रावक ३ श्राविका ४ इन चारोंकों संघ कहतेहैं

प्र. ६३—श्रीमहावीर जगवंतके संघमें मुख्य नाम किस किसका था.

ज.-साधुयों में इंड्यूति गौतम स्वामी नाम प्रसिद्ध ? साधवीयों में चंपा नगरी के दिषबाहन राजाकी पूत्री साधवी चंदनबाला श्रशावकों में मु-ख्य श्रावस्ति नगरी के वसने वाले संख १ शतक श्राविकायों में सुलसा ३ रेवती ४ सुलसा राज-गृहके प्रसेतिजित राजाका सारधी नाग तिसकी जार्या; श्रोर रेवती में ढिक ग्रामकी रहने वाली धनाह्य गृह पत्नी थी

प्र. ६४-श्रीमहावीरस्वामीनें किसतरेंका धर्म प्ररूप्या था

ज.—सम्यक्त पूर्वक साधुका धर्म ब्रोर श्राव कका धर्म प्ररूप्या था-

प्र ६५ सम्यक्त पूर्वक किसकों कहतेहैं.

ज.—न्नगवंतके कथनकों जो सत्य करके श्रदे, तिसकों सम्यक्त कहतेहै, सो कथन यहहै लोककी ग्रस्तिहै १ ग्रलोकजीहै २ जीवजीहै ३ अजीवजीहें ४ कर्मका बंघजीहें ५ कर्मका मोक्त ज़ीदें ६ पुन्यज़ी है 9 पापज़ीहै 0 आश्रव कर्मका आवणानी जीवमेहै ए कर्म आवनेके रोकणेका **जपाय संबरन्नीहै १० करे कर्मका वेदना न्नोगना**-ज्ञोहै ११ कर्मकी निर्जराज्ञीहै कर्म फल देके खि-रजातेहें १२ अरिहंतजीहै १३ चक्रवर्तीजीहें १४ बलदेव बासुदेवजीहै १५ नरकजीहै १६ नारकी-जीहै १७ तिर्यंचजीहै १० तिर्यंचणीजीहै १ए माता पिता क्रषीन्नीहै २० देवता और देवलोक-जीहै २१ सिद्धि स्थानजी है २२ सिद्जीहै २३

परिनिर्वाणनीहै २४ परिनिवृत्तनीहै २५ जीवहिं-साजीहै १५ जुठजीहै १६ चौरीजीहै १७ मैयुन-नीहै १० परिग्रहर्नाहै १ए क्रोध, मान माया, लोज, राग, देष, कलह, अञ्चाख्यान, पेशुन, प-रनिंदा, माया, मृषा, मिण्यादर्शन, शख्य येन्नी सर्व है. इन पूर्वोक्त जीव हिंसासें लेके मिण्याद-र्शन पर्यंत अठारह पापोंके प्रतिपक्ती अठारह प्र-कारके त्यागन्नीहै ३० सर्व अस्ति नावकों अस्ति रूपे और नास्तिज्ञावकों नास्तिरूपें जगवंतने क-हाहै ३१ अन्ने कर्मका अन्ना फल होताहै बुरे क-मीका बुरा फल होताहै ३२ पुण्य पाप दोनो सं-सारावस्थामें जीवके साथ रहतेहैं ३३ यह जो निर्पंषोंके वचनहें वे अति उत्तम देव लोक और मोक्तके देने वालेहैं ३४ चार काम करने बाला जीव मरके नरक गतिमें जल्पन्न होताहै. मदा हिंसक, केत्र वामी कर्षण सर सोसादिसें मद्दा जीवांका बध करनेवाला १ महा परिग्रह तृश्रा वाला १ मांसका खाने वाला ३ पंचेंडिय जीवका मारने वाला ४ ॥ चार काम करनें वाला मरके तिर्यंच

गतिमें जत्पन्न होताहै माया कपटसें दूसरेके साध वगी करे १ अपने करे कपटके ढांकने वास्ते जुव बोले २ कमती तोल देवे अधिक तोल लेवे ३ गु-णवंतके गुण देख सुनके निंदा करे ध चार काम करनेसें मनुष्य गतिमें जलन होताहै; न्निक स्व नाव वाले स्वन्नावें कुटलितासें रहित दोवे ? स्वजावेहीं विनयवंत होवे १ दयावंत होवे ३ गुण-वंतके गुणसुनके देखके द्वेष न करे थ।। चार का-रणसें देवगतिमें जत्पन्न होताहै; सरागो साधुपणा पालनेसें ? गृहस्य धर्म देश विरति पालनेसें श अज्ञान तप करनेसें ३ अकाम निर्जरासें ४ तथा जैसी नरक तिर्यंच गतिमे जीव वेदना ज्ञोगताहै और मनुष्यपणा अनित्यहें व्याधि, जरा, मरण वेदना करके बहुत ज्ञरा हूत्राहै, इस वास्ते धर्म करणेमें ज्यम करो देवलोकमें देवतायोंकों मनु-ष्य करतां बहुत सुखहैं। अंतमे सोन्नी अनित्यहैं। जैसें जीव कमोंसें बंधाताहें और जैसें जीव क-र्मसें बुटके निर्वाण पदकों प्राप्त होताहैं श्रीर षटकायके जीवांका स्वरूप ऐसाहै पींगे साधुका धर्म और श्रावकके धर्मका यह स्वरूपेहे इत्यादि धर्म देशना श्री महावीर जगवंते सर्वजातिके म-नुष्यादिकोंकों कथन करीथी

त्र. ६६-साधुके धर्मका थोमेसेमें स्वरूप कइ दिखलान

जि—पांच महाव्रत और रात्रि जोजनका त्याग यह ब वस्तु धारण करे. दश प्रकारका यति धर्म और सत्तरें जेदे संयम पालन करे; ४२ बैतालीस दोष रहित जिका प्रहण करे; दशविध चक्रवाल समाचारी पाले

प्र· ६७—श्रावक धर्मका योनेसेमें स्वरूप कह दिखलान.

उ-त्रस जीवकी हिंसाका त्याग १ बमे जुठका त्याग, अर्थात् जिसके बोलनेंसे राजसें दंम होवे, और जगतमें जुट बोलने वाला प्रसिद्ध होवे. ऐसें चौरीमेंन्नी जानना १ बडी चोरीका त्याग ३ परस्त्रीका त्याग ४ परिग्रहका प्रमाण ५ उदें दिशामें जानेका प्रमाण करे. न्रोग परिन्नो-गका प्रमाण करे; बावीस अन्नस्य न खाने योग्य वस्तुका ओर बतीस अनंत कायका त्याग करे. और १५ बुरे वाणिज व्यापार करनेका त्याग करे. बिना प्रयोजन पाप न करे. सामायिक करे; देशावकाशिक करे; पोषध करे; दान देवे; त्रिका ल देव पूजन करे.

प्र. ६०—साधु श्रावकका धर्म किसवास्ते मनुष्योंको करना चाहिये.

ग्रान्जनम मरणादि संसार श्रमण रूप इलसें बूटने वास्ते साधु श्रीर श्रावकका पूर्वोक्त धर्म करना चाहिये.

प. ६ए—श्रोज्ञगवंत महावीरजीने जो धर्म कथन कराथा. सो धर्म श्रीमहावीरजीने अपने हाथोंसे किसी पुस्तकमें लिखा था वा नही.

ग्र.–नही तिखाथा.

प्र. ७०—श्रीमहावीर जगवंतका कथन करा हुआ सर्व उपदेश जगवंतकी रूबरु किसी दूसरे पुरुषनें लिखाथा.

ज -दूसरे किसी पुरुषने सर्व नही लिखाथा.

प्र. ७१--क्या लिखने लोक नही जानते

थे, इस वास्तें नही लिखा वा अन्य कोइ कार-ए था.

उ.— लिखनेतो जानते थे, परं सर्व ज्ञान लिखनेकी शक्ति किसोजी पुरुषमें नही थी, क्योकें जगवंतने जितना ज्ञानमें देखा था सके अनंतमें जागका स्वरूप वचनदारा कहा था. जितना कथन करा था तिसके अनंतमें जाग प्रमाण गणधरोने घादशांग सूत्रमें यंथन करा, जेकर कोइ १२ बारमें अंग दृष्टिबादका तीसरा पूर्व नामा एक अध्ययन लिखे तो १६३०३ सो-**बांइजार तीन सौ त्रिराशी हायीयों** जितने स्पा हीके ढेर लिखनेमें लगें, तो फेर संपूर्ण दादशांग लिखनेकी किसमे शक्ति हो सक्तीहै, और जब तोर्थंकर गणधरादि चौदह पूर्वधारी विद्यमानथे तिनके त्रागे विखनेका कुबनी प्रयोजन नहीथा. श्रीर देशमात्र ज्ञान किसि साधु, श्रावकने प्रक-रण रूप लिख लीया होवे, अपने पठन करने वास्ते, तो निषेध नही.

प. ७१--पूर्वोक्त जैनमतके सर्व पुस्तक

श्रीमहावीरसें श्रोर विक्रम संवत्की शुरुयातसें कितने वर्ष पीछे लिखे गये है,

ग्र-श्रीमहावीरजीसें एठ नवसी ग्र-स्सी वर्ष पीग्रे श्रीर विक्रम संवत् ५१० में लिखे गये है,

प ७३-इन शास्त्रोंके कंठ और लिखनेमें क्या व्यवस्था बनी थी, और यह पुस्तक किस जगे किसने किस रीतीसे कितने लिखेथे.

ठ.—श्रीमहावीरजीसें १९० वर्षतक श्री ज्ञाइ क्वाहुस्वामी यावत् (चाइशांग) चौदह पूर्व श्रोर इग्यारे श्रंग जैसें सुधमस्वामीने पाठ ग्रंथन करा था तैसाही था, परं ज्ञञ्ज्ञाहुस्वामीने बारां ११ चोमासे निरंतर नैपाल देशमें करे थे, तिस समयमें हिंडुस्थानमें बारां वर्षका काल पनाथा, तिसमें जिद्धा ना मिलनेसें एक जञ्ज्ञाहुस्वामीकों बर्जके सर्व साधुयोंके कंठसें सर्व शास्त्र बीच बीचसें कितनेही स्थल विस्मृत हो गये, जब बारां वरसका काल हर हूआ, तब सर्व आचार्य साधु पानलिपुत्र नगरमें एकठे हुए, सर्व शास्त्र

आपसमें मिलान करे तब इग्यारे अंग तो संपूर्ण हुए, परंतु चौदह पूर्व सर्व सर्वथा जूल गए, तब संघको ब्राज्ञासें स्थुलजदादि ५०० सौ तीक्खा बुद्धिवाले साधु नैपाल देशमें श्रीजङबाहुस्वा-मोके पास चौदह पूर्व सीखने वास्ते गये, परंतु एक स्थुलन्नइस्वामीने दो वस्तु न्यून दश पूर्व पाठार्थसें सीखे. शेष चार पूर्व केवल पाठ मात्र सीखे. श्री जडबाहुके पाट उपर श्री स्युवजड स्वामी बैठे, तिनके शिष्य आर्यमहागिरिसुइ-स्तिसे लेके श्रो वज्रस्वामी तक जो वज्रस्वामी श्री महावीरसें पीबे ५०४ में वर्ष विक्रम संवत् ११४ में स्वर्गवासी हुए है तहां तक येह आचार्य दश पूर्व और इग्यारे अंगके कंट्याप्र ज्ञानवाले रहे, तिनके नाम आर्थ महागिरि १ आर्यसुहस्ति २ श्री गुणसुंदरसूरि ३ इयामाचार्य ४ स्कंधिलाचार्य ए रेवतीमीत्र ६ श्रो धर्मसूरि ७ श्री जङ्गृत ७ श्रो गुप्त ए बज्जस्वामी १० श्री बज्जस्वामीके समीपे तोसलीपुत्र आचार्यका शिष्य श्री आर्थरिकत सूरिजीनें साढे नव पूर्व पाठार्घसें पठन करे. श्री

आर्थरिकतसूरि तक सर्व सूत्रोंके पाठ उपर चा रोदो अनुयोगकी व्याख्या अर्थात् जिस स्रोकमें चरणकरणानुयोगकी व्याख्या जिन अक्रोंसे क रतेथे तिसही श्लोकके अक्तरोंसे इव्यानुयोगकी व्याख्या और धर्मकथानुयोगकी और गणितानु योगकी व्याख्या करते थे. इसतेरं अर्थ करणेकी रीती श्री सुधर्मस्वामीसे लेके श्री ग्रार्यरिकतसूरि तक रही, तिनके मुख्य शिष्य विंध्य ह्वं विका पु-ष्पादिकी बुद्धि जब चारतरेंके अर्थ समऊनेमें ग-जराइ तब श्री ब्रायरिक्तितसूरिजीने मनमें वि-चार करा के इन नव पुर्वधारीयों की बुद्धिमें जब चार तरेंका अर्थ याद रखना कितन पमता है, तो अन्य जोव अख्प बुद्धिवासे चार तरेंका सर्व शा-स्त्रोंका अर्थ क्युं कर याद रखेंगे, इस वास्ते सर्व शास्त्रोंके पार्टीका अर्थ एकैक अनुयोगकी व्याख्या शिष्य प्रशिष्योंकों सिखाइ. शेष व्यवबेद करी सोइ व्याख्या जैन श्वेतांबर मतमे आचार्यांकी अ विजिन्न परंपरायसे ब्राज तक चलतो है, तिनके पीं स्कंधिलाचार्य श्री महावीरजीके १४ मे

पाट हुए हैं नंदीसूत्रकी वृत्तिमें श्री मलयगिरि श्राच।र्ये ऐसा विखाहै कि श्री स्कंधिवाचार्यके स-मयमें बारां वर्ष १२ का इजिंक काल पना, ति-समें साधुयोंकों जिका न मिलनेसें नवीन पढना श्रीर पिछला स्मरण करना बिलकुल जाता रहा। और जो चमत्कारी अतिशयवंत शास्त्रथे वेनी बहुत नष्ट हो गये. और अंगोपांगन्नी नावसें अ-र्थात् जैसे स्वरूप वालेथे तेसे नही रहे. स्मरण परावर्त्तनके अज्ञावसें जब बारां बर्षका इर्जिक काल गया और सुन्निक हुआ, तब मथुरा नग-रोमें स्कंधिलाचार्य प्रमुख श्रमण संघने एकवे होके जो पाठ जितना जिस साधुके जिस ज्ञा-स्रका कंठ याद रहा सो सर्व एकत्र करके कालि-क श्रुत ग्रंगादि ग्रौर कितनाक पूर्वगत श्रुत किं-चित्मात्र रहा हुया जोमके य्रंगादि घटन करे, इस वास्ते इसकों माधुरि वाचना कहते है. कि-तनेक आचार्य ऐसें कइतेहै १२ वर्षके कालके व-ससें एक स्कंधिलाचार्यकों वर्जक रोष सर्वाचार्य मर गये थे. गीतार्थ अन्य कोइन्नी नही रहा था,

परं सर्व शास्त्र जूखेतो नही थे; परंतु तिस का-समें इतनाही कंठ था, शेष अख्य बुद्धिके प्रज्ञा-वसें पहिलां इन्नि गया था, तिस स्कंधिला-चार्यके पीं आठमे पाट और श्री वीरसें ३२ में पाट देवर्द्धिगणि कमाश्रमण हुए, तिनका ब्रुतांत ऐसें जैन यंथोमें विखा है. सोरव देशमें वेखा-कूलपत्तनमें अरिदमन नामे राजा, तिसका सेव-क काइयप गोत्रोय कामर्दि नाम क्रत्रिय, तिस-की जार्या कलावती, तिनका पुत्र देवर्दिनामे, तिसने लोहित्य नामा आचार्यके पास दीका ली-नी, इग्यारे अंग और पूर्व गत ज्ञान जितना अ-पने गुरुकों आताया, तितना पढ लिया, पीछे श्री पार्श्वनाथ ब्राईतकी पट्टावलिमे प्रदेशी राजाका प्रतिबोधक श्री केशी गणधरके पट्ट परंपरायमें श्री देवगुप्त सूरिके पासों प्रथम पूर्व पठन करा, अर्धसें, दूसरे पूर्वका मूल पाठ पढते हुए श्री दे-वगुप्त सूरि काल कर गये, पीछे गुरुने अपने पष्ट क्रवर स्थापन करा. एक गुरुने गणि पद दीना, दूसरेने कमाश्रमण पद दोना, तब देवर्दिंगणि

क्रमाश्रमण नाम प्रसिद्ध हुत्रा. तिस समयमें जैन मतकै ५०० पांचसौ ब्राचार्य विद्यमान थे, तिन सर्वमें देवर्दिंगणि क्षमाश्रमण युगप्रधान श्रौंर मुख्याचार्य थे, वे एकदा समय श्रो शत्रुंजय ती-र्थमें वज्र स्वामिकी प्रतिष्टा हुइ. श्री क्रपनंदेवकी पितल मय प्रतिमाकों नमस्कार करके कपर्दि यक्तकी आराधना करते हुए; तब कपर्दि यक्त प्र-गट होके कहने लगा, हे जगवान, मेरे स्मरण करनेका क्या प्रयोजन है. तब देवर्द्धिंगणी क्रमा-श्रमणजीने कहा, एक जिनशासनका कामहै, सो यहहै कि बारें वर्षी इकालके गये, श्री स्कंघिला-चार्यने माथुरो वाचना करीहै; तोन्नो कालके प्र-जावसें साधुयोंकी मंद बुद्धिके होनेसें शास्त्र कं-वसें भूखते जातेहें. काखांतरमें सर्व भूख जावेंगे. इस वास्ते तुम साहाय्य करो. जिस्सें में ताम पत्रो ऊपर सर्व पुस्तकोंका बेख करुं; जिससें जैन शास्त्रकी रक्ता होवे. जो मंदबुद्धिवालान्नी होवेगा सोन्नी पत्रों उपरि शास्त्राध्ययन कर सकेगा, तब देवतानें कहा में सानिध्य करंगा, परंतु सर्व सा-

धुर्योकों एकठे करो श्रौर स्याही ताम पत्र बहुत संचित करो; लिखारियोंको बुलात; और साधारण इव्य श्रावकोंसें एकडा करावा; तब श्री देवाई-गणि कमाश्रमणनें पूर्वोक्त सर्व काम वल्लजी न-गरीमें करा, तब पांचसौ आचार्य और वृद्ध गी-तार्थोंनें सर्वीगोपांगादिकांके आदापक साधु ले-खकोंनें लिखे, खरमा रुपसें; पीछे देविंदगिण क्तमाश्रमणजीने सर्व श्रंगोपांगोके श्रादापक जो-मके पुस्तक रूप करे परस्पर सूत्रांकी भुवावना जैसं त्रगवतीमे जहा पन्नवणाए इत्यादि अति देशकरे सर्व शास्त्र शुद्धकरके लिखवाए देवताकी सानिध्यतासें एक वर्षमें एक कोटी पुस्तक १०००००० लिखे आचारंगका महाप्रज्ञा अध्य-यन किसी कारणां न लिखा, परं देवर्द्धिगणि क्र-माश्रमणजी प्रमुख कोइज्ञी ग्राचार्यने ग्रपनी मन कल्पनासें कुन्नी नदी विखाहै. इस वास्ते जैन शास्त्र सर्व सत्य कर मानने चाहिये ॥ जो कोइ कोइ कथन समऊमें नहीं आताहै, सो यथार्थ गुरु गम्यके अज्ञावसं; परं गणधरोके कथनमें किंचित् मात्रत्री भूल नहीहै. और जो कुछ किसी आचा-र्यके भूल जानेसें अन्यथा लिखात्री गया होवे ते। जी अतिशय ग्यानी विना कोन सुधार सके; इस वास्ते तहमेव सच्चं जं जिलेहिं पत्रत्तं, इस पाठके अनुयायी रहना चाहिये.

प्र. 98—जैन मतमै जिसकों सिद्धांत तथा आगम कहते हैं, वे कौनसे कौनसे हैं. और ति-नके मूख पाठ ? निर्युक्ति १ जाष्य ३ चूिस ४ टीका ए के कितने कितने ३१ बत्तीस अक्तर प्र-माण श्लोक संख्याहै, यह संक्षेपसें कहो.

ठ.-इस कालमें किसी रूढिके सबबसें धए पेंतालीस आगम कहें जाते हैं, तिनके नाम और पंचांगों के श्लोक प्रमाण आगे लिखे हुए, यं-त्रसें जान लेने. और इनमें विषय विधेय इस तिरका है. आचारंगमें मूल जैन मतका स्वरूप, और साधुके आचारका कथनहै. १ स्यगमांगमें तीनसों ३६३ त्रेसच मतका स्वरूप कथनादि वि-चित्र प्रकारका कथनहै २ ठाणांगमें एकसें लेके दश पर्यंत जे जे वस्तुयो जगतमें है तिनका क-

थन है. ३ समवायांगमें एकसें लेके कोटाकोटि पर्यंत जे पदार्थ है तिनका कथन है ४. जगवतीमें गौतमस्वामोके करे हुए विचित्र प्रकारके ३६००० उत्तीस इजार प्रश्नोके उत्तर है. ए ज्ञातामें धर्मी पुरुषोंकी कथाहै. ६ उपाशक दशामें श्री महा-वीरके आनंदादि दश श्रावकोंके स्वरूपका कथन है. ७ अंतगममें मोक्त गये ए नव्वे जीवांका कथन हैं. ए अणूनरोववाइमें जे साधु पांच अनु-त्तर विमानमे जत्पन्न हुएहे, तिनका कथन है. ए प्रश्रव्याकरणमें हिंसा १ मृषावाद २ चौरी ३ मेथुन ४ परिग्रह ५ इन पांचो पापांका कथन और अहिंसा १, सत्य २, अचौरी ३, ब्रह्मचर्य ४, परिग्रह त्याग ५ इन पांचो संवरोका स्वरूप क-थन कराहे. १० विपाक सूत्रमें दश इख विपाकी श्रीर दश सुख विपाकी जोवांके स्वरूपका कथन है. ११ इति संकेपसें ग्रंगाजिधेय. जववाइमें १२ बावीस प्रकारके जीव काल करके जिस जिस जों जत्पन्न होते हैं तिनका कथनादि, कोणकको बंदना विधि महावीरकी धर्म देशनादिका कथन

है. १ राजप्रश्रीयमें प्रदेशी राजा नास्तिक मती-का प्रतिबोधक केशी गणधरका और देव विमा-नादिकका कथन है। २ जीवाजीगममें जीव अ-जीवका विस्तारसें चमत्कारी कथन करा है. ३ पन्नवणामें ३६ बत्तीस पदमे बत्तीस वस्तुका बहुत विस्तारसें कथन है. ४ जंबुद्दिप पन्नतिमें जंबुद्दी-पादिका कथन है. ५ चंड्प्रक्रप्ति, सूर्यप्रक्रप्तिमें ज्योतिष चक्रके स्वरूपका कथन है. ६, ७ निरा-वलिकामें कितनेक नरक स्वर्ग जाने वाले जीव श्रोर राजायोंको लमाइ श्रादिकका कथन है. ७। ए। १०। ११॥ १२ त्रावइयकमें चमत्कारी स्रति सुहम पदार्थ नय निक्षेप ज्ञान इतिहासादिका क-थनहै, १ दशवैकालिकमें साधुके आचारका कथन है १ पिंमनिर्युक्तिमें साधुके शुद्धाहारादिकके स्व-रूपका कथन है ३ उत्तराध्ययनमें तो उत्तीस अ-ध्ययनोमें विचित्र प्रकारका कथन कराहै ४ उहीं बेद ग्रंथोमें पद विज्ञाग समाचारी प्रायश्चित या दिका कथन है ६ नंदीमें ५ पांच ज्ञानका कथन करा है. १ अनुयोगद्वारमें सामायिक के उपर चार

अनुयोगद्वारीं व्याख्या करीहै २ चन्नसरणमें चारसरणेका अधिकार है १, रोगीके प्रत्याख्यान की विधी १, अनदान करणेकी विधी ३, बरे प्र-त्पारुयानके करणेका स्वरूप ४, गर्जादिका स्व-रूप ५, चंइ बेध्यका स्वरूप ६, ज्योतिषका कथ-न ७, मरणके समय समाधिकी रीतिका कथन o, इंदोके स्वरूपका कथन ए, गत्वाचारमें गत्वका स्वरूप, १० और संस्थारपइन्नेमें संयारेकी महि-माका कथनहै, यह संक्षेपसें पैतावीस आगममें जो कुछ कथन करा है, तिसका स्वरूप कहा, प रंतु यह नही समऊ लेनाके जैन मतमें इतनेही शास्त्र प्रमाणिक है, अन्य नही; क्योंकि जमास्वा ति त्राचार्यके रचे हुए, ५०० प्रकरणहे, त्रीर श्री महावीर जगवंतका शिष्य श्री धर्मदास गणि क-माश्रमणजीकी रची हुइ जपदेशमाला तथा श्री इरिज्ञइ सूरिजीके रचे १४४४ चौदहसों चौवाली-स शास्त्र इत्यादि प्रमाणिक पूर्वधरादि आचार्यों-के प्रकृति शतकादि हजारोदी शास्त्र विद्यमान है, वे सर्व प्रमाणिक आगम तुख्य है, राजा शि-

वप्रसादजीने अपने बनाए इतिहास तिमर ना-सकमें विखा है। बुवरसाहिबने १५०००० मेढ लाख जैन मतके पुस्तकोंका पता लगाया है; श्रोर यहन्नी मनमें कुविकख्य न करनाके यह शास्त्र गणधरोंके कथन करे हुए है, इस वास्ते सचे है, अन्य सचे नदी, क्योंके सुधर्मस्वामीने जेसे अंग रचेथे वैसेतो नही रहेहें, संप्रति काल-के ग्रंगादि सर्व शास्त्र स्कंधिलादि ग्राचार्योने वां-चना रूप सिद्धांत बांधेहै, इस वास्ते पूर्वीक आ-प्रह न करना, सर्व प्रमाणिक श्राचायोंके रचे प्र-करण सत्यकरके मानने, यही कख्याणका हेतुहै.

तव संख्या.		रक्षर	36 300	2002	£825	23404	४ ०३५५
टीका. सब		0000	१२६५०	0 3 8	300 £	80 80	2002
ने वी ेवा		0 € D	0 0 0	0	0 0 0	0 0 0 20	0
भाष्यं.	अथांगानि.	0			•	0	0
नियुक्तिः	 	0 5 >>	0 5 14	0	0	0	0
मंत्र मूख संख्याः		००१२	000	990 t	8 mg 8	१६७६२	000
सूत्र नामानि		आचारांग सूत्रं	स्पगडांग मूत्रं.	ठाणंग सूत्रं.	समवायांग मूत्रं.	भगवती सूत्रं.	ज्ञाता धर्मकथा
सं-		~	a	m٠	æ	5	w

	>0 0 m		0505	6. 0. m.		6000	noon
	0 m ~) 0 0 0	0 0		0' (r)	0 0
0	0	0	0			o	0
•	0	0	o	0	अद्योपांगानि.	0	0
0	0	0	0		श्रयो	0	0
~ ~ D	0 60	8	0 3 8	10°		9 w ~ ~	3905
उपाशकद्शांग सूत्रं	अंतगड सूत्रं.	अनुत्तरोवबाइ सू	प्रश्रुट्याक्तरण मूत्रं.	विषाक अपूर्तांग सूत्रं.		उचवाइ सूत्रं.	राजमभाय सूत्रे.
9	ם	•	0	~		م. مر	~ ~

		इ ६		
0 m. 0	26 yh 2	3200	>0 m- ~ ~	००२४
१ ३००० हिप्पन १ १००	ख्य स्ट्रिट स्ट्रिट अहर्त्	0 0 0	20	0 0 0 0 0
0000	6	° 37	•	0
D	o	o	o	0
o	o	0	0	В
009%	0 0 0 0 0	\(\frac{1}{2}\)	00	0000
जीवाभिगम मूत्रं.	पन्न गा। सूत्रं,	जंबद्वीय पत्राति मूत्रं	चंद्र पन्नति सूत्रं	सूर्य पन्नांस सूत्रं
m >0 ~~	>> & ~	e w	w 9	9 0

ه ا ا		。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。 。
° ° 9		२२००० दिप्त ४६००
0	षि.	00022
•	अध मूत सूत्राषि.	0
0	अध म	0000
o o o o o		0
निरावित्या सुप्रबंध मूत्रं, कर्षिया मूत्रं, मूत्रं, पुरफच्लिया मूत्रं, मूत्रं, मूत्रं,		आवश्यकं.
		~ >0

			독 ሀ	
0 0 0 9 2	0 20 m-	\$ \$200	0 8 8 9 6	009%
0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	०००४	0000	भू के स्व त्रिक्त के दिल्ल	े प्राप्त कर हो । जिल्ला कर हो । जिल्ला कर हो ।
•	00 %	000	o o o o	o
o	 0 	0 0	o	o
o	0	o	9 %	o
0 0 0 n	0 0 m	09	9	0 0 9
विशेषाबञ्यकं	पाक्षिकं सूत्रं.	ज्ञधानियुष्तिः 	दरावकालिक मूत्रे.	पिंडान युक्तिः
	1		w 2	w. w

	1		N W		
37 78 C 84		& & & &	e 9 R の V	32505	2260
0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0		0	° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° °	m 10 10 10	0
m. o D	 -	27.46	१४०००० बिशेष ११०००	₩ ₩ ₩	0 m-
o 	अध हेद सूत्राणि	D	は な な な な の の の の の の の の の の の の の	0 0	0 5 m
D D J	अध	234	Þ	D	D
0 0 0		\$ C 3 O	m- 9 ∞	D D 0	m C
उत्तराध्ययन सूत्रं.		द्शाश्रुत स्नेधि सूत्र.	ह हत्कल्प सूत्रं.	ठयवहार सूत्र.	पंचकत्प सूत्रं,
× 9		~ Ω~	8 D	m _r o	× ~

£ m

क्रम्भ	ħ &≥28	00226		مد ا	>0 V
° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° °	o	बृहद्दांचना ४५००		o	0
१००० विशेषचाणे '१०००	° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° ° °	शंचना १०		o	0
	के तम् के तम	मध्यम् वांचना धर्००	पइत्रा स्त्राणि.	0	0
0	o	गुर्याचना ३५००	पइन	0	o
300	1	लगुवांचना ३५००	İ	× w	 20
जीतकत्प मूत्रं.	जातकल्प मूत्र. निशिष मूत्रे.			चतुःश् सूत्रं	आनुरम्रत्या ख्यानं सूत्रं.
	۶ ۴ ۳	m. w.		~ >o mr	T S

2	>>> m· ~	20	(b) (c)	~	m,	0000
0	0	٥	0	0	•	0
•	o	0	o	•	0	0
o	o	0	o	0	0	0
•	o	0	0	o	o	0
~ 9 ~	>> mr ~	D O 20	9	0	10°	000
भक्तपश्चिम सूत्रं	महापत्यात्व्यानं मूत्रं,	तंदु खदेया लीय मूत्रे.	चंद्रवेध्यक मूत्रे.	गणिषिद्या सूत्रं.	मरणसमाधि मूत्रे.	देवंद्र स्तव सन्न वोग सतव सन्न
m 10	ეი ტ ო∙	5 N	m or	9 %	V 20	0 0

D es 6	8	तीथोंडार सूत्र १५०० अंगवि या ९००० ये भाष्ट्र के अंतर भूतही है.	28026	ወወ2ጾኒ
0	0	मध्यमाबंड १ए००० द्वीयसागर् पन्नीत	र के स्व बिह्म प्रमुख्य हिंदी प्रमुख्य	129 o to 0 12 o
o	0	बसुदेश हि डिप्रथम खंड. ११०००	۵. ٥ ٥	0 0 m
0	0	सिद्ध माभूत सूत्र . १ २ ३ ६	٥	o
0	0	ज्योतिस्क करंड सूत्र. १८५०	Þ	o
> m ~	225	र्हाष्याषित सूत्र. ७००	000	6 6 6
गहावार सत्रं	1 - 1		नंदि सम् सम्	अनुपोगद्वार सूत्रै•
0 m			30 30 30	٣ ٢

त्र. ७५—श्री देवर्द्धिगणि क्रमाश्रमणर्से पहिलां जैन मतका कोइ पुस्तक लिखा हुआ याके नदी.

ज.—श्रंगोपांगादि शास्त्रतो लिखे हुए नही मालुम होतेहै, परंतु कितनेक अतिशय अन्नत च-मत्कारी विद्याके पुस्तक और कितनीक आम्नायके पुस्तक लिखे हुए मालुम होतेहै, क्योंकि विक्रमा-दित्यके समयमें श्री सिद्धेंसन दिवाकर नामा जै-नाचार्य हुअ।है, तिनौनें चित्रकुटके किल्लेमं एक जैन मंदिरमें एक बमान्नारी एक पथरका बीचमे पोलामवाला स्तंज्ञ देखा, तिसमे श्री सिद्धसेनसें पहिले होगए कितनेक पूर्वधर आचार्योने विद्या-योंके कितनेक पुस्तक स्थापन करेथे, तिस स्तंज्ञ-का ढांकणा ऐसी किसी ऊपधीके बेपसे बंद करा था कि सर्व स्तंत्र एक सरीखा मालुम पमताथा; तिस स्तंज्ञका ढांकणा श्री सिद्धसेन दिवाकरकों मालुम पना, तिनोंने किसीक औषधीका लेप करा तिससें स्तंत्रका ढांकणा खुल गया. जब पुस्तक देखनेकों एक निकाया तिसका एक पत्र वांच्या,

तिसके ऊपर दो विद्या लिखी हुइधी. एक सुवर्ण सिद्धी १ दूसरी परचक्र सैन्य निवारणी १ इन दो-नो विद्यायोंके बांचे पीठे जब आगे बांचने खंगे तब तिन विद्यायोंके अधिष्ठाता देवताने श्री सिड्सेन कों कहा कि आगे मत वांचो, तुमारे नाग्यमें य दोही विद्यादै । तब श्रो सिद्धसेन दिवाकरजीने स्तंज्ञका मुख बंद करा वो एक पुस्तक अपने पास रखा, पोंडे तिस पुस्तककों उज्जयन नगरीके श्री आवंती पार्श्वनायजीके मंदिरमे गुप्तपणे कही रख दीया. पाछे वो पुस्तक श्री जिनक्तसूरिजी महा-राज जो विक्रम संवत् १२०४ मे थे तिनकों तिस मंदिरमेंसे मिला. अब वोदी पुस्तक जैसलमेरके श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजीके मंदिरमे बमे यत्न-सें रखा हुआहें, ऐसा हमने सुनाहें. और चित्र-कुटका स्तंत्र जूमिमें गरक हो गया, यह कथन कितनेक पद्दावित प्रमुख यंथोंमें लिखा हुआहै. इस वास्ते श्री देवर्द्धिंगणि क्तमाश्रमणसे पहिलां न्नी कितनेक पुस्तक दिखे हुए माद्यम होतेहैं।

प. ७६-श्री महावीरजोके समयमें कि-

तने राजे श्री महावीरके ज्ञक्त थे.

ज---राजगृहका राजे श्रेणिक जिसका दूसरा नाम जंजसार था, १ चंपाका राजा जंज सारका पुत्र अशोकचंड जिसका नाम कोणिक प्रसिद्ध षा, २ वैशाखिनगरीका राजा चेटक, ३ काशी देशके नव मिद्धिक जातिके राजे श्रौर कोशस देशके नव सोज्ञिक जातिके राजे २१ पु-वासपुरका विजयनामा राजा १२ अमवकख्पा नगरीका स्वेतनामा राजा, १३ वीतन्नय पहनका **उ**दायन राजा २४, कोशांबीका उदायन वस्त-राजा, १५, कत्रियकुंम याम नगरका नंदिवर्छन राजा, १६ नक्कयनका चंदप्रयोत राजा, १७ हि-मालय पर्वतके उत्तर तर्फ पृष्टचंपाके शाल महा-**ज्ञाल** दो जाइ राजे १८ पोतनपुरका प्रसन्नचंड राजा, १ए हस्तिशीर्ष नगरका ब्राइनशत्रु राजा, ३० क्रवज्ञपुरका धनावह नामा राजा, ३१ वीर-पुर नगरका वीरकश्न मित्र नामा राजा, ३१ वि-जयपुरका वासवदत्त राजा, ३३ सोगंधिक नग-रोका अप्रतिहत नामा राजा, ३४ कनकपुरका प्रियचं इ राजा, ३५ महापुरका बलनामा राजा, ३६ सुघोस नगरका अर्जुन राजा, ३७ चंपाका दत्त राजा, ३८ साकेतपुरका मित्रनंदी राजा ३ए ६-त्यादि अन्यन्ती कितनेक राजे श्री महावीरके जक थे, येह सर्व राजायोंके नाम अंगोपांग शास्त्रोंमें लिखे हुएहै.

प्र. ७७-जो जो नाम तुमने महावोर ज्ञ-गवंतके जक्त राजायोंके लिखेहै, बोधमतके ज्ञा-स्त्रोमें तिनहो सर्व राजायोंकों बौद्धमित लिखाहै, तिसका क्या कारणहै

उ.-जितने राजे श्रीमहावीर जगवंतके जक्त थे, तिन सर्वकों बौधशास्त्रोंमें बौधमित श्रर्थात् बुधके जक्त निह दिखेहैं, परंतु कितनेक राजा-योंका नाम दिखाहै, तिसका कारणतो ऐसा मा-खुम होताहैकि पहिलें तिन राजायोंने बुधका उ-पदेश सुनके बुधके मतकों माना होवेगा, पीबे श्रीमहावीर जगवंतका उपदेश सुनके जैनधर्ममें श्राये मालुम होते हैं, क्योंकि श्रोमहावोर जग-वंतसें १६ वर्ष पहिलें गोतम बुधने काल करा, श्रर्थात् गौतम बुधके मरण पीछे श्रीमहावीर-स्वामी १६ वर्ष तक केवलङ्गानी विचरे थे तिनके उपदेशसें कितनेक बौद्ध राजायोंने जैन धर्म श्रं-गीकार करा, इस वास्ते कितनेक राजायोंका नाम दोनो मतोमें लिखा मालुम होताहै.

प्र. ७८-क्या महावीर स्वामीसे पहिलां जरतखंनमें जैनधर्म नही था ?

उ.-श्रीमहावीर स्वामीसे पहिलां जरत-खंनमें जेनधर्म बहुत कालसें चला आता था, जिस समयमें गौतम बुधने बुध होनेका दावा करा, श्रोर श्रपना धर्म चलाया था, तिस समयमें श्री पार्श्वन य २३ मे तीर्थकरका ज्ञासन चला था, तिनकें केशी कुमार नामें ब्राचार्य पांचसो ए०० साधुयोंके साथ विचरते थे, और केशो कु-मारजी गृहवासमें जज्जियिनिका राजा जयसेन श्रोर तिसकी पट्टराणी अनंगसुंदरी नामा तिनके पुत्र थे, विदेशि नामा आचार्यके पास कुमार ब्र-ह्मचारीने दीका लीनो, इस वास्ते केशी कुमार कहे जातेहैं, श्री पार्श्वनायके बने शिष्य श्री शु-

जदत्तजी गणघर १ तिनके पट्ट ऊपर श्री हरिद-नाचार्य २, तिनके पह ऊपर श्री श्रार्यसमुइ ३, तिनके पष्ट ऊपर श्री केशी कुमारजी हुए है, जिनोंने स्वेतंबिका नगरीका नास्तिकमति प्रदेशी नामा राजेकों प्रतिबोधके जैनधर्मी करा, श्रौर श्रीमहावीरजीके बने शिष्य इंइजूति गौतमके साथ श्रावस्ति नगरोमें श्री केशी कुमार मिले तहां गोतम स्वामीके साथ प्रश्नोत्तर करके ज्ञि-ष्योंका संशय दूर करके श्री महावीरका शासन श्रंगीकार करा तथा श्रोपार्श्वनायजीके संतानो-मेंसे कालिक पुत्र १ मैथि।ल १ ग्रानंदरिकत ३ काइयप ४ ये नामके चार स्थिविर पांचसी सा-घुयोंके साथ तुंगिका नगरीमें आये तिस समयमें श्री महावीर जगवंत इंड्जूति गौतमादि साधु-योंके साथ राजगृह नगरमें विराजमान थे, तथा साकेतपुरका चंड्पाल राजा तिसकी कलासवेदया नामा राणी तिनका पुत्र कलासवैशिक नामे ति-सने श्री पार्श्वनाथके संतानीये श्रीस्वयंप्रजाचा-र्यके शिष्य वैकुंगचार्यके पास दीक्ता लीनी. पींगे

राजगृहनगरमें श्रीमहावीरके स्वविरोसें चर्चा क-रके श्रो महावीरका शासन श्रंगीकार करा. इसी तरे पार्श्वसंतानीये गंगेय सुनि तथा उदकपेमाल पुत्र मुनिने श्रीमदावीरका शासन श्रंगीकार करा. इन पुर्वोक्त आचार्योंके समयमे वैशाखि नगरीका राजा चेटकादि और क्रियकुंमनगरके न्यातवंशी काइयप गोत्री सिद्धार्थ राजादि श्रावक थे, श्रीर त्रिसलादि श्राविकायो थी. बुधधर्मके पुस्तकमें विशावि नगरीके राजाकों बुध के समयमें पा-षंग धर्मके मानने वाला अर्थात् जैनधर्मके मानने वाला लिखाहै, और बुधधर्मके पुस्तकमें ऐसाजी लिखाहैकि एक जैनधर्मी बमे पुरुषकों बुधने अ-पने जपदेशसें बौद्ध धर्मी करा, इस वास्ते श्रीम-हावीरसें पद्धितां जैनधर्म जरतषंममें श्रीपार्श्वना-षके शासनसें चलता था.

प. ७ए-श्रीमहावीरजीसे पहिले तेवीसमें तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजी हुए हैं. इस कथनमें क्या प्रमाण है.

उ.-श्रीपार्श्वनायजीसें लेके आजपर्यंत श्रो

पार्श्वनाथकी पट्ट परंपरायमें उ३ तैरासी आचार्य हुए है. तिनमेंसें सर्वसें पिछला सिद्ध सूरि नामें आचार्य सांप्रति कालमें मारवाममें विचरेहै, ह-मने अपनी आंखोसं देखाहे, जिसकी पट्टाविल आज पर्यत विद्यमान है, तिस पार्श्वनाथजीके होनेमे यही प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाण बलवंतहै.

प. ८०-कौन जाने किसी धूर्त्तनें अपनी क-ढपनासें श्रीपार्श्वनाथ और तिनकी पट परंपराय जिख दीनी होवेगी, इससे इमकों क्योंकर श्री पार्श्वनाथ हुए निश्चित होवें ?

उ.—जिन जिन आचार्यों के नाम श्रीपार्श्व-नाथजी में लेके आज तक लिखे हुए है, तिनो में सें कितनेक आचार्यों ने जो जो काम करे है वे प्रत्यक देखने में आते हैं जैसें श्री पार्श्वनायजी में उद्दे ६ पष्ट ऊपर श्री रत्नप्रस सूरिजी ने वीरात् ७० वर्ष पीठे उपकेश पहमें श्री महावीर स्वामीकी प्र-तिष्टा करी सो मंदिर और प्रतिमा आज तक विद्यमान हैं, तथा अयरणपुरकी ठावनी सें ६ को-सके लगन्मा कोरंटनामा नगर उक्कम पमा है, जिस जगो कोरटा नामें आजके कालमें गाम व-सता है. तहांन्नी श्रोमहावीरजीकी प्रतिमा मंदि-रकी श्रीरत्नप्रज सूरिजीकी प्रतिष्टा करी हुइ अब विद्यमान कालमें सो मंदिर खन है, तथा उस-वाल और श्रीमालि जो बिएये लोकोंमें श्रावक ज्ञाति प्रसिद्ध है, वेजी प्रथम श्रीरत्नप्रज्ञ सूरिजो-नेही स्थापन करीहै, तथा श्रीपार्श्वनायजीसें १७, सत्तरमें पष्ट ऊपर श्री यक्तदेव सूरि हुए है, वो-रात् ५७५ वर्षे जिनोनें बारा वर्षीय कालमें वज्र-स्वामीके शिष्य वज्रसेनके परलोक हुए पीं ति-नके चार मुख्य शिष्य जिनकों वज्रसेनजीने सोपारक पट्टणमें दीका दीनी थी, तिनके नामसे चार ज्ञाखा तथा कुल स्थापन करे, वे यहैं; ना-र्गेंड १, चंड १, निवृत्त ३ विद्याघर ४ यह चारों कुल जैन मतमें प्रसिद्धेः; तिनमेंसें नागेंद्र कुलमें उद्यप्रज मिल्लिषेणसूरि प्रमुख और चंड्कुलमें बम गन्न, तप गन्न, खरतर गन्न, पूर्णवद्धीय गन्न, देवचंद्रसूरि कुमारपालका प्रतिबोधक श्रीहेमचंड्-सूरि प्रमुख आचार्य हुए है. तथा निवृत्तकुलमें श्रो

शीलांकाचार्य श्रीड़ोणसूरि प्रमुख ब्राचार्य हुए है. तथा विद्याधरकुलमें १४४४ ग्रंथका कर्ना श्रीहरि-नद्रसूरि प्रमुखाचार्य हुए है, तथा मैं इसग्रंथका विखनेवाला चंड्कुलमें हुं; तथा पैंतीसमें पष्ट ज-पर श्रीदेवगुप्तसूरिजी हुए है. जिनोंके समीपेश्री देवर्दिंगणि कमाश्रमणजीने पूर्व २ दो पढे थे, तथा श्री पार्श्वनायजीके ध३ मे पट्ट ऊपर श्री क-सृरि पंच प्रमाण यंथके कर्ता हुएहै, सो यंथ वि-द्यमानहै तथा ४४ मे पष्ट ऊपर श्रोदेवगुतसूरिजी विक्रमात् १०७२ वर्षे नवपद प्रकरणके करता हुए है, सोजी प्रंथ विद्यमानहै; तथा श्रीमदावीरजीकी परंपराय वाले आचायोंने अपने बनाए कितनेक **यंथोमें प्रगट लिखाहैकि, जो उपके**श गञ्जहें सो पट परंपरायसें श्रोपार्श्वनाथ १३ तेवीसमें तीर्थ-करसें अविश्वित्र चला आताहै; जब जिन आचा-योंकी प्रतिमा मंदिरकी प्रतिष्टा करी हुइ और प्रंथ रचे हुए विद्यमान है तो फेर तिनके होनेमं जो पुरुष शंसय करताहै तिसकों अपने पिता, पितामह, प्रपितामह आदिकी वंशपरंपरायमेन्त्री

शंसय करनां चाहिये, जैसे क्या जाने मेरी सा-तमो पेमीका पुरुष आगें हुआहैके नही. इस त-रेंका जो संशय कोइ विवेक विकल करे तिसकीं सर्व बुद्धिमान् उन्मत्त कहेंगे. इसी तरें श्रीपार्श्व-नाथकी पष्ट परंपरायके विद्यमान जो पुरुष श्री पार्श्वनाथ १३ तेवीसमें तीर्थंकरके होनेमे नही करे अथवा संशय करे तिसकों जी प्रेक्तावंत पुरुष उन्मनोदी पंक्तिमे समऊते है, तथा धूर्न पुरुष जो काम करताहै सो अपने किसी संसारिक सु-खके वास्ते करता है. परंतु सर्व संसारिक इडिय जन्य सुखसे रहित केवल महा कष्ट रूप परंपराय नही चला सक्ताहै, इस वास्ते जैनधर्मका संप्र-दाय धूर्तका चलया हुआ नही, किंतु अष्टादश दू-षण रहित अर्हेतका चलाया हुआहै.

प्र. 6? कितनेक यूरोपी अन पंक्ति प्रोफे-सर ए. वेबर साहिबादि मनमे ऐसी कल्पना क-रतेहैं कि जेन मतकी रीती बुध धर्मके पुस्तकों के अनुसारे खनी करीहै, प्रोफेसर वेबर ऐसंज्ञी मा-नतेहैं कि, बौध धर्मके कितने साधु बुधकों नाक- बूल करके बुधके एक प्रतिपक्षीके अर्थात् महा-वीरके शिष्यवनें और एक वार्ता नवीन जोमके जैनमत नामे मत खमा करा, इस कथनकों आप सत्य मानते होके नहीं?

ऊ.-इस कथनकों हम सत्य नहीं मानते है; क्यों कि प्रोफेसर जेकोबीने ब्राचारंग ब्रीर क-ल्पसूत्रके अपने करे हुए इंग्लीश जाषांतरकी छ-पयोगी प्रस्तावनामें प्रोफसर ए. वेबर श्रोर मी० ए. वार्थकी पूर्वोक्त कख्पनाकों जूठी दिखाइहै; **ब्रोर प्रोफेसर जेकोबीने यह सिद्धांत ब्रांतमे** बता-याहै कि जैनमतके प्रतिपद्घीयोंनं जैन मतके सिद्धांत शास्त्रों ऊपर जरोंसा रखनां चाहिये, कि इनमें जो कथनहै सो मानने लायकहै. विशेष देखनां होवेतो माक्तर बूलरसाहिब कृत जैन दंत कयाकी सत्यता वास्ते एक पुस्तकका अंतर हि-स्ता जागहै, सो देख लेनां हमबी प्रपनी बुद्धिके ब्रनुसारे इस प्रश्नका उत्तर लिखते है. इम जपर जैनमतकी व्यवस्था श्रीपार्श्वनायजीसे लेके आज तक लिख ब्राएहे, तिसंसे प्रोफेसर ए. वेबरका

पूर्वोक्त अनुमान सन्य नही सिद्ध होताहै. जेकर कदाचित् बौध मतके मूल पिडग यंथोमें ऐसा बेंख विखा हुआ होवेकि, बुधके कितनेक शिष्य बुधकों नाकबूल करके बुधके प्रतिपद्धी निर्प्रयोके सिरदार न्यात पुत्रके शिष्य बने; तिनोंने बुधके समान नवीन कटपना करके जैनमत चलायाहै. जेकर ऐसा खेख होवे तबतो हमकोबी जैनमत-की सत्यता विषे संशय जत्पन्न होवे, तबतो ह-मनी प्रोफेसर ए. वेबरके अनुभानकी तर्फ ध्यान देवें; परंतु एसा लेख जुठा बुधके पुस्तकोंमे नहीं है क्योंकि बुधके समयमे श्रीपार्श्वनायजीके हजारी साधु विद्यमानथे तिनके होते हुए ऐसा पुर्वोक्त लेख केसें लिखा जावे, बलके जैन पुस्तकोंमेंतो बुधकी बाबत बहुत लेखहै श्रीब्राचारंगकी टीकामें ऐसा लेखहें. मौर्जालस्वातिपुत्राज्यां शोद्भौदानं ध्वजीरुत्य प्रकाशितः अस्यार्थे॥ माजलिपुत्र अ-र्थात् मौजलायन और स्वातिपुत्र अर्थात् सारीपुत्र दोनोंने श्रुद्धौदनके पुत्रकों ध्वजीकृत्य अर्थात् ध्वजा-की तरें सर्व मताध्यक्तोंसें ग्रधिक जंचा सर्वोत्तम रूप

करकें प्रकाइयाहै. श्राचारंगके लेख लिखनेवालेका यह अजिप्रायहै कि श्रुहोदनका पुत्र सर्वेज्ञ अ-तिहायमान् पुरुष नही था, परंतु इन दोनों शिष्योनें अपनी कल्पनासें सर्वसें उत्तम प्रकाशित करा, इस वास्ते बौद्धमत स्वरूचिसें बनायाहै; तथा श्री **ब्राचारंगजीकी टीकांमें एक देख ऐसानी दिखा** है, तज्ञनिकोपासकोनेंदबलात्, बुद्धोत्पत्ति कथा-नकात् देषमुपगन्नेत्. अर्थ वुधका जपासक आ-नंद तिसकी बुद्धिके बलसें बुधकी उत्पत्ति हूइहै, जेकर यह कथा सत्यसत्य पर्वदामें कथन करोये तो बौद्धमतके मानने वालोंकों सुनके इव उत्पन्न होवे, इस वास्ते जिस कथाके सुननेसें श्रोताकों द्वेष जत्पन होवे तेसी कथा जैनमुनि परिषदामें न कथन करे, इस लेखसें यह आशय हैकि बुधकी जत्पतिरूप सञ्ची कथा बुधकी सर्व-क्रता और अति उत्तमता और सत्यता और ति-सकी किंदपत कथाकी विरोधनीहै, नहीतो तिसके जक्तों कें देष क्यों कर जल्पन्न होवे, इस वास्ते जैन मत इस अवसर्पिणिमे श्री रूपन्नदेवजीसे

लेकर श्रीमहावीर पर्यंत चौवीस तीर्धकरोंका च-लाया हुआ चलताहै परंतु किल्यत नहीहै.

प्र. ए१-बुद्धकी जत्पतिकी कथा आपने किसी स्वेतांबरमतके पुस्तकोमें बांचोहै ?

ज.-स्वेतांबरमतके पुस्तकोमेंतो जितना बुधकी बाबत कथन इमने श्री ग्राचारंगजीकी टीकामें देखा बांचाहें तितनाता हमने ऊपरके प्र-श्रमें लिख दीयाहै, परंतु जैनमतकी इसरी शाखा जो दिगंबरमतकी है तिसमे एक देवसेनाचार्यने अपने रचे हुए दर्शनसार नामक यंथमे बुधकी **उ**त्पत्ति इस[े] रीतीसें लिखीहें. गाथा ॥ सिरिपा-सणाह तित्थे ॥ सरक तोरे पदासणयर त्थे ॥ पिहि ग्रासवस्स सीहे ॥ महा दुदो बुड़िकिति मुणी ॥१॥ तिमिपूरणासणेया ॥ अदिगयपवज्जा-वऊपरमञ्जे।। रत्तंबरंघरिना ॥ पवहियतेणएयत्तं ॥ श। मंसस्सनित्यजीवो जहापतेदहियबद्धसक-राए ॥ तम्हातंमुणित्ता जरकंतोणित्यपाविद्यो॥३॥ मक्रंणवक्रिणिक्कं ॥ दव्वदवंजहजलंतइएदं ॥ इति बोएघोसिता पवत्तियंसंघसावकं ॥४॥ असोकरे

दिकम्मं ॥ असोतंत्रुं जदीदिसिद्धंतं ॥ परिकव्पिक-षाणूणं ॥ वितकिचाणिरयमुववासा ॥५॥ इति इ-नकी जाषा अय बोइमतकी उत्पति लिखते है. श्री पार्श्वनाथके तीर्थमें सरयू नदीके कांठे ऊपर पलासनामे नगरमें रहा हुआ, पिहिताश्रव नामा मुनिका शिष्य बुद्धकीर्ति जिसका नाम था, ए-कदा समय सरयू नदीमें बहुत पानीका पूर चढि आया तिस नदीके प्रयाइमें अनेक मरे हुए मछ वहते हुए कांगे ऊपर आ लगे, तिनको देखके तिस बुद्की तिने अपने मनमें ऐसा निश्चय क-राकि स्वतः अपने आप जो जीव मर जावे ति-सके मांस खानेमे क्या पापहे, तब तिसने श्रंगी-कार करी हुइ प्रवज्ञावत रूप ग्रेम दीनी, अर्थात् पूर्वे अंगीकार करे हुए धर्मसें भ्रष्ट होके मांस जक्ण करा. और लोकोंके आगे ऐसा अनुमान कथन कराकी मांसमें जीव नहों है, इस वास्ते इसके खानेमें पाप नही लगताहै. फल, दुघ, दि तरें तथा मदोरा पोनेमेंन्नो पाप नहीहै. ढीला इव्य हानेसें जलवत्. इस तरेंकी प्ररूपणा करके

तिसने वौदमत चलाया, और यहन्नो कथन करा के सर्व पदार्थ काणिकहै, इस वास्ते पाप पुन्यका कर्ता अन्यहै, और जोका अन्यहै. यह सिद्धांत कथन करा बौडमतके पुस्तकोमें ऐसाजी वेखहै कि, बुधका एक देवदत्तनामा शिष्य था, तिसने वुषके साथ बुधकों मांस खाना बुमानेके वास्ते बहुत जगमा करा, तोन्नी शाक्यमुनि बुधनें मांस खाना न बोमा, तब देवदत्तने बुधकों बोम दीया, ऊब बुधने काल करा था, तिस दिनन्नी चंदनामा सोनीके घरसें चावलोंके बीच सूयरका मांस रांघा हुआ खाके मरणको प्राप्त हुआ, यह कथनन्त्री बु-धमतके पुस्तकोंमें है; श्रोर स्वेतांबराचार्य साढे-तीन करोम नवीन श्लोकोंका कर्ना श्रो हेमचंइ-सूरिजीने अपने रचे हुए योगशास्त्रके दूसरे प्रका-शकी वृत्तिमें यह श्लोक लिखाहै। स्वजन्मकाल एवात्म, जनन्युदरदारिणः मांसोपदेशदातुश्च, क-थंशोद्घोदनेर्दया ॥११॥ अर्घ । अपने जन्म कालमें ही अपनी माता मायाका जिसनें उदर विदारण करा, तिसके, और मांस खानेके उपदेशके देने-

वाले शुक्रोदनके पुत्रके दया कहांसे थो, अपितु नही थी. इस ऊपरके श्लोकर्से यह आशय निक-तताहै कि जब बुध गर्जमें था, तव तिसके सब-बर्से इसकी माताका जदर फट गयाथा, अथवा **उदर विदारके इसकों गर्जमेंसें निकाला होवेगा.** चाहो कोइ निमित्त मिला होवे, परंतु इनकी माता इनके जन्म देनेसें तत्काल मरगइ थी. तत्काल मरणांतो इनको माताका बुद्ध धर्मके पुस्तकोमेंन्नी विखाहे. और बुद्ध मांसादार गृहस्थाबस्थामेंन्नी करता होवेगा, नहीतो मरणांत तकन्नी मांसके खानेसे इसका चित्त तृप्तही न हुआ ऐसा बौद्धम-तके पुस्तकोंसेंही सिद्ध होताहै. इस वास्तेही बो-इमतके साधु मांस खानेमे घृणा नही करतेहै, और बेखटके आज तक मांस जक्तण करे जाते है; परंतु कच्चे मांसमें अनागनत कृमि समान जीव उत्पन्न दोतहै, वे जीव बुधकों अपने ज्ञानसें नही दीखेहै; इस वास्तेही बुध मतके जपासक गृहस्य लोक अनेक रुमि संयुक्त मांसकों रांधतेहैं और खाते है. इस मतमें मांस खानेका निषेध नहीहै,

इस वास्तेही मांसाहारो देशों में यह मत चलताहै.

त्र. ए३ — श्रीमहावीर जी वदास्व कितने काल तकरहे और केवली कितने वर्ष रहे ?

ज.-बारां वर्ष १२ व ६ मास १५ पंदरा दिन बद्मस्य रहे, श्रोर तीस वर्ष केवली रहेहै.

प. 08-जगवंतने उद्मस्थावस्थामें किस किस जगे चौमासे करे, और केवली हुए पीडे किस किस जगे चौमासे करे थे ?

ठ.-अस्थि प्राममें १, दूसरा राजगृहमें, २, तोसरा चपामे ३, चौथा पृष्ट चंपामें ४, पां-चमा जािंकामे ५, बद्दा जिंकामें ६, सातमा आलंजियामे ७, आवमा राजगृहमे ७, नवमा अ-नार्यदेशमे ए, दशमा सावित्वमे १०, इग्यारमा विशालामे ११, बारमा चंपामे १२, येह १२ बद्ध-स्थावस्थाके चौमासे करे केवली हुए पीबे १२ राजगृहमें ११ विशालामें ६ मिथलामें १ पावापु-रीमें एवं सर्व ३० हुए

त्र. ए५-श्रीभहावीरस्वामीका निर्वाण किस जगें और कब हुआ था? ग्रानापुरी नगरोके हस्तिपाल राजाकी दफतर लिखनेकी सन्नामें निर्वाण हुआया, और विक्रमसें ४९० वर्ष पहिलें और संप्रति कालके १ए४एके सालसें २४१एवर्ष पहिलें निर्वाण हुआया.

प्र. ए६—जिस दिन जगवंतका निर्वासा हुआ या सो कौनसा दिन वा रात्रियी?

उ.-न्नगवंतका निर्वाण कार्त्तिक विद अमा-वस्याकी रात्रिके अंतमें हुआथा.

प. 09—तिस दिन रात्रिकी यादगीरी वा-स्ते कोइ पर्व हिंदुस्थानमे चलताहै वा नही ?

उ —िहंड लोकमें जो दिवालीका पर्व चल-तादें, सो श्रो महावीरके निर्वाणके निमत्तसेंदी चलताहें.

प. ८८-दिवालिकी जलात्ति श्री महावीरके निर्वाणसे किसतरें प्रचालित हुइदें ?

ज.-जिस रात्रिमें श्रोमहावीरका निर्वाण हुआ था, निस रात्रिमें नव मिद्धिक जातिके राजे और नव बेडको जातिके राजे जो चेटक महा-राजाके सामंत थे, तिनोन तहां जपवास रूप पोषध करा था, जब जगवंतका निर्वाण हुआ, तब तिन अगरहही राजायोंने कहाकि इस जरतखंनसें जान उद्योत तो गया, तिसकी नकखरूप हम इव्यो द्योत करेंगे, तब तिन राजायोंनें
दीपक करे, तिस दिनसें खेठर यह दीपोत्सव प्रवृत्त हुआ है. यह कथन कल्पसूत्रके मूल पाउमें
है जो अन्य मत वाले दिवालीका निमित्त कथन करतेहें, सो कल्पितहैं क्योंकि किति मतके
जी मुख्य शास्त्रमें इस पर्वको उत्पत्तिका कथन नहीहै.

त्र. ७ए-ज्ञगवंतके निर्वाण होनेके समयमें शक्रइंद्रे आयु वधावनेके वास्ते क्या विनती करी धी, और ज्ञगवंत श्री महावीरजीयें क्या छ-त्तर दीनाथा?

ज.—शक्र इंच् विनती करीथी के, हे स्वामि एक क्षणमात्र अपना आयु तुम वधायो, क्योंकि तुमारे एक क्षणमात्र अधिक जीवनेसं तुमारे जनम नक्तत्रोपरि जस्म राशिनामा तीस ३० मा ग्रह आया है, सो तुमारे शासनकों पीका नहीं दे सकेगा, तब जगवंतने ऐसे कहाके हे इंड, यह पीं कदेइ हूआ नहीं, और होवेगाजी नहीं कि कोई आयु वधा सके; और जो मेरे झासनकों पीमा होवेगी सो अवइय होनहार है, कदापि नहीं टलेगी.

प. ए०-तबतो कोइजी देह घारी आयु नही वधा सक्ताहे यह सिद्ध हुआ ?

उ.-हां, कोइन्नो क्रणमात्र आयु अधिक नही वधा सक्ता है.

प्र. ए१-कितनेक मतावलंबी कहतेहैं कि योगाभ्यासादिके करनेसें आयु वध जाताहै, यह कथन सत्यहें वा नहीं ?

ज.—यह निकेवल अपनी महत्वता वधाने वास्ते लोकों गप्पे ठोकतेहैं, क्योंकि चौवीस ती-धंकर ब्रह्मा, विष्नु, महेशा, पातंजली, व्यास, ई-शामसींद, महम्मद प्रमुख जे जगतमें मतचलाने वाले सामर्थ पुरुष गिने जातेहैं, वेन्नो आयु नहीं वधा सकेहैं, तो फेर सामान्य जीवोंमें तो क्या शक्तिहै के आयु वधा सके; जेकर किसीने वधाइ होवे तो अब तक जीता क्यों नही रहा.

त्र. ए१-जगवंतका जाइ नंदिवर्डन, श्रोर जगवंतकी संसारावस्थाकी यशोदा स्त्री श्रोर जग-वंतकी बेटी त्रियदर्शना, श्रोर जगवंतका जमाइ जमाखी, इनका क्या वर्त्तत हुआ था?

ठ.-नंदीवर्द्धन राजातो श्रावक धर्म पा-खता रहा, और यशोदानी श्राविका तो थी, प-रंतु यशोदाने दोक्ता लीनी मैने किसी शास्त्रमें नही बांचाहै. और नगवंतको पुत्रीने एक हजार स्त्रीयोंके साथ और जमाइ जमाखिने ए०० पां-चसो पुरुषोंके साथ नगवंत श्री महावीरजीके पास दीका लीनीथी.

त्र. ९३-श्रीमहावीर जगवंतने जो अंतमें सोवां पोहर तक देशना दीनीयो, तिसमे क्या क्या उपदेश कराया ?

5.—जगवंतने सर्वसें श्रंतकी देशनामें एए पचपन श्रशुज कमोंके जैसें जीव जवांतरमें फख जोगतेहै, ऐसे श्रध्ययन श्रीर पचपन ५५ शुज कमोंके जैसें भवांतरमें जीव फख जोगतेहें, ऐसे अध्ययन और उत्तीस ३६ विना पूज्यां प्रश्नोके उत्तर कथन करके पींचे ५५, पचपन शुन्न वि-पाक फल नामें अध्ययनोंमेंसें एक प्रधान नामें अध्ययन कथन करते हुए निर्वाण प्राप्त हुए थे. यह कथन संदेह विषोषधी नामें ताम पत्रोपर लिखी हुइ पुरानी कल्पसूत्रकी टीकामे है. यह सर्वाध्ययन श्री सुधर्मस्वामोजीने सूत्रहूप गूंथे होवेंगे के नहीं, ऐसा लेख मेरे देखनेमें किसी इास्त्रमें नहीं आया है.

प्र. ए४-जैनमतमे यह जो रूढिसें कित-नेक लोक कहते हैं कि श्री उत्तराध्ययनजीके ब-तीस अध्ययन दिवालीकी रात्रिमें कथन करके ३७ सैंतीसमा अध्ययन कथन करते हुएमोक्तगये, यह कथन सत्य है, वा नहीं ?

ज.-यह कथन सत्य नहीं, क्योंकि कल्पः सूत्रकी मूल टीकासें विरुद्धहें, और श्री जड़बा-हुस्वामीने जत्तराध्ययनकी निर्युक्तिमें ऐसा कथन कराहे कि जत्तराध्ययनका दूसरा परीषहाध्ययनतों कर्मप्रवाद पूर्वके १७ सत्तरमें पाहुमसें जहार क रके रचाहै, और आठमाध्ययन श्री किपल केव-लीन रचाहै, और दशमाध्ययन जब गौतमस्वामी अष्टापदसें पीछे आएहै, तब जगवंतने गौतमको धीर्य देने वास्ते चंपानगरीमें कथन करा था, और १३ मा अध्ययन केशोगौतमके प्रश्नोत्तर रूप सि-थवरोने रचाहै. कितने अध्ययन प्रत्येकबुद्धि मु-नियोके रचे हुएहैं. और कितनेक जिन जाषित है. इस वास्ते उत्तराध्ययन दिवालीकी रात्रिमे क-धन करासिद्ध नहीं होताहै.

प. ए५-निर्वाण इाब्दका क्या अर्थ है ?

ज.-सर्व कर्म जन्य जपाधि रूप अग्निका जो बुऊ जाना तिसकों निर्वाण कहते हैं, अर्थात् सर्वोपाधिसें रहित केवल, श्रुद्ध, बुद्ध सिच्चदानंद रूप जो आत्माका स्वरूप प्रगट होना, तिसकों नि-वाण कहते हैं.

प्र. ए६-जीवकों निर्वाण पद कद प्राप्त होताहें ?

उ. जब शुजाशुज सर्व कर्म जीवके नष्ठ हो जातेहै तब जीवको निर्वाणपद प्राप्त होताहै. प. ए७—निर्वाण हूआ पीवे आत्मा कहा जाता है, और कहां रहताहै ?

छ.−निर्वाण हुआ पीछे आत्मा लोकके अय जागमे जाताहै, और सादिअनंत काल तक सदा तहांहो रहताहै.

प. एए-कर्म रहित आत्माकों लोकाय्रमें कौन ले जाताहै?

उ.-श्रात्मामें उर्दशमन स्वन्नावहै, तिससें श्रात्मा खोकाय तक जाताहै.

प्र. एए-श्रात्मा लोकाग्रसें श्रागे क्यों नहीं जाताहै ?

ज.-आत्मामे जर्झ्गमन स्वज्ञाव तो है, प-रंतु चलनेमे गित साहायक धर्मास्तिकाय लोका-प्रसें थ्रागे नहींहै, इस वास्ते नहीं जाताहै. जिसें मजमे तरनेकी शक्तितों है, परंतु जल विना नहीं तरसक्ताहै, तेसें मुक्तात्माजी जानना.

प्र. १००-सर्व जीव किसी कालमें निर्वाण पद पावेंगे के नही ?

ਰ.–सर्व जीव निर्वाण पद किसी कालमें

न्नी नही पावेंगे.

प्र. १०१-क्या सर्व जीव एक सरीखे नहीं है, जिससें सर्व जीव निर्वाश पद नही पावेगें.

5.—जीव दो तरे के हैं; एक जन्य जीवहें १, दुसरे अजन्य जीवहें; तिनमें जो अजन्य जीव होवेतो कदेंज्ञो निर्वाण पदकों प्राप्त नहीं होवेगं, क्योंकि तिनमें अनादि स्वजावसेंदी निर्वाण पद प्राप्त होनेकी योग्यताही नहीं हैं; और जो जन्य जीवहें तिनमें निर्वाणपद पावनेको योग्यता तो है, परंतु जिस जिसकों निर्वाण होनेके निमित्त मिलेंगे वे निर्वाणपद पावेंगे, अन्य नहीं.

प्र. १०१—सदा जीवांके मोक्त जानेसें किसी कालमें सर्व जीव मोक्तपद पावेंगे, तबतो संसा-रमें अज्ञव्य जीवही रह जावेंगे, और मोक्त मार्ग बंद हो जावेगा ?

ज्ञ-ज्ञव्य जीवांकी राशि सर्व आकाशके प्रदेशोंकी तरे अनंत तथा अनागत कालके सम-यकी तरें अनंतहैं, कितनाही काल व्यतीत होवे तोजी अनागत कालका अंत नही आताहै, इसो तरें सदा मोक्त जानेसें जीवजी खूटतें नहीहै. इस लोकमें निगोद जीवांके असंख्य द्वारोरहें, ए- केंक द्वारोरमें अनंत अनंत जीवहें; एक द्वारीरमें जितने अनंत अनंत जीवहें, तिनमेंसे अनंतमें जाग प्रमाण जीवअतीत कालमें मोक्तपद पायेहै, और तिनमेंसे अनंतमें जाग प्रमाण अनंत जीव अनागत कालमें मोक्त पद पावेंगे, इस वास्ते मोक्त मार्ग बंद नहीं होवेगा.

त्र. १०३-आत्मा अमरहेके नाशवंतहे ?

ज्-आत्मा सदा अविनाशो है, सर्वथा ना-शवंत नहीं हैं

प्र. १०४-आत्मा अमर है, अविनाशी है, इस कथनमें क्या प्रमाण है?

ज्ञ.—जिस वस्तुकी जल्पित होतीहै, सो नाशवंत होताहै, परंतु आत्माकी जल्पित नहीं हुइहै, क्योंकि जिस वस्तुकी जल्पित होतीहैं ति-सका जपादान अर्थात् जिसकी आत्मा बन जावे जैसें घमेका जपादान मिंडीका पिंम है, सो जपा-दान कारण कोइ अरूपी ज्ञानवंत वस्तु होनी चाहिये, जिससें आत्मा बने, ऐसा तो आत्मासें पहिलां कोइजी जपादान कारण नदीहै; इस वा-स्ते आत्मा अनादि अनंत अविनाशी वस्तु है.

प्र. १०५-जेकर कोइ ऐसे कहे आत्माका जपादान कारण ईश्वरहै, तबती तुम आत्माकों अनित्य मानोगेके नही.

ज.-जब ईश्वर ग्रात्माका जपादान कारण मानोगे, तबतो ईश्वर ग्रौर सर्व ग्रनंत संसारी ग्रात्मा एकही हो जावेगी, क्योंकि कार्य ग्रपणे जपादान कारणसें जिन्न नही होता है.

प. १०६-ईश्वर और सर्व संसारी आत्मा एकदी सिद्ध दोवेगेतो इसमे क्या दानि है ?

ज.-ईश्वर और सर्व संसारी आतमा एकही सिद्ध होवेगे तो नरक तिर्यचकी गतिमेन्नी ईश्व-रही जावेगा, और धर्मा धर्मनी सर्व ईश्वरही क-रनेवाला और चौर, यार, लुचा, लफंगा, अगम्य-गामी इत्यादि सर्व कामका कर्ना ईश्वरही सिद्ध होवेगा, तबतो वेदपुराण, बेबल, कुरान प्रमुख झास्त्रनो ईश्वरने अपनेही प्रतिबोध वास्ते रचे सिद्ध होवेंगे, तबतो ईश्वर अज्ञानी सिद्ध होवेगा. जब अज्ञानी सिद्ध हुआ तबतो तिसके रचे शा-स्त्रजी जूठे और निष्फल सिद्ध होवेगे, ऐसे जब सिद्ध होगा तबतो माता, बहिन, बेटीके गमन करनेकी शंका नही रहेगी, जिसके मनमें जो आवे सो पाप करेगा, क्योंके सर्व कुछ करने क-राने फल जोगने जुक्ताने वाला सर्व ईश्वरही है, ऐस माननेसे तो जगतमे नास्तिक मत खमा करना सिद्ध होवेगा.

प. १०७—जीवकों पुनर्जनम किस कारणसें करणा पमताहै ?

ज. — जीवहिंसा, १ जूठ बोलना, १ चौरी करनी, ३ मेथुन, स्त्रीसें जोगकरना, ४ परिप्रह रखना, ५ क्रोध १ मान १ माया ३ लोज ४ एवं ए राग १० देष ११ कलह १२ अञ्चाख्यान अ-र्थात् किसीकों कलंक देना १३ पैशुन १४ प-रकी निंदा करनी १५ रति अरति १६ माया मृषा १७ मिण्यादर्शन शस्त्र, अर्थात् कुदेव, कुगुरु, कु-धर्म, इन तीनोको सुदेव, सुगुरु, सुधर्म करके मानना १०, जब तक जीव येह अष्ठादश पाप सेवन करताहै, तब तक इसकों पुनर्जन्म दोताहै.

प्र. १००-जीवकों पुनर्जन्म बंद होनेका क्या रस्ताहे ?

5.—ऊपर लिखे हुए अष्टादश पापका त्याग करे, और पूर्व जन्मांतरोमें इन अष्टादश पापोंके सेवनेसे जो कर्मांका बंघ कराहै, तिसकों अर्ह-तकी आङ्गानुसार ङ्गान श्रद्धा जप तप करनेसें सर्वथा नाश करे तो फेर पुनर्जन्म नही होताहै.

पः १०ए—तीर्घंकर महाराजके प्रजावसें अ-पना कल्याण होवेगा, के अपनी आत्माके गुणाके प्रजावसें इमारा कल्याण होवेगा ?

ज.—अपनी आत्माका निज स्वरूप केवल ज्ञान दर्शनादि जब प्रगट दोवेगे, तिसके प्रजावसे हमारी तुमारी मोक्त दोवेगी

प्र. ११०—जेकर निज आत्माके गुणोंसे-मोक्त होवेगी, तबतो तीर्थंकर जगवंतकी जिक्त करनेका क्या प्रयोजन हैं?

ग्र.—तीर्थंकर जगवंतकी जिक्ति करनेंमं ती-

र्थंकर जगवंत निमित्त कारणहें. विना निमित्तके अपनी आत्माके गुणरूप जपादान कारण कदेइ फल नहीं देताहें. तोर्थंकर निमित्तजूत होवे तब जिल्हेप जपादान कारणप्रगट होताहें तिससेंही; आत्माके सर्व गुणप्रगट होतेहें, तिनसें मोक्ष होताहें. जैसे घट होनेमें मिट्टी जपादान कारनहें, परंतु विना कुलाल चक्र दंम चीवरादि निमित्तके कदापि घट नहीं होताहें, तैसेंही तीर्थंकर रूप निमित्त कारण विना आत्माकों मोक्ष नहीं होताहें, इस वास्ते तोर्थंकरकी जिल्हे अवस्य करने योग्यहें.

प्र. १११—जगतमें जीव पुन्य पाप करतेहैं तिनके फलका देनेवाला परमेश्वरहै वा नहीं ?

ज — पुन्य पापके फलका देनेवाला पर-मेश्वर नहीं है,

प्र. ११३ — पुन्य पापके फलका दाता ई-श्वर मानिये तो क्या दरज है?

न.-ईश्वर पुन्य पापका फल देवे तब तो ईश्वरकी ईश्वरताकों कलंक लगता है. प. ११४-क्या कलंक लगताहै ?

ज.-ग्रन्यायता, निर्देयता ग्रसमर्थता ग्र-ज्ञानतादि.

प्र. ११ए-अन्यायता दूषण ईश्वरकों पुन्य पापके फल देनेसें केसें लगताहै ?

उ. जब एक आदमीनें तलवारादिसें कि-सी पुरुषका मस्तक बेदा, तब मस्तकके बिदने-सें उस पुरुषकों जो महा पीमा जोगनी पमीहै, सो फल ईश्वरने दूसरे पुरुषके दाश्वसें उसका म-स्तक कटवाके भुक्ताया, तद पीछे तिस मारने वालेकों फांसी आदिकसें मरवाके तिसकों तिस शिर बेदन रूप अपराधका फल भुक्ताया, ईश्वर-नें पहिलां तिसका शिर कटवाया, पीछे तिसकों फांसी देके तिस शिर बेदनेका फल जुक्ताया; ऐसे काम करनेंसें ईश्वर अन्यायी सिद्ध दोताहै.

म, ११६--पुन्य पापके फल जुक्तानेसें ई-श्वरमें निर्दयता क्यों कर सिद्ध होतोहै:

उ.—जब ईश्वर कितने जोवांकों महा डु-खी करताहै, तब निर्देयो सिद्ध होताहै. शास्त्रां-

मेंतो ऐसें कहताहै किसी जीवकों मत मारना, डखोजी न करनां, भूखेकों देखके खानेकों देनां, और आप पूर्वोक्त काम नहीं करताहै, जीवांकों मारताहै, महा डखी करताहे. जूखसें खाखों क रोमा मनुष्य काखादिमें मर जातेहैं, तिनकों खा नेकों नहीं देताहें, इस वास्त निर्देशों सिद्ध हो-ताहै,

प. ११७-ईश्वरतो जिस जीवने जैसा जैसा पुन्य पाप कराहै तिसकों तैसा तैसा फल देता है. इसमे ईश्वरकों कुछ दोष नही लगताहै, जैसें राजा चौरकों दंम देताहै और अब्व काम करने वालेकों इनाम देताहै

उ.--राजातो सर्व चोराकों चोरी करनेसें बंद नही कर सकता है चादतातोहै कि मेरे राज्यमें चोरी न होवेतो ठीकहै, परंतु ईश्वरकों तो लोक सर्व सामर्थ्यवाला कहतेहै, तो फेर ई-श्वर सर्व जीवांकों नवीन पाप करनेसे क्यों नही मने करताहै, मने न करनेसें ईश्वर जान बूजके जीवोसें पाप करताहैं फेर तिसका दंम देके जी वोंकों ख्खी करताहैं. इस हेतुसेंही अन्यायी, नि-देयी, असमर्थ ईश्वर सिद्ध होताहै. इस वास्ते ईश्वर जगवंत किसीकों पुन्य पापका फल नही देताहैं. इस चर्चाका अधिक स्वरूप देखनां होवे तो हमारा रचा हुआ जैनतत्वादर्शनामा पुस्दक बांचनां.

म. ११७--जब ईश्वर पुन्य पापका फल नहो देताहै, तो फेर पुन्य पापका फल क्योंकर जीवांको मिलताहै ?

उ.--जब जीव पुन्य पाप करतेहैं तब ति-नके फल जोगनेके निमित्तजी साथही होनेबाले बनाता करताहै, तिन निमित्तो द्वारा जीव शु-जाशुज कर्मोका फल जोगतेहै, तिन निमित्तो-का नामही अज्ञ लोंकोने ईश्वर रख होमाहै.

प्र ११ए-जगतका कर्ता ईश्वरहें के नही ?

उ.--जगततो प्रवाहसें अनादि चला आ-ताहें. किसीका मूलमें रचा हुआ नहीहें. काल १ स्वन्नाव १ नियते ३ कर्म ४ चेतन अल्मा और जड पदार्थ इनके सर्व अनादि नियमोसें यह जगत विचित्ररूप प्रवाइसें चता हुआ उत्पाद व्यय ध्रुव रूपसें इसी तरे चता जायगा.

त्रः १२०--श्रो महावीरस्वामीए तीर्धकरो-को प्रतिमा पूजनेका उपदेश कराहै के नहीं?

ज.-श्री महावोरजीने जिन प्रतिमाकी पूजा इब्वे श्रोर जावेतो गृहस्थकों करनी बता- यिहै, श्रोर साध्योंकों जावपूजा करनी वताइहै.

त्र. १२१—जिन प्रतिमाकी पूजा विना जिनकी जिक्त हो शक्तों है के नहीं ?

उ.—प्रितमा विना न्नगवंतका स्वरूप स्मरण नहीं हो सक्ताहै, इस वास्ते जिन प्रित-मा विना गृहस्थलोकोसे जिनराजकी निक्त नहीं हो सक्तीहै.

प्र. १११-जिन प्रतिमातो पाषाणादिककी बनी हुइहै, तिसके पूजने गुणस्तवन करनेसं क्या लाज होताहै?

ज -- हम पहर जानके नहीं पूजतेहैं, किंतु तिस प्रतिमा द्वारा साक्षात् तीर्थंकर जगवंतकी पूजा स्तुति करतेहैं जैसे सुंदर स्त्रोकी तसबीर देखनेसे असल स्त्रीका स्मरण होकर कामी काम पीमित होताहै तैसेही जिन प्रतिमाके देखनेसें जक्तजनोको असली तीर्थकरका रूपका स्मरण होकर जकोंका जिन जिसें कल्याण होता है.

प. १२३-जिन प्रतिमाकी फूलादिसें पूजा करनेसें श्रावकींको पाप लगताहै के नद्दी ?

5.-जिन प्रतिमाकी फूलादिसें पूजा क-रनेसें संसारका क्रय करे, अर्थात् मोक्त पद पावे; और जो किंचित् इव्य हिंसा होतीहै, सो कूपके दृष्टांतसें पूजाके फलसही नष्ट दोजातिहै, यद कथन आवइयक सूत्रमेंहै.

प. १२४-सर्व देवते जैनधर्मी है ?

ज.—सर्व देवते जैनधर्मी नहीहै, कितनेकहै.

प. १२५-जैनधर्मी देवताकी जगती श्रा-वक साधु करे के नहीं ?

ज.-सम्यग् दृष्टी देवताकी स्तुति करनी जैनमतमें निषेध नहीं, क्योंकि श्रुत देवता ज्ञा-नके विद्योकों हर करतेहैं, सम्यग् दृष्टी देवते ध-मेमे होते विद्योकों हर करतेहैं, श्रोर कोइ जोखा जीव इस लोकार्थके वास्ते सम्यग् हिष्ट देवता-योंका आराधन करेतो तिसकाजी निषेध नहीं है, साधुजो सम्यग् हिष्ट देवताका आराधन स्तु ति जैनधर्मकी जन्नति तथा विघ्न हर करने वास्ते करेतो निषेध नहीं. यह कथन पंचाइाकादि ज्ञा-स्त्रोंमे हैं.

प्र. ११६—सर्व जीव अपने करे हूए क-र्मका फल जोगते है, तो फेर देव ते क्या कर सक्ते है ?

ज — जैंसे अशुन निमिन्नों मिले अशु-न कर्मका फल उदय होताहै, तेसे शुन निमि-नोंके मिलनेसे अशुन कमोंदय नष्ठनी हो जा-ताहै, इस बास्ते अशुन कमींके उदयकों दुर क रनेमें देवतानी निमिन्न है.

प्र. १२७—जैनधर्मी अथवा अन्यमित दे-वते विना कारण किसीकों पुख दे सक्ते हैं के नहीं ?

ज — जिस जीवके देवताके निमित्तसें अ-शुज्ज कर्मका जदय दोनाहे, तिसकों तो देषादि कारणसें देवते इख दे सक्तेहैं, अन्यकों नदी.

प्र. १२७-संप्रतिराजा कौन था ?

ज.--राजगृह नगरका राजा श्रेणिक जि-सका दूसरा नाम जंजसार था, तिसकी गद्दी ऊपर तिसका बेटा अशोकचं इसरा नाम को-णिक बैठा, तिसने चंपानगरीकों अपनी राजधा नी करी, तिसके मरां पिंचे तिसकी गद्दी ऊपर तिसका बेटा नदायि बैगा, तिसने अपनी राज-धानी पामलीपुत्र नगरमें करी सो चदायि विना पुत्रके मरण पाया; तिसकी गद्दी ऊपर नायिका पुत्र नंद बैंग, तिसकी नव पेढीयोने नंदही ना-मसें राज्य करा, वें नव नंद कदलाए नबमें नंद-की गद्दी ऊपर मोर्थवंशी, चंड्गुप्तराजा बैंग, तिसकी गद्दी ऊपर तिसका पुत्र बिंडसार बैठा, तिसकी गद्दी ऊपर तिसका बेटा श्रशोकश्रीराजा बैठा, तिसका पुत्र कुणाल ग्रांखासें ग्रंघा या इस वास्ते तिसकों राज गद्दी नहीं मिली, तिस कु-णालका पूत्र संप्रति हुआ, सो जिस दिन ज-न्म्याचा तिस दिनही तिसकीं अशोकश्री राजाने

अपनी राजगद्दी ऊपर बैंग्या, सो संप्रति नामे राजा हुआहै, श्रेणिक १ कोणिक १ ग्रदायि ३ यह तीनो तो जैनधर्मी थे, नब नंदोकी मुऊ ख बर नहीं, कौनसा धर्म मानते थे. चंड्गुप्त १ बिं डुसार ए दोनो जैनी राजे थे, अशोकश्रीजी जैन नराजा था, पींग्रेसें केइक बौद्मित हो गया कह तेहैं, और संप्रति तो परम जैनधर्मीराजा था.

प. १२ए-संप्रति राजाने जैनधर्मके वास्ते क्या क्या काम करेथे.

ज.—संप्रतिराजा सुहस्ति आचार्यका श्रा-बक शिष्य ११ वारां व्रतथारी था, तिसने इविम अंध्र करणाटादि और काबुल कुराशानादि अनार्य देशोमें जैनसाध्योका बिहार करके तिनके जप-देशसें पूर्वोक्त देशोमें जैनधर्म फैलाया, और नि नानवे एए००० हजार जीर्स जिन मंदरोंका ज-द्धार कराया, और बव्वीस १६००० हजार नवी-न जिनमंदिर बनवाए थे, और सवाकिरोम १९ए०००० जिन प्रतिमा नवीन बनवाइ थी, जिनके बनाए हुए जिनमंदिर गिरनार नमोलादि स्थानोमे अवज्ञी मौजूद खरेहै, और तिनकी ब-नवाइ हुइ सैंकमो जिन प्रतिमाज्ञी मद्दा सुंदर विद्यमान कालमे विद्यमान है; और संप्रति राजा ने ७०० सौ दानझाला करवाइ थी. और प्रजाके महा हितकारी उपध्शालादिजी बनवाइ थी, इत्यादि संप्रतिराजाने जैनमतकी वृद्धि और प्र-जावना करी थी. विरात् १ए१ वर्ष पीं हुआ है.

प्र. १३०-मनुष्यों में कोइ ऐसी शक्ति वि यमानहें कि जिसके प्रजावसें मनुष्य अज्ञुत काम कर सक्ताहै ?

ज.—मनुष्यम अनंत राक्तियों कर्माके आ-वरणतें ढंकी हुइहै, जेकर वे सर्व राक्तियां आव-रण रहित हो जावेंतो मनुष्य चमत्कारी अद्भुत काम कर सक्तेहै.

प्र. १३१ वे शक्तियां किसने ढांक बोमीहै?

ज. आठ कर्माकी अनंत प्रकृतियोने आ-बदन कर बोमीहै,

प्र. १३१ इम्प्रेतो आठ कर्मकी १४० वा १५० प्रकतियां सुनोहै, तो तुम अनंत किस तरेसें

कहेते है ?

- उ एकसौ १४० वा १५० यह मध्य प्रक-तियांके जेदहै, और उत्कृष्ट तो अनंत जेद है, क्योंके आत्माके अनंत गुणहै, तिनके ढांकनेवा-खीयां कर्म प्रकृतियांजी अनंत है.
- त्र. १३३ मनुष्यमें जो शक्तियां श्रद्धत काम करनेवालीयांहै तिनका योमासा नाम लेके बतलान, श्रीर तिनका किंचित् स्वरूपन्नी कही, श्रीर यह सर्व लिब्धयां किस जीवकों किस का-लमें होतीयांहै?
- ठ.—आमोसिह लड़ो १ जिस मुनिके हा-थादिके स्पर्श लगनेसें रोगीका रोग जाए, ति-सका नाम आमर्षोषि लिच्च है, मुनि तिस ल चिचवाला कहा जाताहै, यह लिच्च साधुदीकों होती है.

विष्णोसिह लड़ी १--जिस साधुके मलमू-त्रके लगनेसें रोगीका रोग जाए, तिसका नाम विट्रपाषि लिब्ध है, इस लिब्धवाले मुनिका मल, विष्टा और मूत्र सर्व कर्ष्यूरादिवत् सुगंधि- वाला होता है, यह लिब्ध साधुकोही होतीहै.

खेदोसिंद खड़ी ३--जिस साधुका श्रेष्म यूंकही उपधिरूप है, जिस रोगीके शरीरकों लग जावेतो तत्काल सर्व रोग नष्ट हो जावे, यह सु-गंघित होताहे, यह लिच्च साधुकों होतो है, इ-सकों श्रेष्मोषिं लिच्च कहतेहैं

जल्लोसिह खड़ी ध--जिस साधुके शरीरका पसीना तथा मैलजी रोग दूर कर सके, तिसकों जल्लोषि खब्धि कहते है, यहजी साधुकोंही होती है.

सघोसिह लड़ी ए जिस साधुके मलमूत्र केश रोम नखादिक सर्वोषिष रूप हो जाबे, सर्व रोग दूर कर सकें, तिसकों सर्वोषिष लिब्ध कह तेहै, यह साधुको होतोहें.

संजित्नासोए लड़ी ६-जो सर्व इंडियोंसे सुणे, देखे, गंध सूंघे, स्वाद लेवे, स्पर्हा जाणे ए कैक इंडिथसें सर्व इंडियांकी विषय जाणे अधवा बारा योजन प्रमाण चक्रवर्तिकी सेनाका प्रमाव होताहै, तिसमे एक साथ वाजते हुए सर्व वजं त्रोकों अत्रय अत्रय जान सके तिसको संज्ञित्र श्रोत्र लिब्ध कहतेहै, यह साधुको होवे हैं

विह्नाण लड़ी 9-अवधिक्तानवंतको अव-धिक्तान लिच्च होती है, यह चारो गतिके जी-वांको होतीहै, विशेष करके साधुकों होतीहै,

रिग्नमइ लही उ-जिस मनः पर्यायङ्गानसं सामान्य मात्र जाणें, जैसें इस जीवने मनमें घट चिंतन कराहें इतनाही जाणे, परंतु ऐसा न जा नेकि वैसा घट किस केत्रका जत्पन्न हूआ किस कालमें जत्पन्न हुआहें, अथवा अढाइ द्वीपके मनु ष्योके मनके बादर परिणामा जाणे तिसकों कजु मति लिब्ध कहते हैं, यह निश्चय साधुकों होतीहै अन्यकों नहीं

विग्नतमइ बद्धी ए-जिस मनः पर्यायसे रूजुमितिसें अधिक विशेष जाणें, जैसें इसने सों नेका घट चिंतन कराहै, पामितपुत्रका जत्पन्न हूआ वसंतक्ततका अथवा अढाइ घीपके संज्ञी जी वांके मनके सूक्ष्म पर्यायांकोंन्नी जाणे, तिसकों विपुत्रमित बिध्ध कहतेहैं, इसका स्वामी साधुही होवे, यह लिब्ध केवल ज्ञानके विना हुआ जाए नही.

चारण लद्धी १०—चारण दो तरेके होतेहै, एक जंघा चारण १ दूसरा विद्या चारण १ जंघा चारण वसकों कहतेहैं जिसकी जंघायोंमे आका शमें उपनेकी सिक्त उत्पन्न होवे सो ऊंघा चारण. जंचातो मेरु पर्वतके शिखर तक उपके जा सकताहे, और तिरग्न तेरमे रुचक द्वीप तक जा सकताहे, और विद्याचारण जंचा मेरु शिखरतक और तिरश्चा मेरीश्वर हीप तक विद्याके प्रजावसें जा सक्ताहे, यह दोनो प्रकारकीं लिच्चिकों चारण लिच्च कहतेहै, यह साधुकों होतीहै.

आसीबिष खड़ी ११-आशी नाम दाढाका है, तिनमें जो विष होवे सो आशोविष. सो दो प्रकारेहै, एक जाति आशोविष दूसरा कर्म आ-शीविष, तिनमें जाति जहरीके चार जेद है. विबु १ सर्प १ मींमक ३ मनुष्य ४ और तप क रनेसें जिस पुरुषको आशीविष खब्धि होती है सो शाप देके अन्यकों मार सक्ताहे, तिसकोंजी आशीविष लिब्ध कहतेहै.

केबल लड़ी १२-जिस मनुष्यकों केवल ज्ञान होवे, तिसकों केवलि नामे लब्धिहै.

गणहर लड़ी १३-जिससें अंतर मुहूर्नमें चौदद पूर्व गूंथे और गणधर पदवी पामें, तिस-कों गणधर लब्धि कदतेहैं.

पुन्वधर लद्धी १४-जिससें चोददपूर्व दश पूर्वादि पूर्वका ज्ञान होवे, सो पूर्वधर लब्धि.

अरहंत खड़ी १५⁻जिससे तीर्थंकर पद पावे, सो अरिहंत खब्धि.

चक्कविष्ट अड़ी १६-चक्रवर्तीकों चक्रवतीं लिब्धि

बलदेव लद्धी १९-बलदेवकों वलदेव लिघ. वासुदेव लद्धी १०-वासुदेवकों वासुदेवकी लि^{च्छि}

खीरमहुसप्पिश्रासव लद्धी १ए—जिसके वचनमें ऐसी शक्तिहै कि तिसकी वाणि सुणके श्रोता ऐसा तृप्त हो जावेके मानु दूध, घृत, शा-कर, मिसरीके खानेसे तृप्त हुआहै, तिसकों खीर मधुसिंप ग्रासव लिच्चि कहते है, यह साधुकों होती है.

कुछ्य बुद्धि लद्धी १०-जैसे वस्तु कोतेमें पमी हुइ नाश नहीं होतीहै, ऐसेही जो पुरुष जितना ज्ञान सीखे सो सर्व वैसेका तैसाही ज-नमपर्यंत जूले नहीं, तिसकों कोष्टक बुद्धि लिब्ध कहते हैं

पयाणुसारी खड़ी २१-एक पद सुननेसें सं-पूर्ण प्रकरण कह देवे, तिसकों पदानुसारी खिच्छ कहते है

बीयबुद्धि तदी २१-जैसें एक बीजसें अनेक बीज उत्पन्न होतेहैं, तैसेही एक वस्तुकें स्व रूपके सुननेसें जिसको अनेक प्रकारका ज्ञान होवे, सो बीजबुद्धि लिब्धहैं

ते न ले साध के तिस साध के तपके प्र जावर्से ऐसी शक्ति न ले हों वे के जे कर को घ च ढेतो मुखके फुंकोरसें कितने ही देशां कों बाल-के जरम कर देवे, तिसकों तें जो ले इया लि ध कहते हैं आहारए लद्धी १४ चन्नदह पूर्वघर मुनि तीर्थंकरकी क्रिइ देखने वास्ते, १ वा कोइ अर्थ अवगादन करने वास्ते, अथवा अपना संशय दूर करने वास्ते अपने शरीरमें हाथ प्रमाण स्फिटिक समान पूतला काढके तीर्थंकरके पास जेजताहै, तिस पूतलेसें अपने कृत्य करके पान शरीरमें संदार लेताहै, तिसकों आहारक लिब्ध कदतेहैं.

सीयलेसा लड़ी १५ तपके प्रजावसें मु-निकों ऐसी शक्ति जल्पन्न होतोहैके जिससें तेजो लेश्याकी जश्नताकों रोक देवे, वस्तुकों दग्ध न होने देवे, तिसकों शोतलेशा लिब्ध कहते हैं.

वेजिक्वदेह लड़ी १६ जिसकी सामर्थसे अ णुकी तरें सुक्ष्म कण मात्रमें हो जावे, मेरकी तरें जारी देह कर लेवे, अर्क तूलकी तरें लघु इ लका देह कर लेवें, एक वस्त्रमेंसें वस्त्र करोगें आर एक घटमेंसें घट करोगें करके दिखला देवे, जैसा इन्ने तैसा रूप कर सके, अधिक अ-न्य क्या कहिये, तिसका नाम वैक्रिय लिब्ध है.

श्रकीणमहाणसी लड़ी २७-जिसके प्रजा

वसें जिस साधुनें ब्राहार ब्राणाहै, जहां तक सो साधु न जीमे तहां तक चाहो कितनेहो साधु तिस जिकामेंसे ब्राहार करे तोजी खूटे नही, तिसकों ब्रक्तीणमहानसिक बच्चि कहते है.

पुताय लड़ी १०—जिसके प्रजावसें धर्मकी रक्का करने वास्ते धर्मका देषी चक्रवर्त्यादिकों सेना सहित चूर्स कर सके, तिसकों पुताकत-विध कहते हैं.

पूर्वोक्त येह लिब्धयां पुन्यके और तपके ओर अंतःकरणके बहुत शुद्ध परिणामोके होनेसं होवेहे, ये सर्व लिब्धयां प्रायं तीसरे चौथे आरे-मेंही होतीयांहे, पंचम भारेकी शुरुआतमें जी हो तीयां है.

प्र. १३४-श्री महावीरस्वामीकों ये पूर्वो-क्त लिब्धयां २० अठावीस थी?

उ.-श्री महावीरजीकोंतो अनंतीयां लिब्ध यां थी यह पूर्वोक्ततो २० अद्यावीस किस गिन तीमेंहै, सर्व तीर्थंकराकों अनंत लिब्धयां होतीहै.

प्र. १३५-इंड्यूति गौतमकों ये सर्व ब-

विधयो थी ?

- ज चक्री, बलदेव, वासुदेव क्रजुमित, ये नहीं थी, होष प्राये सर्वही लिव्धियां थी.
- प. १३६—आप महावीरकों ही जगवंत स-वंज्ञ मानतेहो, अन्य देवोंकों नही, इसका क्या कारणहे ?
- ठ.—अपने १ मतका पक्तपात बोमके वि-चारीये तो, श्री महावीरजीमेंही जगवंतके सर्व गुण सिद्ध होतेहैं, अन्य देवोमें नही
- त्र. १३७ श्री महावीरजीकों हूएतो बहुत वर्ष हूएहै, हम क्योंकर जानेके श्री महावीरजी-मेंही जगवानपणेके गुण थे, अन्य देवोंमें नही थे?
- ज.—सर्व देवोंकी मूर्तियों देखनेसें और ति नके मतोमें तिन देवोंके जो चरित कथन करेहैं तिनके वांचने और सुननेसें सत्य जगवंतके लक्ष ए और किएत जगवंतोंके लक्षण सर्व सिद्ध हो जावेगे.
- प्र. १३० केसी मूर्तिके देखनेंसे जगवंतकी यह मूर्ति नहींदे, ऐसे हम माने ?

जिस मूर्तिके संग स्त्रीकी मूर्ति होवे तब जाननाके यह देव विषयका जोगी था. जिस मूर्तिकें दाश्रमें शस्त्र होवे तब जानना यह मूर्ति रागी, देषी वैरीयोके मारने वाले श्रौर श्रसमर्थ देवोकी हैं जिस मूर्तिके हाथ्रमें जपमाला होवे तब जानना यह किसीका सेवक है, तिससें कुं मागने वास्ते तिसकी माला जपताहै.

प. १३ए परमेश्वरकी कैसी मृर्ति होतीहै?

ज.-स्त्री, जपमाला, शस्त्र, कमंमलुतें रहित श्रोर शांत निस्प्रह ध्यानारूढ समता मतवारी, शांतरस, मय्रसुख विकार रहित, ऐसी सच्चे दे-वकी मूर्ति होतीहैं.

प. १४० जैसे तुमनें सर्वज्ञकी मूर्तिके ल क्रण कहेहै, तेसें लक्षण प्रायें बुद्की मूर्तिमेंहे, क्या तुम बुद्दको जगवंत सर्वज्ञ मानतेहो ?

ग्र.—हम निकेवल मूर्तिकेही रूप देखनेसें सर्वज्ञका अनुमान नहीं करतेहें, किंतु जिसका चरितजो सर्वज्ञके लायक होवे, तिसकों सञ्चा देंव मानते है.

- प्र. १४१ क्या बुधका चरित सर्वज्ञ सच्चे देव सरीखा नहीं है ?
- उ. बुड़के पुस्तकानुसार बुड़का चरित स वैज्ञ सरीखा नहीं मालुम होताहै.
- प. १४२ बुद्धके शास्त्रोंमें बुद्धका किसत-रेंका चरित है, जिससें बुद्ध सर्वज्ञ नहीं है?
- **ज.**-बुद्धका बुद्धके शास्त्रानुसारे यह चरित जो यागे लिखतेहै, तिसे बुद सर्वज्ञ नही सिद होताहै. १ प्रथम बुद्धने संसार बोमके निर्वाणका मार्ग जानने वास्ते योगीयांका शिष्य हुआ, वे योगी जातके ब्राह्मणये श्रोर तिनकों बने ज्ञानी जी लिखाहै, तिनके मतकी तपस्यारूप करनीसें बुद्धका मनोर्थ सिद्ध नहीं हुआ, तब तीनको हो-मके बुद्ध गयाके पास जंगलमें जा रहा २, इस कपरके लेखसेतो यह सिद्ध होता है कि बुद्ध कोइ ज्ञानी बुद्धिमान्तो नही था, नहीतो तिनके म-तको निष्फल कष्ट किया काहेको करता, और गुरुयोंके बोमनेसें स्वइंदचारी अविनीतन्ती इसी तेखर्से सिद्ध होताहै १ पी**बे** बुद्धने **उ**प्र ध्यान

और तप करनेमें कितनेक वर्ष व्यतीत करे १ इस वेखसें यह सिद्ध होताहैकि जब गुरुयोंकों बोमा निकम्मे जानके तो फेर तिनका कथन करा हुआ, **उ**प्र ध्यान और तप निष्फल काहेको करा, इस सेंन्नो तप करता हुआ, जब मूर्छा खाके पमा तदा तकनी यज्ञानी था, ऐसा सिख दोता दे १ पीछे जब बुद्धने यह विचार कराके केवस तप करनैसें ज्ञान प्राप्त नही होताई, परंतु मनके उधाम क-रनेसं प्राप्त करना चाहिये, पोबे तिसने खानेका निश्चय करा और तप बोमा १ जब ध्यान श्रोर तप करनेसें मन न जयमा तो क्या खानेसं मन **उ**घम शकताहै, इससें यहन्नी तिसकी समऊ श्र समंजस सिद्ध होती है, १ पींगे अजपाल वृक्त-के हेर्रे पूर्व तर्फ बैरके इस्ने ऐसा निश्चय कराके जहां तक मैं बुद्ध न होवांगा तहां तक यह जगा न बोर्नुगा, तिस रात्रिमें इसकों इन्नारोध करनेका मार्ग और पुनर्जन्मका कारण और पूर्व जन्मां-तरोका ज्ञान जल्पन्न हुआ, और दूसरे दिनके सवे रेके समय इसका मन परिपूर्ण उघना, और स-

वोंपरि केवलक्कान जल्पन्न हुआ २ अब विचारीये जिसने नप्रध्यान और तप बोम दीया और नि-त्यप्रते खानेका निश्चय करा तिसकों निर्हेतुक इ न्नारोध करनेका और पुनर्जन्मके कारणोंका ज्ञान कैसें हो गया, यह केवल अयौक्तिक कथनहैं. मो जलायन और शारिपुत्र और आनंदकी कल्पनासें ज्ञानी लोकोमें प्रसिद्ध हुआ है १, बुद्धने यह क-थन करा है, आत्मा नामक कोइ पदार्थ नहीं है, श्रात्मातो अज्ञानियोने कल्पन करा है २, जब बु द्धने ज्ञानमें आत्मा नहीं देखा तव केवलज्ञान किसकों हुआ, और बुद्धने पुनर्जन्मका कारण कि सका देखा, और पूर्व जन्मांतर करने वाला कि-सकों देखा, और पुन्य पापका कर्ताञ्चका किस-कों देखा, और निर्वाण पद किसकों हुआ देखा, जेकर कोइ यह कद्देके नवीन नवीन क्रणकों पि बेले २ क्रणोकी वासना लगती जाती है, कर्चा पिबला कराहै, और जोक अगला कराहे, मोक-का साधन तो अन्य क्रणने करा, और मोक्त अ गले क्रणको हुइ, निर्वाण उसकों कहतेहै कि जो

दीपककी तरें क्रणोका बुऊ जाना, प्रर्थात् सर्व क्तण परंपरायका सर्वथा श्रन्नाव हो जाणा, श्र-थवा शुद्ध क्रणोकी परंपराय रहती है. पांच स्कं-धोसें वस्तु जलपत्र होती है, पांचो स्कंधन्नी काणि कहै, कारण कार्य एक कालमे नहीं है, इत्यादि सर्व बौद मतका सिद्धांत अयोक्तिक है १ बुद्धके शिष्य देवदत्तने बुधको मांस खाना बुमानेके वास्ते बहुत उपदेश करा, परंतु बुद्धने न माना, अंतमें-न्नी सूयरका मांस और चावल अपने नक्तके घ-रसें लेके खाया, और वेदना प्रस्त होकरके मरा, और पाणीके जीव बुद्कों नही दीखे तिससें कच्चे पानीके पीने और स्नान करनेका उपदेश श्रपने शिष्योंकों करा, इत्यादि श्रसमंजस मतके उपदेशककों हम क्यों कर सर्वज्ञ परमेश्वर मान सके, जो जो धर्मके शब्द बौद मतमें कथन करे है वे सर्व शब्द ब्राह्मणोंके मतमेंतो है नहीं, इस वास्ते वे सर्व शब्द जैन मतसे खीयेहै, बुद्धसें प हिलें जैन धर्म था, तिसका प्रमाण हम ऊपर लिख आए है, बुद्धके शिष्य मौजलायन और शारिपु-

त्रने श्री महावीरके चिरतानुसारी बुद्धकों सर्वसें जंचा करके कथन करा सिद्ध होताहै, इस वास्ते जेनमतवाले बुद्धके धर्मकों सर्वज्ञका कथन करा हुआ नही मानते है.

प. १४३ — िकतनेक यूरोपीयन विद्वान ऐसे कहतेहै कि जैन मत ब्राह्मणोंके मतमेसें खीयाहै, अर्थात् ब्राह्मणोंके ग्रास्त्रोकी बातां खेके जैन मत रचा है ?

ज-यूरोपीयन विद्वानोने जैनमतके सर्व पुस्तक वांचे नही मालुम होतेहै, क्योंकि जेकर ब्राह्मणोके मतमें अधिक ज्ञान होवे, और जैन-मतमें तिसके साथ मिलता योगासा ज्ञान होवे, तब तो इमन्नी जैनमत ब्राह्मणोके मतसें रचा ऐंसा मान लेवे, परंतु जैनमतका ज्ञानतो ब्राह्म-षादि सर्व मतोके पुस्तकोंसे अधिक और विल-क्रणहै, क्योंकि जैनमतके बेद पुस्तक और कर्मा के स्वरूप कथन करनेवाले कर्म प्रकृति, १ पंच संग्रह, २ षट्कर्म ग्रंथादि पुस्तकोंमें जैसा ज्ञान कथन करा है, तेसा ज्ञान सर्व इनियाके मतके

पुस्तकोंमे नहीहै, तो फेर ब्राह्मणोके मतके ज्ञान-सें जैन मत रचा क्योंकर सिद्ध होवे, बलिक यह तो सिड्नी हो जावेके सर्व मतोमें जो जो सूक्त वचन रचना है वे सर्व जैनके दादशांग समुइकेही बिंड सर्व मतोमें गये हुएहै. विक्रमादित्य राजेके प्रोहितका पुत्र मुकंदनामा चार वेदादि चौदह वि द्याका पारगामी तिसने वृद्धवादी जैनाचार्यके पास दोक्ता लीनो. गुरुने कुमुदचंइ नाम दीना श्रोर श्राचार्यपद मिलनेसें तिनका नाम सिद्धसेन दिवाकर प्रसिद्ध हुत्रा, जिनक[।] नाम कवि कासी दासने अपने रचे ज्योतिर्विदान्नरण प्रंथमें विक्र-मादित्ययकी सञाके पंक्तितोके नाम खेतां श्रुतसेन नामसें विखाहै, तिनोनें अपने रचे बत्तीस बत्ती सी यंथमें ऐसा लिखाहै, सुनिश्चितं नःपरतंत्र युक्तिषु ॥ स्फुरंतिया कश्चिन्सुक्तिसंपदः ॥ तवैव-ताः पूर्वमदार्णवोच्चता ॥ जगत्प्रमाणं जिनबाक्य विप्रुष ॥१॥ जदघाविव सर्व संधव ॥ समुद्दीरणा त्विय नाथ दृष्टयः ॥ नचतासु ज्ञवान्त्रदृदयते ॥ प्रविज्ञक्त सरित्स्विवोद्धिः ॥ १ ॥ प्रथम श्लोक-

का जावार्थ ऊपर लिख आएहै, दूसरे श्लोकका जाबार्थ यह है, कि समुइमें सर्व नदीयां समा सक्तो है, परंतु समुइ किसीजी एक नदीमें नही समा सक्ता है, तैसे सर्व मत नदीयां समान है, वैतो सर्व स्यादाद समुद्ररूप तेरे मतमे समा सके है, परंतु तेरा स्यादाद समुइरूप मत किसी म-तमें जो संपूर्ण नहीं समा सका है, ऐसेही श्री ह रिज्ञइसूरिजी जो जातिके ब्राह्मण ब्रोरि चित्रकू-टके राजाके प्रोद्दित थे और वेद वेदांगादि चौदह विद्याके पारगामी थें, तिनोनें जैनकी दीक्ता लेके १४४४ य्रंथ रचेदै, तिनोनेज्ञी कपदेशपद षोमश कादि प्रकरणोमें सिम्ह्सेन दिवाकरकी तरेही खि खाहे तथा श्री जिनधर्मी हुआ पोठे जानाहै, जि सने शैवादि सकल दर्शन और वेदादि सर्व मर्तो के शास्त्र ऐसे पंमित धनपालने जोके न्रोजराजा की सन्नामें मुख्य पंमित था, तिसने श्री रूप-ज्ञदेवकी स्तुतिमें कहाहै, पावंति जसं असमंज-सावि, वयणेहिं जेहि पर समया, तुइ समय महो ब्रहिणो, ते मंदाविंड निस्तंदा ॥ १ ॥

स्यार्थः ॥ जैनमतके विना अन्य मतके असमंजस वचनरूप ग्रास्त्र जो जगमें यशको पावें है जैनसे वचनोसें वे सर्व वचन तेरे स्याद्वादरूप महोदिध के अमंद विंडु उनके गए हुएहैं, इत्यादि सैकनो चार वेद वेदांगादिके पाठीयोने जैनमतमे दीहा लीनी है, क्या जन सर्व पंिमतोकों बौद्यायनादि शास्त्र पमते हुआंको नही मालुम पमा होगा के बौद्धायनादि शास्त्र जैनमतके वचनोसें रचे गये है, वा जैन मत बौद्धायनादि शास्त्रोंसें रचा गया है, जेकर कोइ यह अनुमान करके श्री महावीर-जीसें बौद्धायनादि शास्त्र पहिले रचे गएहै, इस वास्ते जैनमत पीं वेसे हुआहै, यह माननान्नो वीक नहो, क्योंकि श्री मदावीरजीसें १५० वर्ष पहिलं श्रो पार्श्वनायजी और तिनसें पहिले श्री नेमिना थादि तीर्थकर हुएहै, तिनके वचन लेके बोद्धाय-नादि शास्त्र रचे गएहैं, जैनी ऐसें मानतेहैं: जेक र कोइ ऐसें मानता होवे कि जैनमत योमाहै श्रीर ब्राह्मण मत बहुन है, इस वास्ते थोने मतसें बना मत रचा क्यों कर सिद्ध होवे; यद अनुमान अ

तोत कालकी अपेकाए कसा मानना ठीक नहीं, क्योंकि इस इिंड्स्तानमें बुद्ध जीते हुए बुद्धमत विस्तारवंत नहो था, परंतु पीडेसे ऐसा फैलाके ब्राह्मणोका मत बहुतही तुञ्च रह गया था; इसी तरे कोइ मत किसी कालमे अधिक हो जाता है, श्रीर किसी कालमें न्यून हो जाता है, इस वास्ते थोना और बना मत देखके थोने मतको बनेसे रचा मानना ये अनुमान सञ्चा नही है, जह मो क्तमूलरने यह जो अनुमान करके अपने पुस्तक-में लिखाई कि वेदोंके ढंदोजाग और मंत्रजागके रचेकों १ए०० वा ३१०० सी वर्ष हुएहै, तो फेर बौद्धायनादि झास्त्र बहुत पुराने रचे हुए क्यों कर सिद्ध दोवेंगे, इस वास्ते अपने मनकल्पित अनु-मानसें जो कख्पना करनी सो सर्व सत्य नही हो शकी है, इस वास्ते अन्य मतोंमे जो ज्ञानहै सो सर्व जैन मतमें है, परंतु जैनमतका जो ज्ञानहै सो किसी मतमे सर्व नदी है; इस वास्ते जैन मतके दादशांगोकेही किंचित वचन लेके लोकोने मनकिंद्यत उसमें कुंग्र ग्रिधिक मिलाके मत रच बीनैई; हमारे अनुमानसेंतो यहो सिद्ध होता है.

प्र. १४४-कोइ यूरोपियन विद्वान् ऐसे क हताहै कि बौद्धमतके पुस्तक जैनमतसें चढतेहै?

ठ-जेकर श्लोक संख्यामे अधिक होवे अ-यवा गिनतिमें अधिक होवे अथवा कवितामें अ-धिक होवे, तबतो अधिकता कोइ माने तो हमा-री कुछ हानि नहीहे, परंतु जेकर ऐसे मानता होवेके बौद्ध पुस्तकोमें जैन पुस्तकोंसें धर्मका स्वरूप अधिक कथन करा है, यह मानना बिख-कुल भूल संयुक्त मालुम होताहै, क्योंकि जैन पु स्तकोंमें जैसा धर्मका रूप और धर्म नीतिका स्व रूप कथन कराहै, वैसा सर्व इनोयांके पुस्तकोंमें नहीं है.

प. १४५—जैनके पुस्तक बहुत थोमे है, और बौधमतके पुस्तक बहुत है, इस वास्ते अ-धिकता है?

उ-संप्रति कालमें जो जैनमतके पुस्तकहैं वे सर्व किसी जैनीनेज्ञी नही देखेंहै, तो यूरोपी-यन विद्यान कहांसे देखे; क्योंकि पाटन और जै- सबमेंरमें ऐते गुप्त जंमार पुस्तकोंके है कि वे किसी इंग्रेजनेजी नहीं देखे है, तो फेर पूर्वीक ब्र नुमान कैसें सत्य होवे.

प. १४६—जैनमतके पुस्तक जो जैनी रख ते हैं सो किसोकों दिखाते नही है, इसका क्या कारण है ?

ठ-कारणता इमकों यह मालुम होताहै कि मुसलमानोंको अमलदारोमें मुसलमानोंने बहुत जैनमतोपिर जुडम गुजारा था, तिसमें सैं कडो जैनमतके पुस्तकोंके जंगार बाल दीये थे, और हजारो जैनमतके मंदिर तोमके मसजिदे बन्नवा दीनी थी. कुतब दिख्ली अजमेर जुनागढके किलेमें प्रजास पाटणमें रांदेर, जरूचमें इत्यादि बहुत स्थानोमें जैनमंदिर तोमके मसजिदो बन्नवाइ हुइ खमी है, तिस दिनके मरे हुए जैनि कि सीकोंजी अपने पुस्तक नही दिखाते हैं, और गुप्त जंगारोंमें वंध करके रख डोमेहें.

प्र. १४७-इस कालमें जो जैनी अपने पु-स्तक किसीकों नही दिखातेहें, यह काम अज्ञा है वा नहीं?

जि.—जो जैनी लोक अपने पुस्तक वहुत यत्नसें रखतेहैं यहतो बहुत अज्ञा काम करते हैं, परंतु जैसलमेरमें जो जंगारके आगे पण्यरकी जोत चिनके जंगार बंध कर होमा है, और कोइ हसकी खबर नहीं लेता है, क्या जाने वे पुस्तक मही हो गयेहें के शेष कुह रह गयेहैं, इस हेतुसें तो हम इस कालके जैन मतीयोंको बहुत नालायक समऊते हैं.

त्र. १४०-क्या जैनो लोकोंके पास धन न हीहैं, जिससें वे लोक अपने मतके अति उत्तम पुस्तकोंका उद्धार नहीं करवाते हैं ?

उ.-धनतो बहुतहै, परंतु जैनी लोकोंकी दो ईडिय बहुत जबरदस्त हो गइहै, इस वास्ते ज्ञान जंमारकी कोइजी चिंता नहो करताहैं.

त्र. १४ए-वे दोनो इंडियो कौनसी है जो ज्ञानका जदार नही होने देती है?

उ.-एकतो नाक और दूसरी जिव्हा, क्यों कि नाकके वास्ते अर्थात् अपनी नामदारोके वास्ते लाखों रूपइये लगाके जिन मंदिर बनवाने चले जातेहैं, और जिव्हाके वास्ते खानेमे लाखों रूपइये खरच करतेहैं, चूरमेश्रादिकके लडुयोंकी खबर लीये जातेहैं, परंतु जीर्णजंमारके नद्वार करणेकी बाततो क्या जाने, स्वप्नमेज्ञी करते हो वेंगेके नहीं.

त्र. १५०-क्या जिन मंदिर और साहम्मि वज्जल करनेमें पापहै, जो आप निषेध करतेदा ?

ज.—जिन मंदिर बनवानेका और साहा-िम्मवब्र करनेका फलतो स्वर्ग और मोक्काहै, परंतु जिनेश्वर देवनेतो ऐसे कहाकि जो धर्मकेत्र बिगमता होवे तिसकी सार संज्ञार पहिले कर-नी चाहिये; इस वास्ते इस कालमं ज्ञान जंमार बिगमताहै. पहिले तिसका जहार करना चाहिये. जिन मंदिरतो फेरजी बन सकतेहै, परंतु जेंकर पुस्तक जाते रहेगे तो फेर कोन बना सकेगा.

प. १५१-जिन मंदिर बनवाना और सा-हम्मिवबल करना, किस रीतका करनां चाहिये?

ਰ.-जिस गामके लोंक धनहीन दोवें, जिन

मंदिर न बना सकें, श्रोर जिन मार्गके जक्त होवे, तिस जगे ब्रावइय जिन मंदिर करानां चाहिये, श्रीर श्रावकका पुत्र धनदीन होवे तिसकों किसी का रुजगारमें लगाके तिसके कुटंबका पोषण होवे ऐसे करे, तथा जिस काममें सीदाता होवे ति-समें मदत करे. यह साहम्मिवबलहै, परंतु यह न समजनांके हम किसी जगे जिन मंदिर बना नेकों श्रोर बनिये लोकोंकें जिमावने रूप साह-म्मिवब्रह्मका निषेध करतेहैं, परंतु नामदारीके वास्ते जिन मंदिर बनवानेमें ग्रख्प फल कइते है, और इस गामके बनोयोने जस गामके बनि-योंकों जिमाया और उस गामवालोंने इस गाम के बनियोंकों जिमाया, परंतु साहम्मिकों साहाय्य करनेकी बुद्धिसें नहीं, तिसकों हम साहमिवबल नही मानतेहै, किंतु गधें खुरकनी मानतेहै.

प. १५१-जैनमततो तुमारे कहनेसें इम-को बहुत उत्तम मालुम होताहै, तो फेर यह मत बहुत क्यों नहीं फेलाहै ?

ज.-जेनमतके कायदे ऐसे कठिन है कि

तिन उपर ग्रख्प सत्ववाले जिव बहुत नही चल सकेहै. गृहस्यका धर्म श्रीर साधुका धर्म बहुत नियमोसें नियंत्रितहै, और जैनमतका तत्व तो बहुत जैन लोकन्नी नहीं जान सक्तेहैं, तो अन्य-मतवालोंको तो बहुतही समजना किनहे, बौद मतके गोविंदु आचार्यने जरूचमें जैनाचार्यसे च-रचामे हार खाइ, पीबे जैनके तत्व जानने वास्ते कपटसें जैनकी दोक्ता लीनी. कितनेक जैनमतके झास्त्र पढके फेर बोध वन गया, फेर जैनाचार्यों-के साथ जैनमतक खंमन करनेमें कमर बांधके चरचा करी, फेरजी हारा, फेर जैनकी दीका लीनी, फेर हारा, इसोतरें कितनी वार जैनशास्त्र पमे; परंतु तिनका तत्व न पाया, पिबली विरीया तत्व पाया तो फेर बौध नही हुआ. जैनमत स-मऊनां श्रोर पालनां दोना तरेसें कविन है, इस वास्ते बहुत नही फैला है; किसी कालमे बहुत फेलाजी होवेगा, क्या निषेध है, इसीतरे मीमां-साका वार्त्तिककार कुमारित ज्ञहने श्रोर किरणा वित्रकं कर्त्ता चुद्यननेन्नी कपटसें जेन दीका

खीनी, परंतु तत्व नही प्राप्त हुआ.

प्र. १५३-जैनमतमें जो चौदहपूर्व कहे जाते है, व कितनेक बमेथे श्रोर तिनमें क्या क्या कथन था. इसका संक्रेपसं स्वरूप कथन करो?

उ.-इस प्रश्नका उत्तर अगले यंत्रसें देख वेनां.

पद संख्या	शाही लिख नेमें कितनी	विषय क्याहै.
एक करोड पद १००००००	जितने शा हीके ढेरसें	सर्वे द्रव्य और सर्वे पर्या यांकी उत्पत्तिका स्वरूप कथन करा है.
^{९६००००} छा नवेलाख पद.	ण शाहीसं	सर्व द्रव्य और सर्व पर्या- य और सर्व जीव विशेषां- के प्रमाणका कथन है.
मित्तरलाख पद. ७:०० ००	४ हाथी प्रमाण.	कर्म सहित और कर्म र- हित सर्व जीवांका और सर्व अजीव पदार्थोंके वीर्य अर्थात् शक्तिके स्वरूपका कथन है,
साउलाख पद ६०००००	८ हाथी प्रमाणः	जो लोकमें धर्मास्ति का- यादि अस्तिरूप है और नो खर शृंगादि नास्तिरूप है तिसकाकथन है अथवा सर्व वस्तु स्वरूप करके अ- स्तिरूप है और पररूप करके नास्तिरूप है ऐसा कथन है.
	एक करोड पद् १०००००० उद् १०००० खानवेलाख पद. मित्तरलाख पद. साठलाख पद	प्त करोड श्रेपकहाथी जितने शा जिल्ला जाने श्रेप शा जा होते प्र श्रेप

ज्ञान म एककरोड पद १६ हाथी पांची ज्ञान म वाद पूर्व १०००००० ए प्रमाण जिनका महा विस्	-
G C U3 0,00,000 U	
	तारस क-
५ क पद न्यून. यन है.	
सत्य पूष्ककरोड पर्दा३२ हाथी सत्य संयम घु	
- बाद पूर्वे¦१००००००० प्रमाणः नोका विस्तारसें	कथन है.
६ ६ पद अधिक	
आत्मप्र-छव्शीसकरोड ६४ हाथी आत्मा जीव वि	
बाद पूर्व पद. प्रमाण. नसौं ७०० नय	के मतोंसे
७ २६००००० स्वरूप कथन क	रा है.
ं कम्में प्र∣एक करोड अ १२८ हाथी ज्ञानावरणीयादि	अष्ठ कर्मका
बाद पूर्व स्सी इजार प्रमाण पकृति स्थिति अन्	रुभावप्रदेशा
u १००८००० दिसें स्वरूपका व	
मत्या चोरासी छाख २६५ हाथी मत्याख्यान त्य	
्र ख्यान पद् प्रमाण, ग्य वस्तुयोकाः	और त्या-
मवाद ८४०००० गका विस्तारसे	कथन क-
पूर्व. ९ । रा है,	·
विद्यानुएक करोड द _{५१२ हाथी} अनेक अतिका	
्मवाद मूलि छाख पदः। _{प्रमाण} ् िकार करनवाब	
र्व. १० १००००० । विद्यायोंका कथ	न है,
अवंध्य छव्वीस करी-१०२४ हा जिसमें ज्ञान, त	ाप, संय-
पूर्व. ११ ह पद. थी ममाण मादिका शुन प	3-
, ", ", ", ", ", ", ", ", ", ", ", ", ",	हळ ओर
२६००००० सर्वे प्रमादादि प	ापोंका अ

			युभ फल कथन करा है.
	एक करोड पं	२०४७ हा	पांच इंद्रिय और मनब-
पूर्व. १२	। चाश लाखः पदः	(या प्रमाणः) 	ल, वचनवल, कायावल और उच्छास निःश्वाम
	૧૫,૦૦૦,૦૦		और आयुइन दशो प्रा- णाका जहां विस्तारसें स्व रूप कथन करा है.
क्रिया विशास्त्र पूर्व. १३	न ^व करोड पद.	थी प्रमाण.	जिसमे कायक्यादि कि- या वा संयमिक्रया छंद- कियादि क्रियायोंका कथ- न है.
दसार	माढेबारा क रोड पदः १२५०००००	थी प्रमाण.	लोकमें वा श्रुतज्ञान लो- कमें अक्षरोपिर बिंदु समा- न सार सर्वोत्तम सर्वाक्षरों के मिलाप जाननेकी ल- बिधका हेतु जिसमें है.

प. १५४—जैनमतके पंच परमेष्टिकी जगे प्राचीन और नवीन मत धारीयोनें अपनी बुढि अनुसारे लोकोंने अपने अपने मतमें किस रोतेसें कल्पना करोहै, और जैनी इस जगतकी व्यव-स्था किस देतुसें किस रोतोसें मानते दें?

उ.-मतघारीयोने जो जनमतके पंच प-रमेष्टोकी जगे जूठी कल्पना खनी करी है, सो नीचले यंत्रसें देख लेना.

जैनमत १	अहि हंत?	सिद्ध २.	आचार्य ३	उपाध्या य ४.	साधु ५.
सांख्य मत २.	कपि ल	٥	आसुरी	विद्यापाठ कः	सांख्य साधु
वैदिक मत ३.	जैम नि	0	भद्दमभा कर	विद्यापाठ क.	0
नैयायिक मत ४.	गौत म	एकईश्वर	आचार्य नैयायिक	न्याय पाठक	साधु
वेदांत मत ५.	न्या स	एकब्रह्म	आचार्यो स्ति	वेदांत पाठक	पर्यहं सादि
वैशेषिक मत इ.	शिव	एकईश्वर	कणाद	पाठक	साधु
यहूदी मत ७.	म्मा	एकईश्वर	अनेक	पाठक	चपदे ग्रक
इसाइ मत ८.	ईंशा	एकईश्वर	पथर सम स्यादि	पाठक	पादरी

मुसळमान मत ९.	मह ∓मद	एक ईश्वर	अनेक	पाठक	फकीर
शंकर मत १०.	शंकर	एकब्रह्म	आनंदागे री आदि	शंकरभा ष्यादि पाठक	गिरिपुरि भारती आदि
रामानुज मत ११.	रामा नुज	एक ईश्वर रामचंद्र	अनेक	रामानुज मत पाठक	साधु वैश्वव
वल्लभ मत १२	बल्ल भाचा र्य	एक ईश्वर कुष्ण	अनेक	ब्छभ मत पाठक	तिस मतके साधु नही
कबीर मत १३.	कवी र	एक ईश्वर	अनेक	तन्मत पाठक	गृहस्थ वा साधु
नानक मत १४.	नान क	एक ईश्वर	अनेक	यंथ पाठकः	उदासी साधु
दाद्मत १५.	दादु	एक ईश्वर	सुंदर दा सादि	तत् ग्रंथ पाठक	दादू पंथी साधु
गोरख मत १६	गोर ख	एक ईश्वर	अनेक	तत् ग्रंथ पाठक	कानफटे योगी
वामीनारा यण १७.	सामा नारा ण	एक ईश्वर	स्त्रो और परिग्रह धारी	तत् ग्रंथ पाठक	रंगे वस्नवा- छे घोले व- स्नां वाछे

दयानंदमतद्या	एक ईश्वर	अस्ति	तन्मत पाठ	साधु
१८. नंद,			क	

इत्यादि इस तरे मतधारीयोंने पंच परमे-ष्टोकी जगे पांच २ वस्तु कख्पना करी है, इस बास्ते पंच परमेष्टोके विना अन्य कोइ सृष्टिका कर्त्ता सर्वज्ञ वीतराग ईश्वर नहीं है, निःकेवल दोकांको ग्रज्ञान ज्रमसें सृष्टि कर्त्ताक कष्टपना जत्पन्न होती है, पूर्व पक्त कोइ प्रश्न करे के जे-कर सर्वज्ञ वीतराग ईश्वर जगतका कर्ना नहीं है, तो यह जगत अपने आप कैसे जत्पन्न हुआ, क्योंकि हम देखतेहैं कर्ताके विना कुड़नो उत्पन्न नही होताहै, जैसें घमीयाखादि वस्तु. तिसका उत्तर-हे परीक्षको ! तुमकों हमारा अनिप्राय य थार्थ मालुम पमता नही है, इस वास्ते तुम कर्ता ईश्वर कहतेहो, जो इस जगतमें बनाइ हुइ वस्तुहै, तिसका कर्ना तो हमजी मानते है, जैसें घट, पट, शराव, **डदं**चन, घिमयाल, मकान, दाट, हवेली, संकल, जंजीरादि परंतु आकाश, काल, स्वज्ञाव, परमाणु, जीव इत्यादि वस्तुयां

किसीकी रची हुइ नहीं है, क्योंकि सर्व विद्वा-नोका यह मतहैके जो वस्तु कार्यरूप उत्पन्न होतीदै तिसका जपादान कारण अवइय होनां चाहिये. विना उपादानके कदापि कार्यकी उत्पत्ति नही होती है, जो कोइ विना उपादान कारणके वस्तुकी जल्पित मानता है, सो मूर्ख, प्रमाणका स्वरूप नही जानता है; तिसका कथन कोइ महा मृढ मानेगा, इस वास्ते आकाश १ आत्मा २ काल ३ परमाणु ४ इनका जपादान कारण कोइ नहींहै, इस वास्ते यें चारो वस्तु अनादि है, इ-नका कोइ रचनेवाला नहीं है, इस्सें जो यह क-इना है कि सर्व वस्तुयों ईश्वरने रचीहै सो मि-छ्याहै, श्रब होष वस्तु एछ्वी १ पानी २ अग्नि ३ पवन ४ वनस्पति ५ चलने फिरने वाले जीव रद्दे है, तथा पृथ्वीका जेद नरक, स्वर्ग, सूर्य, चंड, ग्रह, नक्तत्र, तारादि है, ये सर्व जम चैत-न्यके जपादानसें बने हैं, जे जीव श्रीर जम पर-माणुओंके संयोगसें वस्तु बनीहै, वे ऊपर एछवी ब्रादि लिख ब्रायेहै, ये पृथ्वी ब्रादि वस्तु प्रवाह-

सें ग्रनादि नित्यहै, ग्रोर पर्याय रूप करके ग्रनि-त्यहै, और यें जम चेतन्य अनंत स्वन्नाविक इा-क्तिवाले है, वे अनंत शक्तियां अपने १ कालादि निमित्तांके मिलनेसें प्रगट होतीहै, श्रोर इस ज-गतमें जो रचना पीछे हुइहै, और जो हो रहीहै, श्रीर जो होवेगी, सर्व पांच निमित्त उपादान का रणोंसें होतीहै, वे कारण येहहै, काल ? स्वजा-व २ नियति ३ कर्म ४ जद्यम ५; इन पांचोके सिवाय अन्य कोइ इस जगतका कर्ता और नि-यंता ईश्वर किसी प्रमाणसें सिष्ट नदी होताहै, तिसकी सिद्धीका खंमन पूर्वे पहिले सब लिख श्राएहै, जैसे एक बीजमें अनंत शक्तियांहै, बृक्तमे जितने रंग विरंगे मूल १ कंद २ स्कंघ ३ त्वचा ४ **ज्ञाखा ५ प्रवाल ६ पत्र ७ पुष्प ७ फल ए बीज** १० प्रमुख विचित्र रचना मालुम होतीहै, सो सर्व बीजमें शक्ति रूपसें रहतीहै, जब कोइ वी-जको जालके ज्ञस्म करे तब तिस बिजके पर-माणुयोमें पूर्वोक्त सर्व शक्तियां रहतीहै, परंतु बिना निमित्तके एकभी इक्ति प्रगट नही होतीहै,

जेकर बीजमें शक्तियां न मानीये तबतो गेहुंके बीजसें आंब और बंबूल मनुष्य, पशु, पक्षी आ दिन्नी जल्पन्न होने चाहिये. इस वास्ते सर्ववस्तु-योंमे अपनी २ अनंत शक्तियांहै. जैसा २ निमि-त्त मिलताहै तेसी २ शक्ति वस्तुमें प्रगट होतीहै, जैसें बीज कोठिमें पनाहै तिसमें वृक्षके सर्व अ वयवोंके होनेकी शक्तियांहै, परंतु बीअके काल विना श्रंकुर नहीं हो सक्ताहै; काखते। वृष्टि क-तुकाहै, परंतु जूमि श्रोर जलके संयोग विना श्रं-कुर नहीं हो सकाहै, काल जूमि जलतो मिलेहे परंतु विना स्वन्नावके कंकर बोवेतो अंकुर नही होवेहैं. बीजका स्वजाव १ काल १ जूमि ३ ज-लादितो मिलेहै, परंतु बोजमे जो तथा तथा ज वन अर्थात् होनेवाली अनादि नियतिके विना बीज तैसा लंबा चौमा श्रंकुर निर्विघ्नसें नहीं दे सक्ताहै, जो निर्विघ्नपणे तथा तथा रूप कार्यको निष्पन्न करे सो नियति, और जेकर वनस्पतिके जीवांने पूर्व जन्ममें ऐसे कर्म न करे होतेतो व-नस्पतिमे जत्पन्न न होते; जेकर बोनेवाला न होवे

तथा बीज स्वयं अपने जारीपणे करके एण्वीमें न पमेतो कदापि अंकुर जत्पन्न न होवे; इस वा स्ते बीजाकुंरकी जलितमें पांच कारणहै. काल? स्वजाव १ नियति ३ पूर्वकर्म ४ उद्यम ५ इन पांचोके सिवाय अन्य कोइ अंकुर उत्पन्न करने-वाला कोइ ईश्वर नहीं सिद्ध होताहै, तथा मनुष्य गर्जमें उत्पन्न होताहै तहांन्नी पांच कारणसेंही होताह, गर्ज घारणेके कालमेंही गर्ज रहे १, गर्ज की जगाका स्वजाव गर्ज धारणका होवें तोही गर्ज धारण करे २, गर्जका तथा तथा निर्विघ्नप-नेसें होना नियतिसेंदै ३, जीवोंने पूर्व जन्ममें मनुष्य होनेके कर्म करेहै तोही मनुष्यपणे जत्प न्न दोतेहै, ध माता पिता और कर्मसें आकर्षण न होवेतो कदापि गर्ज जलन न होवे, ५ इसीतरे जो वस्तु जगतमें जल्पन्न होतीहें सो इनही पांचो निमित्त कारणोंसें श्रौर उपादान कारणोसं होती है, श्रौर प्रथ्वी प्रवाहर्से सदा रहेगी श्रौंर पर्याय रूप करके तो सदा नाश और उत्पन्न दोती रही है; क्योंकि सदा ग्रसंख जीव प्रश्वीपरोही जत्पन्न

होतेहें, श्रौर मरतेहैं तिन जीवाके शरीरोंका पिं-मही एछवीहै. जो कोइ प्रमाणवेता ऐसे समऊ-ताई के कार्य रूप होनेसें पृथ्वी एक दिनतो अ-वदय सर्वया नाहा होवेगी, घटवत्. उत्तर-जैसा कार्य घटहै तैसा कार्य प्रश्वी नहीहै, क्योंकि घ टमें घटपणे उत्पन्न होनेवाले नवीन परमाण नही **ब्रातेहै, ब्रौर ए**ण्वीमें तो सदा एथ्वी **इारीरवा**ले जीव असंख उत्पन्न होतेहै, और पूर्वले नाज्ञा हो-तेहै. तिन असंख जीवांके इारीर मिलने और वि इननेसे पृण्वी तैसीही रहेगी. जैसे नदीका पाणी अगला २ चला जाता है; श्रोर नवीन नवीन श्रा नेसें नदी वैसीही रहतो है, इस वास्ते घटरूप कार्य समान पृथ्वी नहीं हैं, इस वास्ते पृथ्वी सदाही रहेगी और तिसके उपर जो रचना है; सो पूर्वोक्त पांच कारणोंसें सदा होती रहेगी. इस वास्ते पृष्ठवी अनादि अनंत काल तक रहेगी, इस वास्ते पृथ्वीका कर्त्ता ईश्वर नहीं है, श्रोर जो कितनेक ज्ञों कोव मनुष्य १ पशु १ पृष्ठवी ३, पवन ४, वनस्पतिकों तथा चंद्र, सूर्यकों देखके थ्रीर मनु-

ष्य पशुयोके शरीरकी हड्डीयांकी रचना आंखके पमदे खोपरीके दुकमे नशा जालादि शरीरोंकी विचित्र रचना देखकें हेरान होतेहै, जब कुड आगा पींबा नहीं सूफताहै, तब हार कर यद कह देतेहैं, यह रचना ईश्वरके विना कौन कर सक्ता है; इस वास्ते ईश्वर कर्ता श पुकारते है; परंतु ज गत् कर्ता माननेसें ईश्वरका सत्यानाइा कर देते है, सो नही देखतेहै. काणी इद्यनी एक पासेकी ही वेखमीयां खातीहै, परंतु हे जोखे जीव जेकर तेने अष्ट कर्मके १४० एकसौ अमतावीस जेद जाने होते, तो अपने बिचारे ईश्वरकों काहेको जगत कर्ना रूप कलंक देके तिसके ईश्वरत्वकी हानी करता. क्योंकि जो जो कख्पना ज्रोले लो कोनें ईश्वरमें करी है, सो सो सर्व कर्मद्वारा सिद्ध होती है, तिन कर्मांका स्वरूप संक्षेप मात्र यहां लिखते है, जेकर विशेष करके कर्म स्वरूप जा-ननेकी इन्ना होवे तदा षट्कर्म ग्रंथ १ कर्म प्रकः ति प्राभृत २ पंचसंयह ३ शतक ४ प्रमुख यंथ देख वेने, प्रथम जैनमतमें कर्म किसेकों कहते

तिसका स्वरूप लिखते है.

जैसें तेलादिसें शरीर चोपमीने कोइ पुरुष नगरमें फिरे, तब तिसके शरीर ऊपर सूक्ष्म रज पननेंसें तेलादिके संयोगसें परिणामांतर होके मल रूप होके शरीरसें चिप जाती है, तैसेही जी वांके जीवहिंसा १ जुठ २ चोरी ३ मेथुन ४ प-रिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ७ लोज ए राग १० देष ११ कलइ १२ अप्रयाख्यान १३ पैशुन १४ परपरिवाद १५ रतिश्ररति १६ मायामृषा१७ मिछ्यादर्शन शख्य १० रूप जो ग्रंतःकरणके प रिणाम है. वे तेलादि चीकास समान है, तिन-में जो पुत्रत जमरूप मिलताहै, तिसकीं वासना रूप सुद्धम कारमण शरीर कहतेहै; यह शरीर जीवके साथ प्रवाइसें अनादि संयोग सबंधवाला है; इस हारीरमें असंख तरेंकी पाप पुएय रूप कर्म प्रकृति समा रही है. इस शरीरको जैनमतमें कर्म कर्म कहते है. ग्रोर सांख्यमतवाले प्रकृति, ग्रोर वेदांति माया, और नैयायिक वैशेषिक अदृष्ट क इते, कोइक मतवाले क्रियमाण संचित प्रारब्ध-

रूप जेद करते है, बीद लोक वासना कहते है, विना समज्ञके लोक इन कर्मीको ईश्वरकी लीला कुदरत कहतेहै, परंतु कोइ मतवाला इन कर्मा-का यथार्थ स्वरूप नहीं जानता है, क्योंकि इनके मतमें कोइ सर्वज्ञ नही हुआ है, जो यथार्थ क-मींका स्वरूप कथन करे; इस वास्ते लोक भ्रम अज्ञानके वश होकर अनेक मनमानी जतपटंग जगत कत्तीदिककी कल्पना करके, श्रंघाधुंघ पंथ चलाये जातेहै, इस वास्ते ज्ञव्य जीवांके जानने वास्ते ब्राठ कर्मका किंचित् स्वरूप लिखते है. ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ वेदनीय ३ मो-इनीय ४ श्रायु ५ नाम ६ गोत्र ७ श्रंतराय ७ इनमेसें प्रथम ज्ञानावरणीयके पांच जेदहै; मति ज्ञानावरणीय १ श्रुतज्ञानावरणीय २ अवधिज्ञा-नावरणीय ३ मनःपर्यायज्ञानावरणीय ४ केवल-ज्ञानावरणीय ५. तहां पांच इंड्य ब्रोर बटा मन इन बदों द्वारा जो ज्ञान ज्ञत्पन्न दोवे, तिसका नाम मतिज्ञान है. तिस मतिज्ञानके तोनसौ ब-नीस ३३६ नेदहैं. वे सर्व कर्मग्रंथकी वृत्तिसें जा नने. तिन सर्व ३३६ जेदांका श्रावरण करनेबा-ला मतिज्ञानावरण कर्मका जेदहै, जिस जीवके आवरण पतला हुआहै. तिस जीवकी बहुत बुद्धि निर्मबहै; जैसें जैसे ब्रावरणके पतलेपणेकी ता-रतम्यताइ, तेसें तेसें जीवांमे बुद्धिकी तारतम्य-ताहै. यद्यपि मतिज्ञान मतिज्ञानावरणके क्रयोप शमसें होताहै, तोन्नी तिस क्रयापशमके निमिन मस्तक, शिर, विशाल मस्तकमे जेजा, चरबी, चोकास, मांस, रुधिर, निरोग्य हृदय, दिल नि-रुपड्व, और सूंठ, ब्राह्मी वच, घृत, दूध, शाकर, प्रमुख अज्ञो वस्तुका खानपानादिसें अधिक अ-धिकतर मतिज्ञानावरणके कायोपरामके निमित्त है; श्रौर शील संतोष मदा व्रतादि करणी, श्रौर पठन करानेवाला विद्यावान् गुरू, और देश काल श्रदा, ज्रत्साह, परिश्रमादि ये सर्व मतिज्ञानाव-रएके क्षायोपशम होनेके कारएहैं. जैसें जैसें जी वांकों कारण मिलतेहैं तैसी तैसी जीवांकी बुद्धि होतीहै. इत्यादि विचित्र प्रकारसें मतिज्ञानावर-रणीका जेदहै. इति मतिज्ञानावरणी १. दूसरा

श्रुतज्ञानावरण श्रुतज्ञानका त्राबरण श्रुतज्ञान, तिसकों कहतेहै, जो गुरु पासों सुनके ज्ञान होवे श्रीर जिसके बलसें अन्य जीवांकों कथन करा जावे, तिसके निमित्त पूर्वोक्त मित ज्ञानवाले जा नने, क्योंके ये दोनो ज्ञान एक साथही जत्पन्न होतेहैं; परं इतना विशेषहैं; मतिज्ञान वर्तमान विषयिक होता है, और श्रुतज्ञान त्रिकाल विषय होताहै; श्रुतज्ञानके चौदह १४ तथा वीस जेद२० है, तिनका स्वरूप कर्मग्रंथसें जानना. पठन पा वनादि जो अक्तरमय वस्तुका ज्ञानहै, सो सर्व श्रुतज्ञानहै, तिसका ग्रावरण ग्रागदन जो है, जि-सकी तारतम्यतासें श्रुतज्ञान जीवांकों विचित्र प्र कारका होताहै, तिसका नाम श्रुतज्ञानावरणीय है. इसके कायोपशमके वेही निमित्तहे, जौनसं मतिज्ञानके हैं; इति श्रुतज्ञानावरण १. तीसरा श्रवधिज्ञानका श्रावरण अवधिज्ञानावरणीय ३. ऐसेंही मनःपर्यायज्ञानावरण ४. केवलज्ञानावरण u, इन पांचों ज्ञानोमेंसें पिबले तीन ज्ञान इस कालके जीवांकों नहोदै: सामग्री श्रोर साधनके

श्रनावसें. इस वास्ते इनका स्वरूप नंदी श्रादि सिद्धांतोसें जानना. ये पांच ज्ञेद ज्ञानावरण कर्म केहै. यह ज्ञानावरणकर्म जिन कर्त्तव्योंसे बांधता है, अर्थात् उत्पन्न करके अपने पांचों ज्ञान शक्ति-यांका आवरण कर्ना है सो येहहै, मित, श्रुत प्र मुख पांच ज्ञानकी १ तथा ज्ञानवंतकी १ तथा इानोपकरण पुस्तकादिकी ३ प्रत्यनीकता अर्था त् अनिष्टपणा प्रतिकुलपणा करे, जैसें ज्ञान और ज्ञानवंतका बुरा दोवे तेसें करे १; जिस पासों पढा होवे तिस गुरुका नाम न बतावे, तथा जानी हुइ वस्तुकों अजानी कहे २; ज्ञानवंत तथा ज्ञा-नोपकरणका अग्निशस्त्रादिकसें नास करे ३; तथा ज्ञानवंत ऊपर तथा ज्ञानोपकरण ऊपर प्रदेष अं तरंग अरुची मत्सर ईष्या करे धः पढनेवालींको श्रन्न वस्न वस्ती देनेका निषेध करें, पढनेवादोंको अन्य काममें लगावे, बातोंमें लगावे, पठन विन्नेद करे ए; ज्ञानवंतकी अति अवज्ञा करे, यह हीन जाति वाखाहै, इत्यादि भर्म प्रगट करनेके वचन बोले, कलंक देवे, प्राणांत कष्ट देवे, तथा आचार्य

ज्याध्यायकी अविनय मत्सर करे, अकातमे स्वा-ध्याय करे, योगोपधान रहित ज्ञास्त्र पढें, अस्वा-ध्यायमें स्वाध्याय करे, ज्ञानके उपकरण पास ह्रयां दिसा मात्रा करे, ज्ञानोपकरणको पग लगावे, **ज्ञानोपकरण सहित मैथुन करे, ज्ञानोपकरणकों** धुंक लगावे. ज्ञानके इव्यका नाहा करे, नाहा क रतेको मना करे, इन कामोंसे ज्ञानावरणीय पंच प्रकारका कर्म बांघे; तिसके जदय क्रयोपरामसें नाना प्रकारकी बुद्धिवाले जीव होते महावत सं-यम तपसें ज्ञानावरणीय कर्म क्रय करे, तब के-वल्रज्ञानी सर्व वस्तुका जानने वाला होवे, इति प्रथम ज्ञानावरणी कर्मका संकेप मात्र स्वरूप.?

अय दूसरा दर्शनावरणीय कर्म तिसके नव ए जेदहै. चकुदर्शनावरण १ अचकुदर्शनावरण १ अवधिदर्शनावरण ३ केवलदर्शनावरण ४ निइा ५ निइानिइा ६ प्रचला ७ प्रचला प्रचला ७ स्त्यान-र्झी ए. अब इनका स्वरूप लिखतेहै. सामान्य रूप करके अर्थात् विशेष रहित वस्तुके जाननेकी जो आस्माकी शक्तिहै तिसकों दर्शन कदते है, तिनमें

नेत्रांकी शक्तिकों श्रावरण करे सो चकुदर्शनावर शीय कर्मका जेदहै; इसके क्रयोपशमकी विचि-त्रतासें श्रांखवाले जीवोंकी श्रांखद्वारा विचित्र त रेंकी दृष्टि प्रवर्ते हैं, इसके क्षयोपशम होनेमें वि-चित्र प्रकारके निमित्त है, इति चकुद्र्शनावरणी य १. नेत्र वर्जके शेष चारों इंडियोकों अचकु द र्शन कइते है, तिनके सुनने, सूंघने, रस खेने, स्पर्श पिग्राननेका जो सामान्य ज्ञानहै सो अचक् दर्शनहै; चारो इंड्योंकी शक्तिका आग्रादन करने वाला जो कर्म है तिसको अचकु दर्शन कहते है, इसके क्योपशम होनेमें अंतरंग बहिरंग विचित्र प्रकारके निमित्तहै, तिन निमित्तोद्वारा इस कर्म-का क्षय उपराम जैसा जैसा जीवांके होता है तैसी तैसी जोवोंको चार इंडियकी स्व स्व विष-यमें शक्ति प्रगट होती है, इति अचकुद्शनावर-णी २. अवधि दर्शनावरणीय, और केंवलदर्शना वरणीयका स्वरूप शास्त्रसें देख लेनां; क्योंकि सामग्रीके अजावसें ये दोनो दर्शन इस कालके-त्रके जीवांकों नहीं है, एवं दर्शनावरणीयके चार

नेंद हुए ध. पांचमा नेद निज्ञ जिसके उदयसें सुखें जागे सो निज्ञ १ जो बहुत दलाने चला-नेसें जागे सो निज्ञ निज्ञ २ जो बैठेकों नींद श्रावे सो प्रचला ३ जो चलतेकों यावे सो प्रचला प्र-चला ४ जो नींद्में जुठके अनेक काम करे नींद-में शरीरमें बल बहुत होवे है, तिसका नाम स्त्या-नर्जी निद्राहे ५. पांच इंडियांकें ज्ञानमे हानि क-रती है, इस वास्ते दर्शनावरणीयको प्रकृति है, एवं ए जेद दर्शनावरणीय कर्मके हुए, इस क-र्मके बांधनेके हेतु ज्ञानावरणीयकी तरे जानने, परं ज्ञानकी जगे दर्शन पद कहनां, दर्शन चक्त अचकु आदि, दर्शनी साधु आदि जीव, तिनकी पांच इंडियाका बुरा चिंते, नाहा करे अथवा स-म्मित तत्वार्थ द्वादशार नयचक्रवाल तर्कादि दर्श न प्रजावक शास्त्रके पुस्तक तिनका प्रत्यनीकप णादि करे तो दर्शनावरणीय कर्मका बंध करे, इति दूसरा कर्म २.

अय तीसरा वेदनीय कर्म तिसकी दो प्र-कृतिहै; साता वेदनीय १ असाता वेदनीय १

साता वेदनीयसें इारीरकों श्रपने निमित्तहारा सुख होताहै; श्रीर श्रसाता वेदनीयके नदयसें डुःख प्राप्त होता है. एवं दो जेदोंके बांधनेके कारण प्रथम साता वेदनीयके बंध करणेके कारण गुरु अर्थात् अपने माता पिता धर्माचार्य इनकी ज्रक्ति सेवा करे ? क्तमा अपने सामर्थके हुए दूसरायोंका अ-पराध सहन करना १ परजीवांकों इखी देखके तिनके डुःख मेटनेकी वांबा करे ३ पंचमहाव्रत अनुव्रत निर्दूषण पाले ४ दश विध चक्रवाल समा चारी संयम योग पालनेसें ५ क्रोंध, मान, माया, बोज, हास्य, रति अरति, शोक, जय, जुगुप्सा इनके जुद्य आया इनको निष्फल करे ६ सुपात्र दान, अञ्जय दान, देता सर्व जीवां उपर उपकार करे; सर्व जीवांका हित चिंतन करे 9 धर्ममें स्थिर रहे. मरणांत कष्टकेन्नी आये, धर्मसें चलायमान न होवे, बाल वृद्ध रोगीकी वैयावृत्त करतां धर्ममें प्रवर्त्ततां सहाय करे, चैत्य जिन प्रतिमाकी अबी र्जाक करतां सराग संयम पाबे; देशव्रतीपणा पाले, अकाम निर्जरा अज्ञान तप करें, सोच्य स त्यादि सुंदर श्रंतःकरणकी वृत्ति प्रवर्तावे तो साता वेदनीय कर्म बांधे, इति साता वेदनीयके बंध हेतु कहे १ इनसें विपर्यय प्रवर्त्ते तो श्रसाता वेदनीय बांधे १ इति वेदनीय कर्म स्वरूप ३.

अध चोषा मोहनीय कर्म तिसके अहावीस जेद है, अनंतानुबंधो कोध १ मान १ माया ३ लोज ४ अप्रत्याख्यान कोध ए मान ६ माया ७ क्षोज्ञ ७ प्रत्पाख्यानावरण क्रोध ए मान १० माया ११ सोज १२ संज्वलका क्रोघ १३ मान १४ माया १५ लोज १६ हास्य १७ रति १० अरति १ए शोक २० ज्ञय २१ जुगुप्सा २२ स्त्रीवेद २३ पुरुषवेद २४ नपुंसकवेद १५ सम्यक्त मोहनीय १६ मिश्र मोह-नीय १७ मिण्यात्व मोहनीय १०. अध इनका स्बरूप लिखतेहैं। प्रथम अनंतानुबंधी कोध मान माया लोज जां तक जीवे तां तक रहे; हटे नही तिनमेसें अनंतानुबंधी कोध तो ऐसाकि जाव जीव सुधो क्रोध न डोमे, अपराधी कितनो आ-धीनगी करे तों जी कोध न बोमे, यह क्रोध ऐ-साहै जेसे पर्वतका फटना फेर कदापि न मिले

मान पञ्चरके स्तंज्ञ समान किंचित् मात्रज्ञी न नमे, माया कठिन वांसकी जम समान सूधी न होवे, लोज कमिके रंग समान फेर जतरे नही. यै चारों जिसके नदयमें होवे सो जीव मरके न-रकमें जाता है; श्रीर इस कषायके नदयमें जी-वांकों सच्चे देवगुरु धर्मकी श्रदा रूप सम्यक्त नही होता है; ४ दूसरा अप्रत्याख्यान कषाय तिसकी स्थिति एक वर्षकी है. एक वर्ष तक कोध मान माया लोज रहै तिनमें क्रोधका स्वरूप पृण्वीके रेखा फाटने समान बमे यतनसें मिले, मान हा-मके स्तंज्ञे समान मुसकवसें नमे, माया मिंढेके सींगके बल समान सिधा कठनतासें होवें; लोज नगरकी मोरीके कीचमके दाग समान, इस क-षायके जदयसें देश वतीपणा न आवे और मरके पशु तीर्थचकी गतिमें जावे ए तीसरी प्रत्याख्या नावरण कषाय तिसकी स्थित चार मासकी है. क्रोघ वाबुको रेखा समान, मान काष्टके स्तंजे समान, माया बैलके मूत्र समान वांकी, लोज गामीके खंजन समान, इसके उदयसे शुध साधु

नही होताहै ऐसा कषायवाला मरके मनुष्य हो-ताहै १२ चौथी संज्वलनको कषाय, तिसकी स्थिति एक पक्तकी. क्रोध पाणीकी लकीर समा न, मान वांसकी शींखके स्तंत्रे समान, माया, बांसको बिद्धक समान, लोज हलदीके रंग स-मान, इसके जदयसें वीतराग श्रवस्था नही होती है. इस कषायवाला जीव मरके स्वर्गमें जाताहै १६ जिसके उदयसें हासी यावे सो हास्य प्रकृति १७ जिसके जदयसें चित्तमें निमित्त निर्निमितसें रित अंतरमें खुशी होवे सो रित १० जिसके छ-दयसें चित्तमे सनिमित्त निर्निमित्तसें दिलगोरी **उदासी उत्पन्न होवें सो अरति प्रकृति १**ए जिस-के जदयसें इष्ट विजोगादिसें चित्तमें जदेग जत्पन होवे सो शोक मोहनीय प्रकृति १० जिसके छ-दयसें सात प्रकारका ज्ञय जत्पन्न होवे सो ज्ञय मोहनीय ११ जिसके जदयसें मलीन वस्तु देखी सूग उपने सो जुगुप्सा मोहनीय १३ जिसके नदयसें स्त्रीके साथ विषय सेवन करनेकी इज्ञा जत्पन्न होवे, सो पुरुषवेद मोहनीय १३ जिसके

उदयसें पुरुषके साथ विषय सेवनेकी इन्ना उत्पन्न होवें, सो स्त्री वेद मोइनीय २४ जिसके जदयसें स्वी पुरुष दोनोंके साथ विषय सेवनेकी अजिला षा जत्पन्न होवे, सो नपुंसकवेद मोहनीय, १५ जिसके नदयसें शुद्ध देव गुरु, धर्मकी श्रद्धा न होवे सो मिण्यात्व मोहनीय १६ जिसके जदयसें श्रद देव गुरु धर्म अर्थात् जैनमतके ऊपर राग-जी न होवे, और देषजी न होवे, अन्य मतकीजी श्रद्धा न दोवे सो मिश्र मोहनीय २७ जिसके छ-दयसें शुद्ध देव गुरु धर्मको श्रद्धातो होवे परंतु सम्यक्तमें अतिचार लगावे सो सम्यक्त मोहनीय २० इन २० प्रकृतियोंमें ब्रादिकी २५ पचीस प्र-कृतिकों चारित्र मोइनीय कहतेहैं, और ऊपलो तीन प्रकृतियोंकों दर्शनमोहनीय कहते है एवं १७ प्रकृति रूप मोहनीय कर्म चौघा है, अध मोइनीय कर्मके बंध होनेके हेतु लिखते है. प्रथम मिष्या त्व मोहनीयके बंघ हेतु जन्मार्ग अर्थात् जे संसा रके हेतु हिंसादिक श्राश्रव पापकर्म, तिनकीं मोक्त हेतु कहे तथा एकांत नयसें निःकेवल क्रिया क-

ष्टानुष्टानलें मोक्त प्ररूपे तथा एकांत नयसें निःके वल ज्ञान मात्रसें मोक्त कहे ऐसेही एकले विन-यादिकसें मोक् कहें ? मार्ग अर्थात् अर्हत जा-षित सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्ररूप मोक्त मार्ग तिसभे प्रवर्त्तनेवाले जीवकों कुहेतु, कुयुक्ति, क-रके पूर्वीक्त मार्गसे भ्रष्ट करे १ देवद्रव्य ज्ञान इ-व्यादिक तिनमें जो जगवानके मंदिर प्रतिमादि के काम आवे काष्ट, पाषाण, मृतीकादिक तथा तिस देहरादिके निमित्त करा हुआ रूपा, सोना-दि धन तिसका हरण करे; देहराकी ज्ञिम प्रमु-खकों अपनी कर लेवे, देवकी वस्तुसें व्यापारक रके अपनी आजीवीका करे तथा देवइव्यका नाहा करे, शक्तिके हुए देवज्ञ्यके नाश करनेवालेको हटावे नही, ये पूर्वोक्त काम करनेवाला मिण्याह ष्टि होताहै, सो मिछ्यात्व मोइनीय कर्मका बंध करता है; तथा दूसरा हेतु तीर्थकर केवलीके अ-वर्णवाद बोले, निंदा करे तथा जले साधुकी तथा जिन प्रतिमाकी निंदा करे तथा चतुर्विष संघ साधु साधवी श्रावक श्राविकाका समुदाय तिस

की श्रुनज्ञानको निंदा श्रवज्ञा हीलना करता हुआ, और जिन शासनका नुडु।ह करता हुआ अयश करता कराता हुया निकाचित महा मिछ्यात्व मोहनीय कर्म बांधे. इति दर्शन मोहनीय के बंध हेतु. ॥ अय चारित्रमोइनीय कर्मके बंध हेतु लि खते है. चारित्र मोइनीय कर्म दो प्रकारका है, कषाय चारित्र मोइनीय १. नोकषाय चारित्र मो हनीय १. तिनमेंसें कषाय चारित्र मोहनीयके १६ सोलां जेदहे, तिन के बंध हेतु लिखते है. अनंता-नुबंधी क्रोध, मान, माया, लोक्रमे प्रवर्ते तो सो-लाही प्रकारका कषाय मोहनीय कर्म बांघे. अप्र-त्याख्यानमे वर्ते तो ऊपख्या बांरां कषाय बांधे. प्रत्याख्यानमें प्रवर्ते तो ऊपख्या आव कषाय बांघे, संज्वलनमें प्रवर्ते तो चार संज्वलनका कषाय बांधे. इति कषाय चारित्र मोहनोयकें बंध हेतु. नोकषाय हास्यादि तिनके बंध हेतु यह है, प्रथम हास्य हांसी करे, ज्ञांम कुचेष्टा करे, बहुत बोले तो हास्य मोहनीय कर्म बांधे १ देश देखनेके र-ससें, विचित्र कीमाके रससें, ग्रति वाचाल हो-

नेसें कामण मोहन ट्रणा वगेरे करे, कुतुहल करे तो रित मोहनीय कर्म बांधे १. राज्य जेद करे, नवीन राजा स्थापन करे, परस्पर लमाइ करावे, दूसरायोंकों अरित जन्नाट जन्पन्न करे, अशुज काम करने करानेमें जत्हाह करे, श्रीर शुज्र का-मके जत्साइकों जांजे, निष्कारण श्रार्नध्यान करे तो अरित मोहनीय कर्म बांघे ३. परजीवांकों त्रास देवे तो, निर्दय परिणामी जय मोहनीय कर्म बांधे ध. परकों शोक चिंता संताप उपजावे, तपावे तो शोक मोहनीय कर्म बांधे ए. धर्मी साधु जनोकी निंदा करे; साधुका मलमलीन गात्र देखि निंदा करे तो जुगुप्ता मोहनीय कर्म बांधे ६. इाब्द रूप, रस, गंध, स्पर्शरूप, मनगती वि-षयमें अत्यंताशक होवे, दूसरेकी इर्षा करे, माया मृषा सेवे, कुटिल परिणामी होवे, पर स्त्रीसें जोग करे तो जीव स्त्रोवेद मोहनीय कर्म बांघे ७. स-रल होवे, अपनी स्त्रीसें ऊपरांत संतोषी होवे, इर्षा रहित मंद कवायवाला जीव पुरुषवेद बांघेए तीव कषायवाला, दर्शनी दूसरे मतवालींका शोल जंग करे, तीव्र विषयी होवे, पशुकी घात करे, मिध्यादृष्टी जीव नपुंसकवेद बांघे ए. संयमीके दूषण दिखावे, असाधुके गुण बोले, कषायकी इ-दीरणा करता हुआ जीव चारित्र मोहनीय कर्म समुचय बांधे. इति मोहनीय कर्म वंध हेतु. यह मोहनीय कर्म मदिरेके नशेकी तरें अपने स्वरू-पर्से श्रष्ट कर देताहै. इति मोहनीय कर्मका स्व-रूप संक्षेप मात्रसें पुरा हुआ ४.

अथ पांचमा आयुकर्म, तिसकी चार प्रक-ति जिनके उदयसें नरक १ तिर्यंच १ मनुष्य ३ देव ४ जवमें खैंचा हुआ जीव जावे है, जेंसें च-मकपाषाण लोहकों आकर्षण करता है, तिसका नाम आयुकर्म. नरकायु १ तिर्येचायु २ मनुष्या यु ३ देवायु ४ प्रथम नरकायुके बंध हेतु कहतेहैं. महारंज चक्रवर्ती प्रमुखकी रुद्धि जोगनेमें महा मूर्जा परियद सहित, व्रत रहित अनंतानुबंधी कषायोदयवान् पंचेंडिय जीवकी हिंसा निशंक होकर करे, मदिरा पीवे, मांस खावे, चौरी करे, जूया खेले, परस्त्री और वेंस्या गमन करे, ज्ञिकार

मारे, कृतन्नी होवे, विश्वासघाती, मित्र डोही, **उ**त्सूत्र प्ररूपे, मिछ्यामतकी महिमा बढावे, रूश्र नील, कापोत लेइयासें अशुज्ज परिणामवाला जोव नरकायु बांधे १ तिर्यंचकी आयुके बंध हेतु यह है. गूढ हृदयवाला, अर्थात् जिसके कपटकी कि सीकों खबर न पमे, धूर्च होवे, मुखसें मीठा बोखे, हृदयमें कतरणी रखे, जूठे दूषण प्रकाशे, आर्त-ध्यानी इस लोकके अर्थे तप किया करे, अपनी पूजा महिमाके नष्ट होनेके ज्ञयसें कुकर्म करके गुरुत्रादिकके त्रागे प्रकाशे नहीं, जूठ बोले, क-मती देवे, अधिक सेवे, गुणवानकी इर्षा करै, श्रार्त्तध्यानी कृश्नादि तीन मध्यम वेदयावावा जीव तिर्यंच गतिका आयु वांधे. इति तिर्यंचायु १ अथ मनुष्यायुके बंघहेतु मिण्यात्व कषायका स्व-जावेही मंदोदयवाला प्रकृतिका जडिक धूल रेखा समान कषायोदयवाला सुपात्र कुपात्रकी परीक्ता विना विशेष यश कीर्त्तिकी वांग्रा रहित दान देवे, स्वजावे दान देनेकी तीव्र रुचि होवे, क्रमा, ग्रा-र्जव, मार्दव, दया, सत्य शौचादिक मध्यम गुणान

में वर्ते, सुसंबोध्य होवे, देव गुरुका पूजक, पूजा-प्रिय कापोत लेइयाके परिणामवाला मनुष्य ति-र्यचादि मनुष्यायु बांधे ३ अद्य देव आयु अविरति सम्यगदृष्टि मनुष्य तीर्यंच देवताका आयु बांघे, सुमित्रके संयोगसें धर्मकी रुचिवाला देशविरति सरागसंयमी देवायु बांघे, बालतप अर्थात् इःख-गर्जित, मोहगर्जित वैराग्य करके इष्कर कष्ट पं-चामि साधन रस परित्यागसें, अनेक प्रकारका अज्ञान तप करनेसें निदान सहित अत्यंत रोष तथा अहंकारसें तव करे, असुरादि देवताका आयु बांघे तथा अकाम निर्जरा अजाएवणे जूख, तृषा, शीत, जश्र रोगादि कष्ट सहनेसें स्त्री अन मिलते शोल पाले, विषयकी प्राप्तिके अन्नावसें विषय न सेंवनेसें इत्यादि श्रकाम निर्क्तरासें तथा बाल म-रण अर्थात् जलमें मूब मरे, अग्निसें जल मरे, ऊंपापातसें मरे, शुज्ज परिणाम किंचितवाला तो व्यंतर देवताका आयु बांघे, आचार्यादिककी अ-वज्ञा करे तो, किल्विष देवताका त्रायु बांघे, तथा मिथ्यादृष्टीके गुणांकी प्रशंसा करे, महिमा बढा

वे, अज्ञान तप करे, और अत्यंत क्रोधी होवे तो, परमाधार्मिकका आयु बांधे. इति देवायुके बंधहे-तु. यह ग्रायु कर्म इंिक बंधन समान है. इसके **उ**दयसें चारों गतके जीव जीवते है, श्रौर जब श्रायु पूर्ष दोजाता है तब कोइजी तिसकों नदी जीवा सक्ता है, जेकर आयुकर्म विना जीव जीवे तो मतधारोयोके अवतार पैगंबर क्यों मरते १ जितनी आयु पूर्व जन्ममें जीव बांधके आया है तितसें एक क्रण मात्रज्ञो कोइ अधिक नही जीव सक्ता है, और न किसीकों जीवा सक्ता है. मत-धारो जो कहते है इमारे अवतारादिकनें अमुक अमुककों फिर जीवता करा, यह वाते महा मि छ्याहै, क्योंकि जेकर उनमें ऐसी शक्ति होतीतो आप क्यों मर गये. १ सदा क्यों न जीते रहे १ ईशा महम्मदादि जेकर श्राज तक जीते रहतेतो हम जानते ये सच्चे परमेश्वरकी तर्फसें उपदेश क रने आये है. हम सब उनके मतमें दो जाते. मत धारीयोकों मेहनत न करनी पमतो, जब साधारण मनुष्योके समान मर गये तब क्योंकर इाक्तिमान

हो सक्तेहें १ ये सर्व जूठो वातोंकी अणघम गण्ये जंगली गुरुयोने जंगलीपणेसें मारीहें, इस वास्ते सर्व मिण्याहें. इति आयु कर्म पंचमा.

अथ बवा नाम कर्म, तिसका स्वरूप विख-तेंदें. तिसके ए३ तिरानवे ज्ञेददें. नरकगति नाम कर्म १ तिर्येच गति नाम २ मनुष्य गति नाम ३ देवगति नाम ४ एकेंडिय जाति १ द्वींडिय जातिश् तीनैडिय जाति ३ चार इंडिय जाति ४ पंचेंडिय जाति ५ एवं ए कदारिक इारीर १० वेंक्रिय इा-रीर ११ ब्राहारिक इारीर १२ तेजस इारीर १३ कार्मण ज्ञारीर १४ जदारिकांगोपांग १५ वैक्रियां-गोपांग १६ ब्राहारिकांगोपांग १७ जदारिकबंधन १० वेकिय बंधन १ए ब्राहारिक बंधन १० तैजस बंधन ११ कार्मण बंधन १२ ऊदारिक संघातन १३ वैकिय संघातन १४ ब्राइारिक संघातन १५ तैजस संघातन २६ कार्मण संघातन २७ वज्र क्रबन्न नराच संहनन २० क्रबन्न नराच संहनन २ए नराच संहनन ३० ग्रर्ड नराच संहनन ३१ कीलिका संहनन ३२ बेवर्त्त संहनन ३३ सम च तुरस्र संस्थान ३४ नियोध परिमंगल संस्थान ३५ सादिया संस्थान ३६ कुब्ज संस्थान ३७ वामन संस्थान ३० हुंमक संस्थान ३ए कृश्व वर्षा ४० नोख वर्ण ४१ रक्त वर्ण ४२ पीत वर्ण ४३ शुक्क वर्ण धर्म सुगंघ ४५ डुर्गंघ ४६ तिक्त रस ४७ क-दुक रस ४० कषाय रस ४ए ब्राम्स रस ५० मधुर रस ५१ कर्कश स्पर्श ५२ मृड स्पर्श ५३ इसका **५**४ जारी एए शोत स्पर्श ए६ जन्न स्पर्श एउ स्निग्ध स्पर्श ५७ रुक्त स्पर्श ५ए नरकानुपूर्वी ६० तिर्यचानुपूर्वी ६१ मनुष्यानुपूर्वी ६२ देवानुपूर्वी शुज्जविहायगति ६४ अशुज्जविद्दायगति ६५ परघात नाम ६६ उत्स्वास ६७ ब्रातप ६० उद्योत नाम ६ए अगुरु लघु ७० तीर्थंकर नाम ७१ निर्माण ७२ **उ**पघात नाम ७३ त्रसनाम ७४ बाद्र नाम ७५ पर्याप्त नाम ७६ प्रत्येकनाम ७७ स्थिर नाम ७० शुज्ञ नाम ७ए सुज्ञग नाम ७० सुस्वर नाम ७१ ब्रादेय नाम **७२ य**शकीर्ति नाम **७३ स्थावर नाम** सुद्धम नाम एए अपर्याप्त नाम ए६ साधारण नाम **७७ अस्थिर नाम ८८ अशुज्ज नाम ८ए इर्ज्जग**

नाम ए० इस्वर नाम ए१ अनादेय नाम ए१ अ यहा नाम ए३ ये तिरानवे जेद नाम कर्मके है. अब इनका स्वरूप लिखतेहैं. गतिनाम कर्म जिस कर्मके उदयसें जीव नरक १ तिर्यंच २ मनुष्य ३ देवताकी गति पर्याय पामं, नरकादि नाम कह-नेमें त्रावे, श्रोर जीव मरे तब जिस गतिका ग-तिनामकर्म, आयुकर्म मुख्यपणे और गतिनाम कर्म सहचारी होवे हैं, तब जीवकों आकर्षण क रके ले जातेहैं, तब वो जीव तिस गति नाम श्रौर श्रायु कर्मके वहा हुश्रा थका जहां उत्पन्न होना होवे तिस स्थानमें पहुंचेहैं. जैसें मोरेवाली सूइ-कों चमक पाषाण आकर्षण कर्ताहै और सूइ च मक पाषाणकी तर्फ जाती है, मोराजी सूइके सायही जाताहै, इस तरे नरकादि गतियोंका स्थान चमक पाषाण समान है, आयु कर्म और गतिना म कर्म लोहकी सूइ समान है, और जीव मोरे समान है बीचमें पोया हुग्राहै, इस वास्ते परन-वमें जीवकों श्रायु श्रीर गतिनाम कर्म से जातेहै, जेसा २ गतिनाम कर्मका जीवांने बंध करा है,

शुज वा अशुज तैसी गतिमें जीव तिस कर्मके **उदयसें** जा रहता है, इस वास्ते जो अज्ञानी-योने कल्पना कर रख्ती है कि पापी जीवकों यम और धर्मी जोवकों स्वर्गके दूत मरा पीछे ले जा तेहै तथा जबराइल फिरस्ता जीवांकों ले जाता है, सो सर्व मिछ्या कडपना है, क्योंकि जब यम श्रोर स्वर्गीय दूत फिरस्ते मरते होगे, तब तिन-कों कौन ले जाता होवेंगा, और जीवते। जगतमें एक साथ अनंते मरते और जन्मते, तिन सबके लेजाने वास्ते इतने यम कहांसे आते होवेंगे, श्रोर इतने फिरस्ते कहां रहते होवेगे १ श्रौर जीव इस स्थूल शरीरसें निकला पीने किसीकेन्नी इाथमें नही आताहै, इस वास्ते पूर्वोक्त कख्पना जिनोंने सर्वज्ञका शास्त्र नही सुना है तिन अज्ञानीयोंने करीहै. इस वास्ते मुख्य आयुकर्म और गतिनाम कर्मके जदयसेंही जीव परज्ञवमें जाताहै. इति ग तिनाम कर्म ध. अथ जातिनाम कर्मका स्वरूप लिखते हैं₋ जिसके **उदयसें** जीव एण्वी, पाणी, **ब्रा**य, पवन, वनस्पतिरूप एकेंड्य, स्पर्शेड्यिवा

से जीव ज्ञत्पन्न होतेहैं, सो एकेंड्य जातिनाम कर्म १ जिसके जदयसें दोइंद्रियवाले कृन्यादिपशें उत्पन्न होवे, सो द्वींडिय जातिनाम कर्म १ एवं तीनें इ कीमी श्रादि, चतुरिं इिय भ्रमरादि, पंचें-**ड्य नरक पंचेंद्रिय पशु गोमहिष्यादि मनुष्य दे-**वतापणे उत्पन्न होवे, सो पंचेंड्य जातिनाम कर्म. एवं सर्व ए जदारिक इारीर अर्थात् एकेंद्रिय, घीं डिय, त्रींद्रिय, चतुरिंडिय, पंचेंडिय, तिर्थंच मनु-ष्यके इारीर पावनेको तथा कदारीक इारीरपणे परिणामकी शक्ति, तिसका नाम ऊदारिक शरीर नाम कर्म १० जिसकी इाक्तिसें नारकी देवताका इारीर पावे, जिससें मन इज्जित रूप बणावे तथा वैक्रिय हारीरपणे पुजल परिणामनेकी हाक्ति सौ वैक्रिय हारीरनाम कर्म ११ एवं आदारिक लब्धी वालेके इारीरपणे परिणामावे १२ तेजस इारीर ब्रंदर इारीरमें जश्रता, ब्राहार पचावनेकी शक्ति-रूप, सो तैजस नाम कर्म १३ जिसकी शक्तिसें कर्मवर्गणाकों अपने अपने कर्म प्रकृतिके परिणा-मप्णे परिणामावे सो कार्मण इारीर नाम कर्म

१४ दो बाहु २ दो सायत ४ पीठ ५ मस्तक ६ नरुगती ७ नदर पेट ८ ये त्राव ग्रंग श्रोर श्रंगोके साथ लगा हुआ, जैसें दायसें लगी अंगुली साथ-वसें वगा जानु, गोमा आदि इनका नाम उपांग है, होष ब्रंगुलीके पर्व रेखा रोम नखादि प्रमुख श्रंगोपांगहै; जिसके नदयसें ये श्रंगोपांग पावे श्रोर इनपर्णे नवीन पुजल परिरामावे ऐसी जो कर्मकी शक्ति तिसका नाम ज्यांग नाम कर्महें. जदारी-कोपांग १५ वैक्रियापांग, १६ आहारिकोपांग, १७ इति उपांग नामकर्म ॥ पूर्वे बांध्या हुआ उदारि-क इारोरादि पांच प्रकृति और इन पांचोके नवी न बंध होतेको पिछले साथ मेलकरके बधावे जैसे राख खाखादि दो वस्तुयोंकों मिखा देते हैं, तेसह। जो पूर्वापर कर्मको संयोग करे, सो बंधन नाम कर्म शरीरोंके समान पांच प्रकारका है. जदारिक बंधन वैक्रियबंधन इत्यादि एवं, ११ प्रकृति हुइ. पांच इारीरके योग्य विखरे हुए पुजलांको एकते करे, पीछे बंधन नामकर्म बंध करे, तिस एकहे करणेवाली कर्म प्रकृतिका नाम संघातन नामक

में है, सो पांच प्रकारका है, जदारिक संघातन, वैक्रिय संघातन इत्यादि एवं, ३७ सत्ताइस प्रकृति हुइ, अथ जदारिक इारीरपणे जो सात धातु परि-शमी है तिनमें हामकी संधिको जो दृढ करे सो संहनन नामकर्म, सो व ६ प्रकारका है, तिनमेंसें जहां दोनो हाम दोनों पासे मर्कट बंध होवे, ति सका नाम नराच है, तिन दोनो हामोंके ऊपर तीसरा हाम पट्टेकी तरें जकम बंध होवे तिसका नाम रूपन्न है, इन तीनो हामके नेदनेवाली क-पर खीली होवे तिसका नाम वज्रहे, ऐसी जिस कर्मके उदयसें दामका संघी दढ होवे तिसका नाम वज्रकान नराच संहनन नामकर्म है. १८ जहां दोनों हार्नोंके छेहमे मर्कटबंध मिले हुए होवे, श्रोर उनके उपर तीसरे हामका पट्टा होवे, ऐसी हाम संधी जिस कर्मके जदयसें होवे सो कपन नराच संहनन नामकर्म १ए जिन हार्नोका मर्क टबंध तो होवे परंतु पट्टा ख्रीर कीलो न होवे, जि सके जदयसें सो नाराच संहनन नामकर्म, ३0 जहां एक पासे मर्कटबंध और दूसरे पासे खीदी

होवे जिस कर्मके उदयसें सो श्रर्ड नराच संहनन नाम कर्म ३१ जैसें खीखीसें दो काष्ट जोने होवे तेसें हामकी संघी जिस कर्मके जदयसें होवे, सो की लिका संहनन नामकर्म ३१ दोनो हामोंके वेहमे मिले हुए दोवे जिस कर्मसें सो सेवार्च संहनन नामकर्म ३३ जिस कर्मके जदयसें सामुद्रिक शा स्रोक्त संपूर्ण बक्तण जिसके शरीरमें दोवे तथा चारो ग्रंस बराबर होवे, पलाठी मारके बेंगे तब दोनों जानुका श्रंतर श्रोर दाहिने जानुसें वामा-स्कंघ और वामेजानुसें दाहिनास्कंघ और पदाठी पीवसें मस्तक मापता चारों मोरी बराबर होवे, भ्रोर बत्तीस खक्कण संयुक्त होवे, ऐसा रूप जिस कर्मके जदयसें होवे तिसका नाम सम चतुरस्व संस्थान नामकर्म ३४ जैसें वम वृक्तका ऊपल्या जाग पूर्ण होवेहै, तैसेही जो नाजीसें ऊपर संपू-र्ण तक्कणवाला शरीर दोवे और नाजीसें नीचे बक्तण दीन होवे, जिस कर्मके उदयसें सो नि-योघ परिमंनल संस्थान नामकर्म ३५ जिसका शरीर नाजीसें नीचे लक्क एयुक्त होवे, और नाजी

सें ऊपर तक्षण रहित होवे, जिस कर्मके उदय-सें सो सादिया संस्थान नामकर्म ३६ जहां द्वाय पग मुख य्रोवादिक जत्तम सुंदर होवे, श्रौर हृदय, पेट, पूंठ तक्षण हीन होवै जिस कर्मके उद्यसें सो कुब्ज संस्थान नामकर्म ३७ जहां हाथ पग लक्षण होन होवे, अन्य अंग लक्षण संयुक्त अहे होवे, जिस कर्मके उदयसें सो वामन संस्थान नामकर्म ३० जहां सर्व हारीरके अवयव लक्षण हीन होवे सो हुंमक संस्थान नामकर्म, ३ए जिस कर्मके जदयसें जीवका शरोर मषी, स्याही नीख समान काला होवे तथा इारीरके श्रवयव काले होवे सो कृष्णवर्ण नामकर्म ४० जिसके जदयसे जीवका शरीर तथा शरीरके अवयव सूयकी पुत्र तथा जंगाल समान नील अर्थात् हरित वर्ण होवे. सो नीलवर्ण नामकर्म ४१ जिसके उदयसें जीव-का इारीर तथा इारीरके अवयव खाख हिंगलुं स-मान रक्त होवे, सो रक्तवर्ण नामकर्म ४२ जिस कर्मके जदयसें जीवका शरीर तथा शरीरके ब्र-वयव पीत हरिताल, हलदी चंपकके फूलसमान

पीले होवे, सो पीतवर्ण नामकर्म ४३ जिस कर्म के जदयसें जीवका इारीर तथा इारोरके अवयव संख स्फटिक समान जज्वल होवे, सो शुक्लवर्ण नामकर्म ४४ जिसके जदयसें जीवके शरीर तथा शरीरके अवयव सुरन्नि गंघ अर्थात् कर्पूर, कस्तू री, फूल सरोखी सुगंधी होवे, सो सुरन्नीगंध ना मकर्म ४५ जिस कर्मके जदयसें जीवके शरीर तथा शरीरके अवयव इरिज्ञगंध लशुन मृतक श रीर सरीखी इरज्ञीगंध होवे, सो इरज्ञिगंघ ना-मकर्म ४६ जिसके जदयसें जीवका दारीर तथा इारीरके अवयव नींब चिरायते सरीसा रस होवे, सो तिकरस नामकर्म ४७ जिसके चद्यसें जीव का शरीरादि सूंठ, मरिचकी तरे कटुक होवे, सो कटुकरस नामकर्म ४८ जिसके नदयसें जी वका शरीरादि इरम, बहेमें समान कसायखारस होवे, सो कसायरस नामकर्म ४९ जिस कर्मके सरीखा खट्टा रस होवे, सो खट्टारस नामकर्म ५० जिस कर्मके जदयसें जीवके शरीरादि खांम, सा

करादि समान रस होवे, सो मधुर रस नामकर्म ५१ इति रस नाम कर्म जिसके नद्यसें जीवके शरीरमें तथा शरीरके अवयव किवन कर्कस गा यकी जीज समान होवे, सो कर्कस स्पर्श नाम कर्म ५२ जिसके जदयसें जीवका दारीर तथा शरीरके अवयव माखणकी तरे कोमल दोवे, सो मृड स्पर्श नामकर्म ५३ जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा अवयव अर्क तूलकी तरे हलकें होवे, सो लघु स्पर्श नामकर्म ५४ जिसके उदयसें लो हेवत् जारी इारीरके अवयव होवे, सो गुरु स्पर्श नामकर्म ५५ जिस कर्मके जदयसें जीवका द्वारीर तथा अवयव हिम बर्फवत् शीतल होवे, सो शीत स्पर्श नामकर्म ५६ जिसके उदयसें जीवका शरीर तथा अवयव जब्ण होवे, सो जब्ण स्पर्श नाम-कर्म ५७ जिस कर्मके जदयसें जीवका इारीर तथा इारीरावयव घृतकी तरे स्निग्ध होवें, सो स्निग्ध स्पर्श नामकर्म एए जिस कर्मके नदयसें जीवका **इारीरावयव राखकी तरे रूखे होवे, सो रुक्त स्पर्झा** नामकर्म ५ए इति स्पर्श नाम कर्म नरक, तियंच,

मनुष्य, देव ए चार जगें जब जीव गति नाम कर्मकें जदयसें बक बांकी गति करे, तब तिस जी वकों बांके जातेको जो अपने स्थानमें ले जावे, जैसे बैलके नाकमें नाथ तैसे जीवके श्रंतराल वक्र गतिमें अनुपूर्वीका उदय तथा जों जीवके हाथ पगादि सर्वे अवयव यथायोग्य स्थानमें स्थापन करे, सो अनुपूर्वी नामकर्म. सो चार प्रकारका है, नरकानुपूर्वी १ तिर्यचानुपूर्वी १ मनुष्यानुपूर्वी ३ देवतानुपूर्वी ४ एवं सर्व ६३ हूइ, जिसके जदय सें हाथी वृषज्ञकी तरे शुज्ज चलनेकी गति होवे, सो शुज्ज विद्याय गति ६४ जिस कर्भके उदयसें कंटकी तरे बुरी चाल गति होवे, सो अशुन वि हाय गति नामकर्म ६५ जिसके जदयसें परकी इाक्ति नष्ट हो जावे, परसें गंज्या पराज्ञव करा न जाय, सो पराघात नामकर्म ६६ जिसके उद यसें सासोस्वासके बेनेकी शक्ति जलव होवे, सो उत्स्वास नामकर्म ६७ जिसके उदयसें जी-वांका शरीर ज्रष्ण प्रकाश वाला होवे, सूर्य मंम-**बवत्, सो श्रातप नामकर्म ६८ जिसके उदयसें**

जीवका शरीर अनुष्ण प्रकाशवाला होवे, सो न योत नामकर्म, चंइ मंमलबत् ६ए जिसके नद-यसें जीवका शरीर अति जारी अति हलका न होवे, सो अगुरु लघु नामकर्म ७० जिसके नद-यसें चतुर्विध संघ तीर्थ थापन करकें तीर्थंकर प-दवी बहे, सो तीर्थकर नामकर्म ७१ जिस कर्मके **उदयर्से** जीवके शरीरमें हाथ, पग, पिंमी, साथ ल, पेंट, बाती, बाहु, गल, कान, नाक, होठ, दांत, मस्तक, केश, रोम शरीरकी नशांकी विचित्र र चना, श्रांख, मस्तक प्रमुखके पमदें यद्यार्थ यद्या योग्य अपने १ स्थानमें जत्पन्न करे होवे, संचयसें जेसें वस्तु बनतीहै नैसेही निर्माण कर्मके उदय-सें सर्व जीवांके इारोरों मे रचना होतीहै, सो नि-मीएकर्म ७२ जिसके उदयसें जीव अधिक तथा न्यून अपने शरीरके अवयव करके पीमा पामे, सो जपवात नामकर्म ७३ जिसके जदयसें जीव यावरपणा **बोमो हलने चलनेकी ल**ब्धि शक्ति पावे, सो त्रस नाम कर्म है ७४ जिस कर्मके ज-दयसें जीव सुद्धम इारीर बोमके बादर चक्क प्राह्म

शरीर पावे, सो बादर नामकर्म ७५ जिस कर्मके **जदयसे जीव प्रारंज करी हुइ व ६ पर्याप्ति अ-**र्थात् आदार पर्याप्ति १ शरीर पर्याप्ति १ इंहिय पर्याप्ति ३ सासोत्स्वास पर्याप्ति ४ न्नाषा पर्याप्ति ए मनः पर्याप्ति ६ पूरी करे, सो पर्याप्त नामकर्म ७६ जिसके नदयसें एक जीव एकही नदारिक शरीर पावे, सो प्रत्येक नामकर्म ७७ जिस कर्म-के जदयसें जीवके हाम दातादि हढ बंध दोवे, सो थिर नामकर्म ७० जिस कर्मके उदयसें ना-जिसें ऊपख्या जाग शरोरका पावे, दूसरेके तिस श्रंगका स्पर्श होवें तोजी बुरा न माने, सो शुज नामकर्म ७ए जिस कर्मके नदयसें विना नपका रके कस्वांन्नी तथा सबंध विना बल्लन खागे, सो सौन्नाग्य नामकर्म ८० जिस कर्मके नदयसें जी वका कोकलादि समान मधुर स्वर होवे, सो सु-स्वर नामकर्म ८१ जिस कर्मके नदयसें जीवका वचन सर्वत्र माननीय होवे, सो ब्रादेय नामकर्म ८१ जिस कर्मके जदयसें जगतमें जीवकी यश-कीर्ति फैंबे, सो यश कीर्ति नामकर्म ८३ जिस

कर्मके जदयसें जीव त्रसपणा बोमी स्थावर एण्वी, पानी, वनस्पत्यादिकका जीव हो जावे, हली चली न सके, सो स्थावर नामकर्म ८४ जिस कर्मके जदयसें सुहम इारीर जीव पावे, सो सुहम नामकर्म ८५ जिस कर्मके जदयसे प्रारंत्री हुइ पर्याप्ति पूरी न कर सके, सो अपर्याप्त नामकर्म. ८६ जिस कर्मके जदयसें अनंते जीव एक शरीर पामे, सो साधारण नामकर्म ८७ जिस कर्मके **उदयसें** जीवके शरीरमें लोह फिरे, हामादि सि-थल होवे, सो अधिर नामकर्म ८८ जिस कर्मके **उदयसें नाज्ञीसें नीचेका श्रंग उपांगादि पावे,** सो श्रशुज्ञ नामकर्म ८ए जिस कर्मके उदयसें जीव अपराधके विना करेही बुरा खगे, सो दौर्जाग्य नामकर्म ए० जिस कर्मके जदयसे जीवका स्वर मार्जार, ऊंट सरीखा होवे, सो इःस्वर नामकर्म ९१ जिस कर्मके उदयसें जीवका वचन श्रञ्जाजी होवे, तोन्नी लोक न माने सो अनादेय नामकर्म ९२ जिस कर्मके जदयसें जीवका अपयश अकी र्ति होवे, सो अपयश कीर्ति नामकर्म, ए३ इति

नामकर्म. ६.

अय नामकर्म बंध हेतु लिखते है ॥ देवं गत्यादि तीस ३० शुज्ज नामकर्मकी प्रकृतिका बंघक कौन होवे सो लिखते है. सरल कपट रहित होवे जैसी मनमें होवे तैसीही कायकी प्रवृत्ति होवे. किसीकों जी अधिक न्यून तोखा, मापा क रके न गो, परवंचन बुद्धि रहित होवे, ऋदिगार व, रसगारव, सातागारव, करके रहित होवे, पाप करता हुआ मरे, परोपकारी सर्व जन प्रिय क्तमा दि गुण युक्त ऐसा जीव शुन्न नामकर्म बांधे तथा अप्रमत्त यतिपणे चारित्रियो आहारकिक बांधे, १ और अरिहंतादि वीश स्थानककों सेवता हुआ तीर्थकर नामकर्मकी प्रकृति बांधे । और इन पू-र्वोक्त कामोसें विपरीत करे अर्थात् बहुत कपटी होवे, कूमा, तोखा, मान, मापा करके परकों वगे, परज़ेही, दिंसा, जूठ, चौरी, मैथुन, परिग्रहमें त त्पर होवे, चेत्य अर्थात् जिनमंदिरादिककी विरा धना करे, व्रतलेकर ज्ञय्न करे, तीनो गौरवमें मत्त होवे, हीनाचारी ऐसा जीव नरक गत्यादि अशु-

ज नाम कर्मकी ३४ चौतीस प्रकृति बांघे, येह सतसृ ६७ प्रकृतिकी अपेका करके बंध कथन करा, इति नामकर्म ६ संपूर्ण.

अय गोत्रकर्म तिसके दो जेद. प्रथम उंच गोत्र, विशिष्ट जाती, क्षत्रिय कास्यापादिक ज-यादी कुल उत्तम बल विशिष्ट रूप ऐस्वर्य तपो गुण विद्यागुए सहित होवे, सो जंबगोत्र १ तद्या जिकाचरादिक कुल जाती आदोक लंहे सो नी-चगोत्र २ अथ उंचगोत्रके बंध हेतु ज्ञान, दर्शन, चारित्रादोक गुण जिसमें जितना जाने, तिसमें तितना प्रकाशकर गुण बोले, और अवगुण देख के निंदे नही, तिसका नाम गुण प्रेक्तीहै, गुण प्रेक्ती होवे, जातिमद १ कुलमद २ बलमद ३ रूपमद ध सूत्रमद ए ऐश्वर्यमद ६ लाजमद ७ तपोमदण ये आठ मदकी संपदा होवे, तोज्ञी मद न करे, सूत्र सिद्धांत तिसके अर्थके पढने पढानेकी जिस कों रुचि होवे, निराहंकारसें सुबुद्धि पुरुषकों शास्त्र समजावे, इत्यादि परहित करनेवादा जीव जंज्ञ गोत्र बांघे, तीर्थंकर सिद्ध प्रवचन संघादिकका श्रं-

तरंगसें ज्ञकीवाला जीव जंञ्चगोत्र बांधे, इन पू-वींक्त गुणोसें विपरीत गुणवाला अर्थात् मत्सरी १ जात्यादि आठ मद सहित अहंकारके जदयसें किसीकों पढावें नहीं, सिद्ध प्रवचन अरिहंत चै-त्यादिककी निंदा करें, ज्ञक्ति न होवें, सो जीव हीन जाति नीच गोत्र बांधे ॥ इति गोत्रकर्म ७.

अय आठमा अंतराय कर्मका स्वरूप लिख तेहै, तिसके पांच जेदहै. जिस कर्मके जदयसें जीव शुद्ध वस्तु आहारादिकके हुएन्नी दान देने-की इन्नाज़ी करे, परंतु दे नही सके, सो दानांत-राय कर्म १ जिस कर्मके उदयसे देनेवालेके हूए-न्नी इष्ट वस्तु याचनेसेंन्नी न पावे. व्यापारादिमें चतुरन्नी होवे तोन्नी नफा न मिले, सो लान्नांत-राय कर्म २ जिस कर्मके जदयसें एक वार जोग ने योग्य फूलमाला मोदकादिकके हुएन्री न्रोग न कर सके, सो जोगांतराय कर्म ३ जिस कर्मके **उदयसें** जो वस्तु बहुत वार ज्ञोगनेमें श्रावे, स्त्री श्राज्नर्ण वस्त्रादि तिनके हूएजी वारंवार जोग न कर सके, सो जपन्नोगांतराय कर्म ध जिस कर्म

के जदयसें मिछ्या मतकी किया न कर सके, सो बाखवीर्यातराय कर्म १ जिसके जदयसें सम्यगृह ष्टी, देश वृत्ति धर्मादि क्रिया न कर सके, सो बात पंक्तित वीर्यांतराय कर्म, जिसके जदयसें सम्यग् दृष्टी साधु मोक्त मार्गकी संपूर्ण क्रिया न कर सके, सो पंक्तित वीर्यातराय कर्म. अथ अंतराय कर्मके बंघ हेतु लिखतेहे. श्री जिन प्रतिमाकी पुजाका निषेध करे, जत्सूत्रकी प्ररूपणा करे, अन्य जीवां कों कुमार्गमें प्रवर्तावे, हिंसादिक आठारइ पाप सेवनेमें तत्पर होवे तथा अन्य जीवांकों दान ला जादिकका श्रंतराय करे, सो जीव श्रंतराय कर्म बांधे. इति श्रंतराय कर्म ८.

इस तरें आठ कर्मकी एकसो अमतालीस १४० कर्म प्रकृतिके जदयसें जीवोंके द्वारीरादिक-की विचित्र रचना होतीहै, जैसें आहारके खाने सें द्वारीरमं जैसें जैसें रंग और प्रमाण संयुक्त हाम, नद्या, जाल, आंखके पमदे मस्तकके विचित्र अवयवपणें तिस आहारका रस परिणमता है, यह सर्व कर्माके जदयसें द्वारीरकी सामर्थ्यसें होता है, परंतु यहां ईश्वर नहीं कुछन्नी कर्ताहै, तैसेंही काल १ स्वजाव १ नियति ३ कर्म ४ जयम ५ इन पांचो कारणोंसें जगतकी विचित्र रचना हो रहीहै. जेकर ईश्वर वादी लोक इन पूर्वीक पांची के समवायको नाम ईश्वर कहते होवे, तब तो इमन्नी ऐसे ईश्वरकों कर्त्ता मानतेहै. इसके सि-वाय अन्य कोइ कर्ता नहीहै, जेकर कोइ कदे जै नीयोंने स्वकपोल कल्पनासें कर्माके जेद बना र-खेरै. यह कहना महा मिण्याहै, क्योंकि कार्यानु मानसें जो जैनीयोने कर्मके जेद मानेहै वे सर्व सिद्ध होतेहै, और पूर्वोक्त सर्व कर्मके जेद सर्वज्ञ वीतरागने प्रत्यक्ष केवल ज्ञानसें देखेहै. इन क-मींके सिवाय जगतकी विचित्र रचना कदापि नही सिद्ध होवेगी, इस वास्ते सुङ्घ खोकोकों अरिहंत प्रणीत मत यंगीकार करना उचितहै, और ईश्वर वीतराग सर्वे किसी प्रमाणसेंन्री जगतका कर्ना सिद्ध नही होताहै, जिसका स्वरूप ऊपर लिख आये है.

त्र. १५५-जैन मतके ग्रंथ श्री महावीर-

जीतें खेके श्री देविईगिणिक्तमाश्रण तक कंताय रहै क्योंकर माने जावे, और श्वेतांबर मत मूल का है और दिगंबर मत पीबेसें निकला, इस क धनमें क्या प्रमाण है.

ज.—जैन मतके आचार्य सर्व मतोंके आ-चार्योंसे अधिक बुद्धिमान थे, और दिगंबराचार्यों सें श्वेतांबर मतके आचार्य अधिक बुद्धिमान् आ त्मज्ञानी थे, अर्थात् बहुत कालतक कंग्राय ज्ञान रखनेमें शक्तिमान थे, क्योंकि दिगंबर मतके तोन पुस्तक धवल ७००० श्लोक प्रमाण १ जयधवल ६०००० श्लोक प्रमाण २ महाघवल ४०००० श्लोक प्रमाण ३ श्री वीरात् ६८३ वर्षे ज्यैष्ठशुदि ५ के दिन जूतवित १ पुष्पदंतनामें दो साधुयोंनें लिखे थे, और श्वेतांबर मतके पुस्तक गिणतीमें और पांचसौ त्राचार्योंनें मिलके त्रौर हजारों सामान्य साधुयोंने श्री विरात् ए०० वर्षे वस्नन्ती नगरीमें लिखे थे, और बौड्मतके पुस्तकतो श्री वीरात् थोमेसें वर्षों पीबेही लिखे गयेथे, जिनोकी बुद्धि

अलप थी तिनोनें अपने मतके पुस्तक जलदीसें लिख लीने, और जिनोकी महा प्रौढ धारणा क रनेकी शक्तिवाली बुिंदिथी तिनोंने पींग्नें लिखे. यह अनुमानसें सिंद्ध है, और दिगंबर मतमें श्री महावीरके गणधरादि शिंद्योंसें लेके एट उर्ष तकके काल लग हुए हजारों आचार्यों मेसें किसी आचार्यका रचा हुआ कोइ पुस्तक वा किसी पुस्तकका स्थल नहीं है, इस वास्ते दिगंबर मत पींग्नें जल्म हुआ है.

प्र. १५६-देवर्डिंगणिक माश्रमणनें जो ज्ञान पुस्तकोंमे लिखाहै, सो आचार्योंकी अविविन्न परं परायसें चला आया सो लिखा है, परं स्वकपोल किंदित नही लिखा, इसमें क्या प्रमाण है, जि समें जैनमतका ज्ञान सत्य माना जावे.

जनरख किनंगहाम साहिब तथा मा-कर हाँरनख तथा माकर बूखर प्रमुखोंने मथुरा नगरीमेंसे पुरानी श्री महावीरस्वामिकी प्रतिमा की पखांठी ऊपरसें तथा कितनेक पुराने स्तंजों ऊपरसें जो जूने जैनमत सबंधी खेख अपनी स्वड बुद्धिके प्रजावसें वांचके प्रगट करे है, और अंग्रे-जी पुस्तकोंमें ग्रापके प्रसिद्ध करेहै तिन जूने ले खोंसें निसंदेह सिद्ध होताहै कि. श्री महावीरजी सें लेके श्री देवर्द्धिगणिक्तमाश्रमण तक जैन श्वे-तांबर मतके श्राचार्य कंग्राय ज्ञान रखनेमें बहुत जयमी और आत्मज्ञानी थे, इस वास्ते इम जैन मतवाले पूर्वोक्त यूरोपीयन विद्वानोका बहुत ज-पकार मानते हैं, श्रौर मुंबइ समाचार पत्रवाला नी तिन लेखांकों बांचके अपने संवत् १ए४४ के वर्षाके चार मासके एक प्रतिदिन प्रगट होते प-त्रमें विखताहै कि, जैनमतका कल्पसूत्र कितनेक लोक कल्पित मानते थे, परंतु इन लेखोंसे जैन मतका कल्पसूत्र सञ्चा सिद्ध होता है.

प्र. १५७-व लेख की नसेंहे, जिनका जि-कर आप ऊपले प्रश्लोत्तरमें लिख आए है, और तिन लेखोंसें तुमारा पूर्वोक्त कथन क्योंकर सिद्ध होता है.

छ.—वे लेख जैसें माकर बूलर सादिबने सुधारके लिखेंदें और जैसे इमकों गुजराती जा

षातरमे जाषांतर कर्ताने दीयेहें तैसेंदी लिखतेहैं, येह पूर्वोक्त लेख सर ए. कनिंगदामके आचिंत-लोजिकल (प्राचीन कालकी रही हुइ वस्तुयों स बंधी) रिपोर्टका पुस्तक ८ ब्रावमेमें चित्र १३-१४ तेरमे चौद्वें तक प्रगट करे हुए मथुरांके शिखा वेख तिनमें केवल जैन साधुयोंका संप्रदाय आ-चार्योंकी पंक्तियां तथा इ। खायों लिखी हुइहै, के वस इतनाहो नही सिखा हुआहै, किंतु कल्पसु-त्रमें जे नवगण (गञ्च) तथा कुल तथा शाखायों कहीहै, सोन्नी लिखी हुइहै, इन लेखोंमे जो सं-वत् जिखा हुआ है, सो हिंडुस्थान और सीधीया देशके वीचके राजा कनिइक १ हविइक २ ऋौर वासुदेव ३ इनके समयके संवत् लिखे हुएहे और अब तक इन संवतोकी शरूआत निश्चित नही हुइहै, तोजी यह निश्रय कह सकते है कि येह हिंडुस्थान और सीथीया देशके राजायोंका राज्य इसवीसनके प्रथम सैकेके अंतरें और दूसरे सैके के पहिले पोणेजागर्से कम नही वरा सक्तेहै, क्यों कि कनिरक सन इहावीसनके ७० वा ७ए मे व

र्षमं गद्दी जपर बेंग सिद्ध हुआहै, और कितनेक बेखोंमे इन राजायोंका संवत् नही है, सो बेख इन राजायोंके राज्यसें पहिलेंका है, ऐसें माकर बूखर साहिब कहता है.

प्रथम लेख सुधरा हुआ नीचे लिखा जाता है. सिद्धं। सं २०। यामा १। दि १०+५। कोहि-यतो, गणतो, वाणियतो, कुलतो, वएरितो, शा-खातो, शिरिकातो, जनितो वाचकस्य अर्घसंघ सिंहस्य निव्वर्त्त नंदत्तिलस्य....वि.-लस्य कोढुं-बिकिय, जयवालस्य, देवदासस्य, नागदिनस्य च नागदिनाये, च मातु श्राविकाये दिनाये दानं। इ। वर्द्धमान प्रतिमा. इस पाठका तरजुमा रूप अर्थ नीचे लिखते है. "फतेद" संवत् १० का नश्र कालका मास १ पहिला मिति १५ ज्यवल (जय पाल)की माता बी....लाकी स्त्री दतिलको (बेटी) अर्थात् (दिन्ना अथवा दत्ता) देवदास और नाग-दिन्न अधवा नागदत्त) तथा नागदिना (अर्थात् नागदिन्ना अथवा नागदत्ता) की संसारिक स्त्री शिष्यकी बक्तीस कीर्तिमान् वर्डमानकी प्रतिमा

(यह प्रतिमा) कौटिक गन्नमें से वाणिज नामे कु लमें से वैरी शाखाका सीरीका जागके आर्थ संघ सिंहकी निर्वरतन है, अर्थात् प्रतिष्टित है.॥ इति माक्तर बूलर ॥

अध दूसरा वेख. नमो अरहंतानं, नमो सि **डानं,** सं. ६० + २ प्र. ३ दि. ५ एताये पुर्वायेरार कस्य अर्थककसघ स्तस्य शिष्या आतापेको गह वरी यस्य निर्वतन चतुवस्यर्न संघस्य या दिन्ना पिन्ना (न्नो. ?) ग. (? ? वैहिका थे दत्ति ॥ इ सका तरजमा ॥ अरहंतने प्रणाम, सिद्धने प्रणा-म, संवत ६१ यह तारीख हिंड्स्थान और सीधी श्रा वोचके राजायोंके संवत्के साथ सबंध नही रखती है, परंतु तिनोंसें पहिलेंके किसी राजेका संवत् है, क्योंकि इस लेखकी लिपी बहुत ग्रसल है. जश्न कालका तीसरा मास ३ मिति ५ ऊप-रकी तारीखमें जिस समुदायमें चार वर्गका स-मावेंश होताहै, तिस समुदायके उपन्नोग वास्ते अथवा हरेक वर्गके बास्ते एकैक हिस्सा इस प्र-माणुर्से एक। या। देनेमें आया था। या। यह क्या

वस्तु होवेगी सो मैं नहीं जानता हुं, पति ज्ञोग अधवा पति जाग इन दोनोंमेंसें कीनसा ज्ञब्द पिंसद करने योग्य है के नही, यहन्नी में नही कइ सक्ताहूं (आ) आतपीको गहवरीरारा (राघा) कारहीस आर्य-कर्क सघस्त (आर्य-कर्क सघशी त) का शिष्यका निर्वतन (होइके) वइहीक (अ थवा वंइदीता) की बक्तीस, यह नाम तोमके इस प्रमाणे अलग कर सक्ते है, आतपीक-श्रीगइब-आर्य (पींडेके जागमें यह प्रगट हैं कि निर्वतन याके साथ एक ही विज्ञिक्तिमें है, तिस वास्ते अन्य दूसरे लेखोमें जी बहुत करके ऐसीही पड़ितके लेख विखे हुए है, निर्वर्तयतिका अर्थ सामान्य रीते सो रजु करता है, अथवा सो पूरा करता है ऐसा है, तिससें बहुत करके ऐसे बतलाता है कें दीनी हुइ वस्तु रजु करनेमें ग्राइषी, ग्रर्थात् जिस ग्रा चार्यका नाम ग्रागे ग्रावेगा तिसकी इन्वासें ग्रर्प ण करनेमें आइथी, अथवा तिससें सो पूरी कर-नेमें ब्राइद्यो. गणतो, कुलतों इत्यादि पांचमी वि जितके रूप वियोजक अर्घमें लेने चाहिये, स्पेइ-

जरका संस्कृतकी वाक्य रचनाका पुस्तक ११६ । ? देखो । इति माक्तर बूलर. अय तोसरा लेख॥ सिइं मदाराजस्य कनिइकस्य राज्ये संवत्सरे नवमें ॥ए॥ मासे प्रश्न १ दिवसे ए अस्यां पूर्वाये कोटियतो, गणतो, वाणियतो, कुलतो, वइरीतो, साखातो वाचकस्य नागनंदि सनिर्वरतनं ब्रह्मधु-तुये ज्रिहिमितस कुटुंबिनिये विकटाये श्री वर्डमा नस्य प्रतिमा कारिता सर्व सत्वानं दित सुखाये, यह तेख श्री महावीरकी प्रतिमा ऊपरहै ॥ इस का तरजुमा नीचे लिखतेहै ॥ फतेह महाराजा कनिइयके राज्यमें ए नवमें वर्षमेंका ? पद्धिले महीनेमें मिति ५ पांचमीमें ब्रह्माकी बेटी और जहिमित (जहिमित्र) को स्त्री विकटा नामकीनें सर्व जीवांके कख्याण तथा सुखके वास्तें कीर्त्ति-मान वर्डमानकी प्रतिमा करवाइ है, यह प्रतिमा कोटिक गएा (गञ्च) का वाणिज कुलका और व इरी शाखाका आचार्य नागनंदिकी निर्वतन है, (प्रतिष्टितदें), अब जो हम कल्पसूत्र तर्फ नजर करीये तो तिस मूख प्रतके पत्रे । ए१- ७१ । इस.

वी. इ. वाख्युम (पुस्तक) १२ पत्रे १ए१, हमकों मालम होताहैकि सुठिय वा सुस्थित नामे आ-चार्य श्री महावोरके श्राठमे पट्टके अधिकारीनें कौटिक नामे गण (गञ्च) स्थापन कराथा, तिसके विज्ञाग रूप चार झाखा तथा चार कुल हूए, जि सकी तीसरी ज्ञाखा वइरोधी और तोसरा वाणि ज नामे कुलथा, यह प्रगट हैकि गण कुल तथा शाखाके नाम मथुरांके लेखोंमें जो लिखेहै वे क खपसूत्रके साथ मिलते आतेहैं. कोटियकुंबक को मोयका पुराना रूपहै, परंतु इस वातकी नकस बेनी रिसकहैकि वइरी शाखा सीरीकान्नती (स्त्री कान्निक) जो नंबर ६ के लेखमें लिखी हुइहै ति सके जाएका कटपसूत्रके जाननेमें नही था, अ-र्थात् जब कल्पसूत्र हुआया तिस समयमें सो जाग नही था. यह खाती स्थान ऐसाहैकि जो मुइको दंत कथा (परंपरायसें चला आया कथन) सें विखीहर यादगीरीसें मालुम होताहै. इति मा क्तर बूबर ॥

अथ चौथा **लेख ॥ संवत्सरे ए**ण व......

स्य कुटुबनि. वदानस्य वोधुय...क...गणतावहुकतो, कालातो, मञ्जमातो, शाखाता.... सनिकाय न्नतिगालाए श्रवानि...सिन्ध्नस ५ हे १ दि १० + २ अस्य पूर्वा येकोटो....इस लेखकी लीनी हुइ नकल मेरे वसमे नहींहै, इस वास्ते इसका पूर्ण रूप में स्थापन नहीं कर सकताहूं, परंतु पंक्तिके एक दुकमेके देखनेसें ऐसा अनुमान हो सक्ताहै के यह अर्पण करनेका काम एक स्त्रीसें हूआया, ते स्त्री एक पुरुषको वहु (कुटुंबनो) तरी के और दूसरेके बेटेकी बहु (वधु) तरीके लिखने में आइयो।। दूसरी पंक्तिका प्रथम सुधारे साथ बेख नीचे लिखे मूजब होताहै ॥ कोटोयतो गण तो (प्रश्न) वाहनकतो कुलतो मजामातो साखा-तो....सनीकायेके समाजमें कोटोय गन्नके प्रश्न-वाहनकी मध्यम शाखामेंके कोटीय और प्रश्नवा हनकये दो नाम होवेंगे, ऐसें मुऊकों निसंदेइ मालुम होताहै, क्योंकि इस वेखकी खाखी जगा तिस पूर्वोक्त शब्द विखनेसे वरावर पूरी होजाती है, और दूसरा कारण यदहैकि कख्पसूत्र एस.

वो. इ. पत्र-१ए३ मेमें मध्यम शाखा विषयक हकीकतन्नी पूर्वोक्तही सूचन करतीहै, यह कछ्प सूत्र अपनेकों एसे जनाताहैकि सुस्थित और सु-प्रतिबुधका दूसरा शिष्य प्रीयप्रंथ स्थिवरें मध्यमा ज्ञाखा स्थापन करोची, हमकों इन बेखोपरसे मा तुम होताहैके प्रोफेसर जेकूबीका करा हुआ गण, कुल तथा शाखायोंकी संज्ञाका खुलासा खराहै, श्रीर प्रथम संज्ञा शाला बतातोहै, दूसरी श्राचार्यों की पंक्ति और तीजो पंक्तिमेंसे अलग हो गइ, शाखा बतावेहैं, तिससें ऐसा सिद्ध होता हैं, कल्प सूत्रमें गण (गञ्च) तथा कुल जणाया विना जो शाखायोंका नाम लिखताहै, सो शाखा इस ज-परख्ये पिछले गणके ताबेकी होनो चाहिये, और तिसको ऊलि तिस गछके एक कुलमेंसें हुइ होइ चाहिये, इस वास्ते मध्यम शाखा निसंदेह कोटिक गर्झमें समाइ हुइथी, श्रोर तिसके एक कुलमेंसें फटी हुइ वांकी शाखायी के जिसके बी चका चौषा कुल प्रश्नवादनक अर्थात् पणहवाद णय कदवाताहै, इस अनुमानकी सत्यता करने

वाला राजहोखर अपने रचे प्रबंध कोहामें जो कोश तिनोंमें विक्रम संवत् १४०५ में रचा है, तिसकी समाप्तिमें अपनी धर्म सबंधी नुदाद वि षियक लिखो हुइ इकोकतर्से साबूत होतीहै, सो अपनेकों जनाता है कि मैं कोटिक गए। प्रश्नवा हन कुल मध्यम ज्ञाखा हर्षपुरीय गच्च श्रौर मल धारी संतान, जो मलधारी नाम अज्ञयदेवसूरि-कों विरद मिला था, तिसमेंसे हुं॥ १, २, के पिड ते शब्दोंको सुधारे करनेमें मे समर्थ नहीहुं, परं तु इतना तो कइ सक्ताहुंके यह बक्तीस स्तंन्रोकी **बिखी हुइ माबुम होतो है, ५, कोटिय ग**ण अंत नंबर २ में लिखा हुआ मालुम होताहै, जहां १, १, को २ दूसरी तर्फकी यथार्थ नकस नोचे प्र-माणे वंचातीहै, सिद्ध=स ५ हे १ दी १०+२ अस्य पुरवाये कोटो....सर ए. कनिंगहामकी लोनी हुइ नकलसें मैं पिडले शब्द सुधार सक्ताहूं, सो ऐसें अस्यापुरवाये कोट (ीय) मालुम होता है, परंतु टकारके ऊपरका स्वर स्पष्ट मालुम नही होता है, श्रोर यकारके वामे तर्फका स्थान थोमासाही मा

लुम होता है ॥ ६ एक आगेके गणका तथा ति-सके एक कुलके नामोंका अपभ्रंसरूप नंबर १० वाला चित्र चौदवेमें १४ मालुम होता है, जहां यथार्थ नकल नीचे लिखे प्रमाणे वांचनेमें आती है।। पंक्ति पहिलो।। स ४०+७ य २ मी २० ए-तासय पुरवायेवरणेगतीपेतीवमीकाकुलवचकस्य रेहेनदीस्यसासस्यसेनस्यनीवतनंसावकद् ॥ पंक्ति दूसरी ॥ पशानवधयगोह.. ग. ज....प्रपा.. ना.. मात.... ॥ मैं निसंदेह कहताहूंके गती जूलसें वांचनेमें आया है, और सो खरेखरा गणे है, जे-कर इसतरें होवेतो वरणेजो इस सरीषादी शब्द चारणेके वदते जूलतें वांचनेमें आया होना चा-हिये, क्योंकि यह गण जो कख्पसूत्र एस. वी.इ. वाख्युम पत्रे १ए१ प्रमाणे आर्य सुद्दितका पांच मा शिष्य श्री गुप्तलें स्थापन हूआथा, तिसका दूसरा कुल प्रीतिधर्मिक है, (पत्रे. १ए१) यह स इजरें मालुम होता हैकि, यह नाम पेतिविमक कुषके श्राचार्यका संयुक्त नाम पेतिविमक कुल वाचकस्यमें गुप्त रहा हुआ है. जोके पेतिविमक

संज्ञवित शब्दहै, और संस्कृत प्रइति वर्मिकके दर्शक दाखल प्रीतिवर्मनका साधिक शब्द तिहत गिषातीमें करीएतोजी मैं ऐसे मानताहूं के यह यथार्थ नकलको खामो ऊपर तथा ध ख्रीर व की बीचमें निजीकके मिलते हुए ऊपर विचार कर-तां, सो बदलाके पेतिधमिक होना चाहिये, वांच णेमें दूसरी जूल यह आचार्यके नाममें जहां इ के जपर ए--मात है सो ग्रसबी पिग्ने व ग्र-क्तरके पेटेंकी है, इस नामका पहिला जाग अ-वस्य रेहे नही था, परंतु रोह था के जो रोह गुप्त, रोहसेन और अन्य शब्दोंमें मालुम पमता है. दू-सरी पंक्तिमें योमासादी सुधारनेका है, जो प्रपा यह अक्तर शुद्ध होवें और तिनका शब्द बनता होवे, तबतो अर्पणकरा हुआ पदार्घ एक पाणी पीनेका ग्राम होना चाहिये, अब में नीचे लिखे मुजब थोनासा बीचमें प्रक्षेप करना सूचन कर-ताहुं ॥ स ४७ य २ मि २० एतस्ये पुरवाये चार-षोगणे पेतीधमीक कुलवाचकस्य, रोइनदीस्य, सिसरय, सेनस्य, निबतनं सावक. दर......

....प्रपा (दी) ना....इसका तरजुमा नीचे जि-खते है ॥

संवत् ४७ जण्ण कालका मदीना १ दूसरा मिति १० ऊपर विखी मितिमें यह संसारी शिष्य द....का...।....यह एक पाणी पीनेका ठाम देनेमें आयाथा, यह रोहनदी (रोहनंदि) का शिष्य श्रोर चारण गणके पेतिधमिक (प्रइतिधर्मिक) कु लका **आचार्य सेनका निवतन (है) ॥ ए पि**छला **बेख जो ऐसीहो रीतीसें कल्पसत्रमें** जनाया हुत्रा एक गएा कुल तथा शाखाका कुछक अपभ्रंस और करे हुए नामाकों बतलाता है, सो नंबर २० चित्र १एका लेख है, तिसकी ग्रसली नकल नीचे लिखे मूजब वंचातो है ॥ पंक्ति पहिली ॥ सिष्ट न नमो श्ररहतो मदावीरस्ये देवनासस्य राज्ञा वामुदेवस्य संवतसरे । ए.+ए। वर्ष मासे ४ दिवसे १०+१ ए तास्या॥ पंक्ति दूसरी ॥ पूर्ववया अर्यरेहे नियातो गण पुरीध, का कुल व पेत पुत्रीका ते शाखातो गणस्य अर्थ-देवदत्त. वन. ॥ पंक्ति तीसरी ॥ रयय-व्रोमस्य ॥ पंक्ति ४ ॥ प्रकगीरीणे ॥ पंक्ति

ए मी ॥ किइदिये प्रज. ॥ पंक्ति ६ वही ॥ तस्य प्र वरकस्यधीतु वर्णस्य गत्व कस्यम. युय मित्र [१] स.....दनगा ॥ पंक्ति ७ मी ॥ ये...वतोमइ तीसरी पंक्तिसें वेके सातमी पंक्तिताइंतो सुधारा हो सके तैसा है नहीं, और मैं तिनके सुधारने-को मेहनतन्त्री नहीं करता हूं, क्योंके मेरे पास मुऊकों मदत करे तैसी तिसकी खीनी हुइ नक य नहीं है, इतनोद्दो टीका करनी बस है के उठी पंक्तिमें बेटीका शब्द धितु और तिस पीवेका म. युयसो बहुलतासें (माताका) मातुयेके बदले जू तसें बांचनेमें आया है, सो लेख यह बतलाता है, के यह अर्पणजी एक स्त्रोने करा या ॥ पंक्ति २। ३ ॥ दूसरी तीसरीमें लिखे हुए नामवाले आचा योंके नामोकों यह बक्तीस साथका सबंध अंघेरेमें रहता है पिछले बार बिंड्येकी जगे दूसरा नम-स्कार नमा जगवतो महावीरस्यकी प्रार्थे रहो हुइ है, प्रथम पंक्तिमें सिद्यों के बदले निश्चित शब्द प्रायें करके सिद्धं है, सर ए. कनिंगहामे आ बांचा हुआ अक्तर मेरी समऊ मृजब विराम के सांधें

म है, दूसरा महावीरास्येकी जों महावीरस्य घरना चाहिये, दूसरी पंक्तिमें पूर्व वयाके बदले पूर्ववाये गणके बदले गणतो, काकुलवके बदलेण काकुलतोण टे के बदले पेतपुत्रिकातो, और गण-स्यके वदले गणिस्य वांचनेकी जरुरीश्रात हरेक कोइकों प्रगट मालुम परेगो, नामोके सबंघमें अर्य-रेहनीय अशक्य रूपहे, परंतु जेकर अपने ऐसे मानीयेके इकी जपर इका असल खरेखरा **विग्ने चिन्हके पेटेका हैं, तद पीग्ने सो** अर्य-रोइनिय (ब्रार्य रोहनके ताबेका) ब्रथवा ब्रार्य रोइनने स्थाप्या हुआ, अर्थात् संस्कृतमें आर्य रो इए होता है, इस नामका आचार्य जैन दंत क-यामें अज्ञीतरे प्रसिद्ध है, कल्पसूत्र एस. वी. इ. पत्र १ए१ में लिखे मूजब सो आर्य सुहस्तिका पहिला शिष्य था, और तिसने नदेह गएा स्थाप न करा था. इस गणकी चार शाखा श्रीर बकुल हुएथे, तिसकी चौथी शाखाका नाम पूर्स पत्रि-का मुख्यकरके तिसके विस्तारकी बाबतमें इस लेखके नाम पेतपुत्रिकाके साथ पायें मिखता आ

ताई, और यह विज्ञा नाम सुधारके तिसकों पोनपत्रिका लिखनेमें मैं शंकान्नी नही करताहूं, सोइ नाम संस्कतमें पौर्स पत्रिकाकी बराबर हो वेगी, श्रोर सो व्याकरण प्रमाणे पूर्ण पत्रिका क-रते हूए अधिक शुद्धनाम है, इन बहों कुर्लोमेसें परिहासक नामन्नी एक कुलहै, जो इस बेखमें कर गए हुए नाम पुरिघ-क के साथ कुंबक मिल तापणा बतलाताहै, दूसरे मिलते रूपों ऊपर वि चार करता हुआ मैं यह संज्ञवित मानताहूं के, यह पिग्नदा रूपपरिदा.क के बदले भूलसें वांच-नेमें आयाहै; दूसरी पंक्तिके अंतमे पुरुषका नाम प्रायें उठी विज्ञिक्तमें होवे, श्रोर देवदत्त व सुधा-रके देवदतस्य कर सक्तेहै ॥ ऐसे पूर्वीक सुधारे-सें प्रथम दो पंक्तियां नीचे मूजब होतीहै ॥ १ सिंद (म्) नमो अरहतो महावीर (अ) स्यू (अ) देवनासस्या. १, पूर्व्व्, (अ।) य् (ए) अर्य्य-र् (अ) ह् (अ) नियतांगेण (तो) प् (अ) रि (हास) क् (अ) कुल (तो) प् (ओन्) अप् (अ) त्रिकात् (श्रो) साखातोगण (इ) स्य श्रर्य्य-देवदत्त (स्य)

न.....इसका तरजुमा नीचे विखे मुजब होवेगा.

"फतेह" देवतायोंका नाश करता अरहत महावीरकों प्रणाम (यह गुण वाचक नामके ख रेपणेमें मेरेकों बहुत शकहै, परंतु तिसका सुधा रा करनेकों में असमर्थहूं) राजा वासुदेवके संव-त्के एए मे वर्षमें वर्षाऋतुके चौथे महीनेमें मिति ११ मीमें इस मितिमें.....परिहासक (कुल) में कापोन पत्रिका (पौर्सपत्रिका) शाखा का अरय्य-रोहने (आर्यरोहने) स्थापन करी शाला (गएा) मेंका अरयय देवदत (देवदत्त) ए शालाका मुख्य गणि॥ येद लेख एकख्ने देखनेसें यह सिद्ध करतेहैं के मथुरांके जैन साध्योंने संवत् ५ सें एए अठानवें तक वा इसवीसन ए३। वा **08 सें लेके सन इसवी !६६ वा १६७ के बीचमें** जैनधर्माधिकारी हुदेवालोंने परस्पर एक संप क राष्ट्रा, और तिनमेसं कितनेक गन्नोंमें मतानुचा रीयोमें विज्ञाग पमात्रा, और सो ज्ञाग हरेक शाला (गण) का कितनेक तिसके अंदर जाग हू एथे. जवर लिखे हूए नामों वाले पुरुषांको वाचक

अथवा आचार्यका इलकाब मिलताहै, जो बुव्हिष्ट जाणकके साथ मिलताहै और सो इलकाब (पद वीका नाम) बहुत प्रसिद्ध रीतीसें जैनके जो यति लोक साधु धर्म संबंधी पुस्तकों श्रावक साधुयों कों समजने लायक गिणनेमे आतेथे तिनको दे-नेमं आतेथे, परंतु जो साधु गिष (आचार्य) एक गञ्चका मुखीया कइनेमें त्राताया, तिसका यह जारो इलकाब था, श्रौर हालमें जी विबली रीती प्रमाणे वमे साधु मुख्य ब्राचार्यकों देनेमें ब्राता है. शाखा (गणो) मेसें कोटिक गणके बहुत फांटे है, और तिसके पेटे जाग होके दो कुल, दो सा खायों और एक जन्ति हुआहै, इस वास्ते तिसका बमा लंबा इतिहास होना चाहिये, और यह क हना अधिक नही होवेगा, क्योंकि लेखोंके पुरावे जपरसें तिसकी स्थापना अवणे ईसवी सनकी ज्ञूरुज्ञातसें पहिले योनेसें थोना काल एक सैंक-मा (सो वर्ष) में हूइथी, वाचक और गणि सरी षे इलकाबोंकी तथा ईसवी सन पहिले सैकेके अं तमें असलकी शालाकी हयाती बतलाबेहेंके तिस

बखतमें जैन पंथकी बहुत मुदत हुय्रां चलती आत्मज्ञानोकी हयाती हो चुकीथी (कितनेही का वसें कंग्रय ज्ञानवान् मुनियोकि परंपरायसें सं-तित चलो आतीथी) तिस संतितमें साधु लोक तिस वखतमें अपने पंथकी वृद्धिकी बहुत हुस्या रीसं प्रवृत्ति राखतेथे, और तिस काखसें पहिले-जो राखी होनी चाहिये, जेकर तिनोमें वाचक थे तो यहन्रो संन्नवितहैके कितनेक पुस्तक वंचा ने सीखाने वास्ते बराबर रीतीसें मुकरर करा हुआ संप्रदाय तथा धर्म सबंधी शास्त्रज्ञी था. क **ख्पसूत्रके साथ मिलनेसें येह लेखों श्वेतांब**रमत-की दंत कथाका एक बमा जागकों (श्वेतांबरके शास्त्रके बमे ज्ञागकों) बनावटकें शक (कलंक) सें मुक्त करते हैं, (श्वेताबर शास्त्रके बहुत हिस्से बनावटके नही है किंतु असली सचे हैं) और स्थिविरावितके जिस जाग जपर हालमे इम अ खितयार चला सक्ते है, सो ज्ञाग निःकेवल जैन-के श्वेतांबर शाखाकी वृद्धिका जरोंसा राखने ला यक इवाल तिसमें हयाती साबित कर देता है,

श्रोर तिस ज्ञागमेंज्ञी ऐसीयां श्रकस्मात् जूबे तथा खामीयों मालुम होंती है, के जैसे कोइ के ग्रायको दंत कथाकों हालमें लिखता हुआ बोच-मे रही जाए ऐसें हम धार सकेंहे, यह परिणाम (ब्राइाय) प्रोफेसर जेकोबी ब्रोर मेरी माफक जे सखस तकरार करता होवे के जैन दंत कथा (जैन खेतांबरके लिखेन्हुए शास्त्रोंको वात) टी-काके ग्रसाधारण कायदे हेठ नही रखनी चाहि ये, अर्थात् तिसमेके इतिहास सबंधी कथनो अ थवा दूसरे पंथोकी दंतकथामेसें मिली हुइ दूसरी स्वतंत्र खबरोंसें पुष्टो मिलती होवे तो, सो मा-ननी चाहिये; और जो ऐसी पुष्टो न होवे तो जनमनकी कहनी [स्यादवा] तिसकों लगानी चाहिये, तैसें सखसोंकों उत्तेजन देनेवाला है. क ल्पसूत्रकी साथे मथुरांके शिखा खेखोंका जो मि खतापणा है, सो दूसरी यह बातन्त्री तब खाता है कि इस मधुरां सहरके जैनखोक श्वेतांबरी थे॥ इति माकर बूलर॥ अब इम [इस यंथके कर्ता] जी इन वेखोंकों वांचके जो कुछ समऊ है सोइ

लिख दिखलाते है।। जैनमतके वाचक १ दिवा-कर १ कमाश्रमण ३ यह तीनो पदके नाम जो **ब्राचार्य इग्यारे ब्रांग, ब्रोर पूर्वों के पढे हुएथे ति-**नकों देनेमें आतेथे, जैसें उमास्वातिवाचक १ सिड्सेन दिवाकर १ देविईगणिकमाश्रमण ३; इस वास्ते मथुरांके शिवा लेखोंमें जो वाचकके नामसें आचार्य लिखे है, वे सर्व इग्यारे अंग और पूर्वीके कंग्राय ज्ञानवाले थे, और सुस्थित नामे श्राचार्यका नाम जो बूलरसाहिबने लिखाहै सो सुस्थित नामे ब्राचार्य विरात् तीसरे सेकेमे हुब्रा है, तिससें कोटिक यणकी स्थापना हुइहै, और जो वहरी झाखा लिखी है सो विरात् ५०५ वर्षे स्वर्ग गये, वज्रस्वामीसें स्थापन हुइथी वहरी झा खाके विना जो कुल और शाखाके आचार्य स्था-पनेवालें सुस्थित आचार्यकें लगन्नग कालमें हुए संज्ञव होतेहै, इन लेखोंकों देखके हम अपने जाइ दिगंबरोंसें यह विनतो करते है कि जरा मतका पक्तपात बोमके इन लेखींकी तर्फ जरा ख्याल करोके इन वेखोंमें लीखे हुए गण, कुल शाखाके

नाम श्वेतांबरोंके कट्टपस्त्रके साथ मिलते है, वा तुमारेजी किसी पुस्तक साथ मिलते है, मेरी समऊमें तो तुमारे किसी पुस्तक में ऐसे गएा, कुल, शाखाके नाम नहीं है, जे मथुरांके शिखा लेखोंके साथ मिलते आवे इससे यह निसंदेह सिद्ध होता है, कि मथुरांके शिला लेखों में सर्व गएा, कुल शाखा, आचार्यों के नाम श्वेतांबरों के है, तो फेर तुमारे देवनसेनाचार्य ने जो दर्शन सार प्रंथ में यह गाथा लिखोदें कि उत्तीस बाससए, विक्रम निवस्स, मरण पत्तस्स, सोरहे वद्धादीए, सेवम संघस सुपन्नो ॥१॥

श्रधी. विक्रमादित्य राजाके मरां एकसों ब नीस १३६ वर्ष पीबे सोरह देशकी वल्लानी नग-रीमें खेतपट (खेतांबर संघ उत्पन्न हुआ) यह कहनां क्योंकर सत्य होवेगा, इस वास्ते इन शिखा बेखोंसें तुमारा मत पीबेसें निकला सिद्ध होता हे, इस वास्ते श्रो विरात् ६०ए वर्ष पीबे दिगंबर मतोत्पत्ति, इस वाक्यसें खेतांबरोका कथन सत्य मालुम होता है, श्रोर श्रधुनक मतवाले लुंपक,

ढुंढक, तेरापंथी वगेरे मतोंवाखोंसेंन्नी इम मित्र-तासें विनती करते हैके, तुमन्नी जरा इन लेखेंकों बांचके बिचार करोके श्री महावीरजीकी प्रतिमा के ऊपर जो राजा वासुदेवका संवत् एए अठा-नवेका लिखा हुआहे, और एक श्री महावोरजी की प्रतिमाकी पलांगी ऊपर राजा विक्रमसें प-दिते हो गए किसी राजेका संवत् विसका लिखा हुआहै, और इन प्रतिमाके वनवनेवाले श्रावक श्राविकांके नाम लिखे हूएहै, श्रीर दश पूर्वधारी आचार्योके समयके आचार्योके नाम तखे हुएहै।। जिनोंने इन प्रतिमाको प्रतिष्टा करी है; तो फेर तुम लोक शास्त्रांके अर्थ तो जिनप्रतिमाके अधि कारमें स्वकल्पनासें जुठे करके जिन प्रतिमाकी जञ्चापना करतेहो, परंतु यह शिखा लेख तो तु-मारेसें कदापि जूठे नहीं कहे जाएंगे, क्योंके इन शिला लेखोंकों सर्व यूरोपीयन श्रंग्रेज सर्व वि-द्वानोने सत्य करके मानहै, इस वास्ते मानुष्य जन्म फेर पाना इर्लजहै, और घोमे दिनकी जिं दगीहै, इस वास्ते पक्षपात होमके तुम सचा धर्म तप गञ्चादि गर्जोका मानो, और स्वकपेात क-ल्पित बावीस २२ टोलेका पंच और तेरापंचीयों का मत बोम देवो, यह हित शिक्ता में आपकों अपने त्रिय बंधव मानके लिखीहै ॥

प. १५०-हमारे सुननेमें ऐसा आयाहैकि जैनमतमें जो प्रमाण श्रंगुल (जरत चक्रीका श्रं-गुल) सो जत्सेधांगुल (महावीरस्वामिका आधा-अंगुल) सें चारसौ गुणा अधिकहै, इस वास्ते उत्सेधांगुलके योजनसें प्रमाणांगुलका योजन चारसौ गुणा अधिकहै, ऐंसे प्रमाण योजनसं क षज्ञदेवकी विनोता नगरी लांबी बारां योजन श्रोर चौमी नव योजन प्रमाणधी जब इन योजनाके उत्सेद्धांगुलके प्रमाणसें कोस करीये, तब १४४०० चौद इजार चारसौ कोस विनीता चौडी और १ए२०० कोस खंबी सिद्ध होतोहै, जब एक नग री विनिता इतनी बमी सिद्ध हूइ, तबतो अमेरि का, अफरीका, रूस, चीन, हिंडुस्थान प्रमुख सर्व देशों में एकही नगरी हुइ, और कितनेक तो चा-रसौ गुणेसेंन्री संतोष नही पातेहै, तो एक हजार गुणा जत्तेष योजनसें प्रमाण योजन मानते हैं, तब तो विनीता ३६००० हजार कोस चौमी और ४०००० इजार कोस खांबी सिद्ध होती है, इस कालके लोकतो इस कथनको एक मोटी गप्प स मान समऊंगे, इस वास्ते आपसें यह प्रश्न पूछते हैं कि जैनमतके शास्त्र मुजब आप कितना बमा प्रमाण अंगुलका योजन मानतेहो ?

छ. जैनमतके शास्त्र प्रमाणे तो विनोता नगरी और द्वारकांका मापा और सर्व घीप, स-मुइ, नरक, विमान. पर्वत प्रमुखका मापा जिस प्रमाण योजनसें कहादै सो प्रमाण योजन उ-त्सेघांगुलके योजनसें दश गुणा श्रोर श्री महावी रस्वामोके हाथ प्रमाणसें दो हजार धनुषके एक कोस समान (श्री महावीरस्वामीके मापेसें सवा योजन) पांच कोस जो क्षेत्र होवे सो प्रमाण यो जन एक होताहै, ऐसे प्रमाण योजनसें पूर्वोक्त विनीता जंबू घीपादिका मापाहे, इस हिसाबसें विनीता द्वारकांदि नगरीयां श्री महावीरके प्रमा एके कोसोंसें चौनीयां ४५ पैतालीस कोस श्रोर

लंबीयां सावकौस प्रमाण सिद्ध होतीयां है इतनी बमी नगरीको कोइजी बुद्धिमान् गप्प नही कह सकताहै, क्योंकि पीडले कालमें कनोज नगरीमें ३०००० तीस हजार इकानो तो पान वेचनेवालों की थी, ऐसे इतिहास विखनेवाले विखतेहैं तो, सो नगर बहुत बमा होनां चाहिये. अन्यन्नी इस कालमें पैकिन नंदन प्रमुख बमे बमे नगर सुने जातेहैं, ो चौथे तीसरे आरेके नगर इनलें अ-धिक बमे होवे तो क्या आश्वर्य है, और जो चा-रसो गुणा तथा एक हजार गुणा उत्सेधांगुलके योजनसें प्रमाणांगुलका योजन भानते हैं, वै शाः स्रके मतसें नहीं है, जो श्री अनुयोगदार सूत्रके मूल पाठमें ऐसा पाठ है, उत्सेधांगुलसें सहस्स-गुणं प्रमाणं गुलंजवित इस पारका यह अजिप्राय है कि एक प्रमाणांगुल उत्सेघांगुलसे चारसो गु-णीतो लांबी है, और अहाइ उत्सेघांगुल प्रमाण चौमी है, और एक उत्सेघांगुल प्रमाण जामी [मोटी] है, इस प्रमाण अंगुलके जब उत्सेधां-गृत प्रमाण सूची करोये तब प्रमाणांगुलके तीन

टुक्रमे कर्।ये, तब एक टुकमा एक जत्सेघांगुल प्रमाण चौमा भौर एक उत्सेधांगुल प्रमाण जामा (मोटा) और चारसौ उत्सेघांगुलका लंबा होता है, ऐसाही दूसरा दुकमा होता है, और तीसरा टुकमा एक जन्सेघांगुल प्रमाण चौमा और इत-नाही जामा (मोटा) और दोसो उत्सेघांगुल प्र माण लंबा हाता है, अब इन तीनों दुकमोंकों क मसें जोमोये तब एक उत्सेघांगुल प्रमाण चोमो और एक उत्सेधांगुल प्रमाण जामी (मोटी) और एक हजार उत्सेधांगुल प्रमास लांबी सूची होतो है, अनुयोगद्वारमें जो मूल पाठ इजार गुणी क-हता है, सो इस पूर्वांक सूचीकी अपेकासें कहता हें, परंतु प्रमाणांगुलका स्वरूप नहीं है, प्रमाणां जैसी ऊपर चारसौ गुणो लिख आएई तैसीहै, इस चारसों गुणी प्रमाणांगुतसें क्रषजेदव जरत की अवगाहनादिका मापाहै, परंतु विनीता, द्वा-रकां, पृष्ठवी, पर्वत, विमान, घोप, सागरोंका मापा हजार गुणी वा चारसौ गुणी अंगुलसें नही है, इन नगरी घीपादिकका मापा तो प्रमाणांगुल

अढाइ जन्सेंघांगुल प्रमाण चौमी है, तिससें मापा करा है, यद जेनमतके सिद्धांतकारोका मत है, परंतु चारसो तथा एक इजार गुणी उत्तेषांगुल सें विनीता, घारकां, द्वीप, सागर, विमान, पर्व-तोका मापा करनां यह जैन सिद्धांतका मत नही हे, यह कथन जिनदास गणि क्तमाश्रमणजोश्री अनुयोगद्वारकी चूर्षिमें लिखते है, तथा च चू-र्षिका पाठः जेअपमाणंगुलानपुढवायपमाणाआ-**णिक्कंति तेश्रपमाणंगुलविक्कंत्रेणश्राणेयव्वानपुण** सूइ अंगुलेणंतिएयंचिववनगुणएणकेइएअस्तर्जंपु णिमणंति अने उसू इ अंगुल माणेण नसु च ऋणि यं तं ॥ इस पातको जाषा ॥ जिस प्रमाणांगुवसें प्रच्वी, पर्वत, द्वीपादिका प्रमाण करीये है सो प्रमाणांगु लका जो विस्कंज (चौमापणा) अढाइ उत्सेघ आं गुल प्रमाणतें करनां, परंतु सूची आंगुलसें एछ्वो **ब्रादिकका प्रमाण न करनां, श्रौर कितनेक ऐसें** कहते है कि एक प्रमाणांगुलमें एक इजार उत्सेधां गुल मावे, ऐसे प्रमाणांगुलसें मापनां, भौर अन्य ब्राचार्य ऐसें कहता है कि उत्सेघांगुलसें चारसी

गुणी ऐसे प्रमाणांगुलसे एछ्वी ब्रादिकका मापा करनां, अब चूर्सिकार कइता है कि ये दोनों मत हजार गुणो अंगुल और चारसौ गुणी अंगुलके मापेसें प्रश्वी आदिकके मापनेके मत, सूत्र ज्ञ-णित नही (सिद्धांत सम्मत नही) है, श्रीर श्रंगुल सत्तरी प्रकरणके कर्ता श्री मुनिचंइ सूरिजी (जो के विक्रम संवत् ११६१ मे विद्यमान थे) इन पु-वोंक्त दोनो मतांकों दषण देतेहैं तथाच तत्पाठः॥ किंचमयेसुदोसुविमगहंगकिंगमाइ श्रासव्वेपाये-णारियदेसाएगंमियजायणेहुंति ॥ १६॥ गाया ॥ इसकी व्याख्या॥ जेकर ऐसे मानीयेके एक प्र-माण अंगुलमें एक सदस्र उत्सेधांगुल अथवा चा रसौ उत्सेघांगुल मावे, ऐसे योजनोंसें एण्वी आ दिक मापीए, तबतो प्रार्थे मगधदेश, श्रंगदेश, क्लिंगदेशादि सर्व आर्य देश एकदी योजनमें मा जावेंगे, इस वास्ते दशगुणें जत्सेघांगुलके विस्कं-जपरोसें मापना सत्य है, इस चर्चासें अधिक पांचसौ धनुषकी अविगाइना वाले लोक इस बो टेसें प्रमाणवासी नगरीमें क्योंकर मावेंगे, श्रीर

द्वारकांके करोमों घर कैसें मावेंगे, और चक्रवर्ती के ग्रानवे ए६ करोम गाम इस ग्रेटिसे जरतखंममें क्योंकर वसेंगे, इनके उत्तर अंगुलसत्तरीमें बहूत अज्ञीतरेंसें दीने हैं, सो अंगुलसत्तरी वांचके देख-नां, चिंता पूर्वोक्त नहीं करनी, यह मेरा इस प्र-श्रोत्तरका लेख बुद्धिमानोंकों तो संतोषकारक हो-वेगा, और असत् रूढोके माननेवालोंकों अञ्चंत्रा जनक होवेगा, इसी तरे अन्यन्ती जैनमतकी कि-तनीक वाते असतरूढीसें शास्त्रसें जो विरूद् है, सो मान रको है, तिनका स्वरूप इहां नही त्रिग्वते हैं.

त्र. १५ए-गुरु कितगे प्रकारके किस किस की उपमा समान और रूप १ उपदेश २ किया ३ केसी और कैसेके पासों धर्मोपदेश नही सुननां. और किस पासों सुननां चाहिये.

ਰ.-इस प्रश्नका उत्तर संपूर्स नीचे मुजब समऊ बेनां.

एक गुरु चास (नीखचास) पक्ती समान है. १

जैसें चाष पक्तीमें रूप है, पांच वर्ष सुंदर होनेसें और शकुनमें जी देखने खायक है १ परंतु उपदेश (वचन) सुंदर नहीं है, २ कीमे आदिकें खानेसें किया (चाल) अज्ञी नही है ३ तेसेही कि तनेक गुरु नामधारीयोमें रूप (वेष) तो सुविहित साधुका है १ परं अशुद्ध (जत्सूत्र) प्ररूपनेसें जपदे इा शुद्ध नही, २ और क्रिया मूलोत्तर गुण रूप नही है, प्रमादस निरवद्याहारादि नही गवेषण करते है ३ यडक्तं ॥ दगपाणंपुप्फफ्तंत्र्य्येसिणिकं गिहन्निक चाइंग्रजयापिमसेवंतिजइवेसविमंबगानरं ॥ १॥ इत्यादि ॥ अस्यार्थः ॥ सिच्चित्त पाणी, फूल, फल, अनेषणीय आदार गृहस्यके कर्तव्य जिवदिंसा १ असत्य २ चोरी ३ मेथुन ४ परियह ५ रात्रिजोज न स्नान।दि असंयमी प्रति सेवतेहैं, वेन्नी गृहस्थ तुख्यदो है, परंतु यतिके वेषकी विटंबना करनेसें इस वातरें अधिक है, ऐसे तो संप्रति कालमे डुःखम ग्रारेके प्रजावसें बहुत है, परंतु तिनके

नाम नही लिखते है, अतीत कालमें तो ऐसे कु-लवालकादिकोंके दृष्टांत जान लेने, कुलवालकमें सुविहित यतिका वेषतो था. १ परं मागधिका ग णिकाके साथ मेथुन करनेमें ब्राइाक्त था, इस वास्ते श्रञ्जो क्रिया नहोथी २ श्रोर विशाला जंगादि महा आरंजादिका प्रवर्तक होनेसे उपदेशजी शुइनही था, सामान्य साधु होनेसे वा उपदेशका तिसकों अधिकार नही था, ३ ऐसेही मदाबतादि रहित १ उत्सूत्र प्ररूपक (गुरु कुलवास त्यागो) सो कदापि शुरू मार्ग नहीं प्ररूप शक्ताहै १ निकेवल यति वेषधारक है ३ इति प्रथमो गुरु जोद स्वरु प कथनं ॥१॥

दूसरा गुरु क्रोंच पक्ती समान है. २

क्रोंचपक्तीमें सुंदर रूप नही है, देखने योग्य वर्णादिके अज्ञावसें १ कियाजी अज्ञो नही, कीमें आदिकोंके जकण करनेसें १ केवल उपदेश (म धुर ध्वनि रूप) है ३ ऐसेही कितनेक गुरुयोंमें रूप नही. चारित्रिये साधु समान वेपके अज्ञाव सें १ सत कियाजी नहीं, महावत रहित और

प्रमादके सेवनेसें २ परंतु जपदेश शुद्ध मार्ग प्रह पण रूप है ३ प्रमादमें पने और परिवाजकके वेषधारी क्रषन्न तीर्धंकरके पोते मरीच्यादिवत् अथवा पासत्ते आदिवत् क्योंकि पासत्तेमें साधु समान क्रिया तो नही है ? और प्रायें सुबिहित साधु समान वेषज्ञी नहीं, यडुक्तं ॥ वढंडपिनले ह्यिमपाणसकन्निश्रंडुकूलाई इत्यादि॥ श्रर्थः-वस्त्र इप्रति वेखित प्रमाण रहित सदशक पश्चेवमी र खनेसें सुविहितका वेष नही १ परं शुद्ध प्ररूपक है, एक यथा उंदेकों वर्जके पास हा १ अवसन्ना २ कुशील ३ संसक्त ४ ये चारों शुद्ध प्ररूपक होस केहै, परंतु दिन प्रतिदश जणोका प्रतिबोधक नं-दिषेणसरीषे इस ज्ञांगेमें न जानने, क्योंके नं-दिषेणके श्रावकका लिंग या ॥ इति इसरा गुरु स्वरूप जेद ॥२॥

तीसरा गुरु ज्रमरे समान है. ३ ज्रमरमें सुंदर रूप नहीं, कश्च वर्ष दोनेसें १ जपदेश (तिसका जदात्त मधुर स्वर) नहीं है १ केवल क्रियाहै जत्तम फूलोंमेंसें फूलोंकों विना जल देनेसे तिनका परिमल पीनेसें ३ तैसेही कितनेक गुरु यतिके वेषवाले जी नही है ? और उपदेशक जी नही है १ परंतु किया है, जैसें प्रत्येक बुझ दिकों मे प्रत्येक बुझ, स्वयं बुझ ती धिकरादि यद्यपि साधुतो है, परंतु ती धीगत साधुयों के साथ प्रवच न १ लिंगसे १ साधि में क नहीं है, इस वास्ते यति वेष जी नही, १ उपदेशक जी नही १ "देशना आ सेवकः प्रत्येक बुझ दि रित्यागमात्" कियातो है, क्यों कि तिस जवसें ही मोक्ष फल हो ना है ॥ इति तृतियो गुरु स्वहूप जेद ॥३॥

चौथा 🐠 मोर समान है. ४

जैसें मोरम रूपतो है पंच वर्ण मनोहर १ श्रौर शब्द मधुर केकारूप है १ परं किया नही है, सर्पादिकोंकों जो जक्कण कर जाता है, निर्दय होनेसं ३ तेसें गुरुयों कितनेकमें वेष १ उपदेश-तो है १ परंतु सत्किया नही है, ३ मंग्वाचार्य-वत्॥ इति चोषा गुरु स्वरूप जेद ॥४॥

पांचमा गुरु कोकीला समान है. य

कोकिलामें सुंदर जपदेश (शब्द) तो है, पं चम स्वर गानेसें १ श्रीर किया श्रांबकी मांजरा- दि शुचि ब्राहारके खाने रूपहे. तथा चाहुः ॥ ब्रा हारे शुचिता, स्वरे मधुरता, नोमे निरारंज्ञता । वंधी निर्ममता, वने रित्तकता, वाचालता माधवे॥ त्यस्का तिच्च कोकीलं, मुनिवरं दूरात्पुनदींज्ञिकं। वंदंते वत खंजनं, कृमि जुजं चित्रा गितः कर्म णां ॥१॥ परंतु रूप नही काकादिसेंजी हीनरूप होनेसें ३ तैसेंहो कितनेक गुरुयोंमें सम्यक् किया १ जपदेश १ तोहे, परंतु रूप (साधुका वेष) किसी हेतुसें नही है, सरस्वतीके बुमाने वास्ते यित वेष त्यागि कालिकाचार्य वत् ॥ इस्ति पांचमा गुरु स्वरूप जेद ॥ ॥ ॥

ब्रुडा गुरु इंस समान है. ६

हंसमे रूप प्रसिद्ध है १ क्रिया कमल नाला दि आहार करनेसें अज्ञोह १ परंतु हंसमे उपदेश (मधुर स्वर) पिक शुकादिवस नही है ३ तैसें ही कितने एक गुरुयोंमें साधुका वेष १ सम्यक् कि यातो है १ परंतु उपदेश नही, गुरुने उपदेश क-रनेकी आज्ञा नही दोनी है, अनिषकारी होनेसें घन्यशालिज्ञाहादि महा क्षियोंवत् ॥ इति उडा गुरु स्वरूप जेह ॥६॥

सातमा गुरु पोपट तोते समान है. 9

तोता इहां बहुविघ शास्त्र सूक्त कथादि प-रिक्वान प्रागल्यवान् प्रहण करनां. तोता रूप क-रके रमणीय है १ किया आंब कदली दामिम फ लादि शुचि चाहार करता है. इस वास्ते आज्ञी है. २ उपदेश वचन मधुरादि तोतेका प्रसिद्ध है ३ तैसें कितनेक गुरु वेष १ उपदेश २ सम्यक किया. ३ तीनों करके संयुक्त है, श्रोजंबु श्रीवज्ञस्वाम्या दिवत् इति सातमा गुरु स्वरूप जेद ॥७॥

ब्र्या3मा गुरु काक समान है. ए

जैसे काकमें रूप सुंदर नहीं है ?, उपदेश-जो नहों, कनुया शब्द बोलनेसें १ कियाजो अज्ञो नहीं है, रागी, बूढे बलदादिकोंके आंख कढ लेनी, चूंच रगमनी और जानवरोंका रुघिर मांस, म-लादि अशुचि आदारि दोनेसें ३ ऐसंही कितनेक गुरुयोंमे रूप ? उपदेश १ किया ३ तीनोदि। नहीं है, अशुद्ध प्ररूपक संयम रहित पासले आदि जा नने, सर्व परतीर्थींकजो इसी जंगमे जानने ॥ इति आवमा गुरु स्वरूप जेद ॥ ७ ॥ इनमेसें जबदेश सुनने योग्यायोग्य कौन है.

इन आठोदी जांगोमें जो जंग क्रिया रहित (संयमरहित) है वे सर्व त्यागने योग्य है, और जो जंग सम्यक् क्रिया सहित है वे आदरने योग्य है, परंतु तिनमें जो जो उपदेश विकल जंगहै वे स्वतारकन्नी है, तोन्नी परकों नही तारसक्ते है, श्रीर जे जंग श्रशुद्धापदेशक है. वेता श्रपनेकों और श्रोताकों संसार समुइमें मबोनेही वाले है, इस वास्ते सर्वधा त्यागने योग्य है, और शुद्धोप देशक, क्रियावान् पक्त कोकिलाके द्रष्टांत सूचित श्रंगीकार करने योग्य है, त्रीक योगवाला पक तोतेके द्रष्टांत सूचित सर्वसें उत्तमहै। श्रीर शुद्ध प्ररूपक पासञ्चादि चारोंके पास उपदेश सुनना जी शुद्ध गुरुके अज्ञावसें अपवादमें सम्मत है.

प्र. १६०-इस जगतमें धर्म कितने प्रकारके श्रीर कैसी उपमासें जानने चाहिये.

उ. इस प्रश्नोत्तरका स्वरूप नीचेके लिखे

यंत्रसें जानना धर्म पांच प्रकारका है.

एक धर्म कं- इस वन समान नाहितक मितयों-थेरी वन सका माना हुआ धर्म है, सर्वधा था-मानहै, जैसें मासाजी गुज फल नही देता है, कंधेरी वननि और परन्नवमें नरकादि गतियों मे ष्फल है. सर्वे डुख अनर्थकों देता है, और इस लो प्रकारसें केव कमें लोक निंदा! धिकार नृप दंमा-स कांटो क-दिके ज्ञयसें इस कुकर्मी नास्तिक म-रके व्याप्त हो तमें प्रवेश करना मुशकल है. श्रीर नेसें लोकांकों जो इस मतमं प्रवेश कर गये है, ति विदारणादि नकों स्व इञ्चानुसार मद्य मांसादि ज अनर्थ जन-क्रण मात, बहिन. बेटीको अपेका क होता है, रहित स्त्रीयोंसे जोगादि विषयके सु-श्रौर तिस व-स्वादके सुखको खंपटतासें तिस ना-नमे प्रवेश निस्तिक मतमेसें निकलनाजी सुशकल र्गमनन्त्री इ. हैं, इस वास्ते यह धर्म सर्वथा सुक्त-ष्कर है॥१॥ जनोकों त्यागने योग्यहै, इस मतमं धर्मके लक्कणतो नहीं है, परंतु तिसके माननेवाले लोकोने धर्म मान रस्का है, इस वास्ते इसका नामन्नी धर्मही लिखाइे ॥ इति प्रथम धर्म नेद॥१॥

एकधर्मशमी इस वन समान बौद्धां हा धर्म है, खेजमो वंबू रयोंकि ब्रह्मचर्यादि कितनीक सत् ल कीकर खिक्रिया और ध्यान योगाज्यासादिकके दिर वेरी करी करनेसें मरां पीठे द्यंतर देवताकी ग-रादि करके तिमे जलन होनेसें कुठक शुज सुख मिश्रित वन रूप फल जोगमें देताहै, तथा चोक्तं समानहै यह बौद शास्त्र ॥ मृदीशय्या प्रातस्त्राय वन विशिष्ट्रियेया॥ ज्रक्तं मध्ये पानकंचा परान्हे॥ शुज्ज फल न राह्या पाणं शर्कराच ईरात्रौ॥ मोक्त-ही देता है श्रांत शाक्य पुत्रेण रष्टः ॥१॥ मणुत्र किंतु सांगरी जोयणं, जुज्ञा मणुत्र, सयणासणं म वब्बूल फला जुन्नं, सिञ्जगारंसि मणुन्नं, जायए दि सामान्य मुणी ॥१॥ इत्यादि ॥ बौद्ध मतके ज्ञा नीरस फल दे ब्रानुसारे अपने शरीरकों पुष्ट करनां, तेहै, सांगरो मनके अनुकूल आहार, शस्यादिकके गुष्क नोगसें श्रोर बोइनिकुके पात्रमें कोइ हुइ होइ किं-मांस दे देवे तो तिसकोन्नी खा बेनां,

चित् प्रथम स्नानाविकके करनेसें पांची इंडियोंके खाते हुए मो पोषनरूप और तप न करनेसें आन्
जी लगती है दिमें तो मीठा (अञ्चा) लगता है, पपरंतु कंटका रंतु ज्ञवांतरमें डुर्गति आदिक अनर्थ
कोर्स होनेसें कल जल्पन्न करताहै, इस वास्ते यह
विदारणादि धर्मजी त्यागने योग्य है।। इति दूसअनर्थका हेतु रा धर्म जेद ॥१॥
होवेहै ॥१॥

एक धर्म पर्व इस वन समान तापस ? नैयायिक, तके वनतथा वैशेषिक, जैमनीय, सांख्य, वैश्ववश्रा जंगली वनदि आश्रित सर्व लोकिक धर्म और समानहै,इसचरक परिव्राजक इनके विचित्रपणे-वनमें थोहर, सें विचित्र प्रकारका फलहै सोइ दि कंथेरो, कुमा खातेहै, कितनेक वेदोक्त महा यज्ञ, र प्रमुखके फापशुवध रूप स्नान होमादि करके धर्म ल देनेवाले व्यमाननेहैं, वे कंथेरो वनवत् हैं, परज-कहै और कं वेमें अनर्थरूप जिनका प्राये पत हो टकादिसें वि-विगा. और कितनेक तो तुरमणोश दारण करणे दत्तराजाकी तरे निकेवल नरकादि

सें अनर्थके-फिल वाले होते हैं। तथाचीकं आर-जी जनकहै एयके ॥ येवैइहयथा १ यक्केषुपशुन्विश १ और कित-सितितेतथा २ इत्यादि ॥ तथाशुकसं-नेक धव स-वादे॥ यूपं बित्त्वा, पशुन् हत्वा, कत्वा ख़कोके सुप रुधिर कई मं, यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नर-लाज्ञ पनसकि केन गम्यतेः ॥ १॥ स्कंधपुराणे ॥ सीसमादि च वृक्तां शिंग्रत्वा, पशून् हत्वा, कृत्वा रु कहै, इनके फ धिर कईमं, दग्ध्वा वन्ही तिलाज्यादि, खतो निःसाचित्रं स्वयोंनिखष्यते ॥१॥ कितनेक रहै, परंतु वि अपात्रकों अशुद्ध दान गायत्र्यादिके शिष्ठ अनधीजापादि घव पलाशादिवत् प्राय फल जनक नहीं है देनेवालेजी सामग्री विशेष मिले किं २ और कित चित् फलजनक है, परं अनर्थ जनक नेक वेरी खे-नहीं, विवक्तितहैं, इस स्थलमें प्रतिदिन जमी खयरा बिक्त दान देनेवाला मरके हाथी हूए दि निःसार सिठवत्, तथा दानशालादि करानेवाले अश्चान प्रवदेते नंदमणिकारवत् और सेचनक हाथीके हैकंटकोंसेंविजीव लक्ष जोजी ब्राह्मणवत् दृष्टांत दारणादि अजानने ॥२॥ कितनेक तो सावद्य (स

निष्टके जन-पाप) श्रनुष्टान, तप, नियम दानादि कन्नोहोतहै अन्यायसें इव्योपार्जन करी कुपात्रदा और कितने-निदि वेरी खेजमीवत् किंचित् राज्या क किंपाका- दि असार शुज्ज फल डर्लज बोधिपएवा हीन जातित्व परिणाम विरसादि
मुख मीठे परिणाममें वि
रस फलके दे नेवालेहें धिक बहुल संसारी हूए, वे जो मिण्या तनेक जड़ंबर तिप करनेमें तत्पर हूए होए,इसी जगमें तनक जिल्लार (गूलर) वि-जानने ॥३॥ कितनेक किंपाकादिको तरं असत् आग्रह देव गुरुके प्रत्यनी-कादि जाव वाले तथाविध तपोनुष्टा-नादि करके एकवार स्वर्गादि फल देके कहल संसार तिर्यच नरकादिके छल टकादिकें अ-दिनेवाले होतेहे, गीशालक, जमालि नावसें अन-आदिवत् ॥४॥ तथा कितनेक न्नइना र्थ जनकनहीं व विशेष पात्र गुणादि परिङ्यान रहि है ए कितनेक त दान पूजादि मिण्यात्वके रागसें नारिंग, जंबी करतेहैं, वे छडंबरादिवत् किंचित् राज्य

र, करसादि मनुष्यके ज्ञोग समध्यादि ग्रसार शुज मध्यम फला फलही देतेहै, दूसरेके जपरोधसें दान के हुकहै, परंदिनेवाले सुंदर वाणीयेकीतरें जैनधर्मा तु अनर्घ ज-श्रित जी निदान सहीत अविधिसें नक नहीहै ६ तप अनुष्टान दानादि करनेवालेजी कितनेक रा-इसी जंगमें जान लेने, चंड, सूर्य वहु यण (खिर-पुत्रिकादिके दृष्टांत जान बेने ॥ ५॥ णी) आंब, िकतनेक तापसादिधर्मी बहुत पाप र त्रियंगु प्रमु-हित तपोनुष्टान कंदमृत फलादि स-ख सरस शु-चित्त जोजन करनेवाले अल्प तपवाले ज पुष्प फल्निगरंग, जंबीर, करणादि तरुवत् ज्यो वाले है, ये तिषि ज्ञवनपत्यादि बि मध्यम देवाई सर्व मालकी फलदायीहै. श्री वीर पिडले जवोंमें रहित जानने परिवाजक पूर्ण तापसवत् तथा जैन ७ ऐसे तार-मिति सरोस गोरव प्रमाद संयमीत्रा तम्यतासें ब्रादि मंमुकी वध करनेवाले क्रपक मुनि धम, मध्यम, मंगु आचार्यादिवत् ॥ ६ ॥ कितनेक उत्तम वृक्तों-तामिल क्रिषको तरें उम्र तप करने-की विचित्र-वाले चरक परिव्राजकादि धर्मवाले

तासें पर्वतके आंबादि वृक्तोंवत् ब्रह्मदेवलोकाविष वनोंकी जी सुख फल देतेहै ॥॥॥ ये सर्व पर्वतके विचित्रताजा वन समान कथन करे, परंतु सम्यग् ननी ॥३॥ हष्टोकों ये सर्व त्यागने योग्यदै ॥ इति तोसरा धर्म जेद ॥३॥

एक धर्म न इस वन समान श्राइ (श्रावक) धर्म पवन समान सम्यक्तवे पूर्वक बारांव्रताकी अपेका श्रावक धर्महै तरासोकरोम अधिक जेद होनेसें वि-राजके वनमें चित्र प्रकारका सम्यग् गुरु समीपे ग्रं-अंब, जंबू रा-गोकार करनेसें परिगृहोतहै, अज्ञान जादनादि जमए लोकिक धर्मसें अधिकहै, और अ घन्य वृक्त है तिचार विषय कषायादि चौर श्वाप-केला, नालोदादिकोंसे सुरिक्ततहे, और गुरु उप-केर सोपारी देश आगमाभ्यासादि करके सदा सु-अादिमध्यम सिंच्य मानहै, सौ धर्म देवलींकके माधवी लता सुख जघन्य फल है, सुलज्जबोधि हो तमाल एला, नेसे और निश्चित जलदी सिद्धि सु-लवग चंदना खांके देनेवाले होनेसें और मिछ्या-गुरुतगरा दयात्वीके सुखांसें बहुत सुन्नग आनंदा

उत्तम चंपकदि श्रावकोंकी तरें देतेहै, श्रीर कत्क-राज चंपक र्षसें तों जीर्ण सेटादिकी तरें बारमे जाति पाढ- अन्युत देवलोकके सुख देतेई ॥ खादि फूल तवास्ते बारांत्रत रूप श्राइ (श्रावक) रु विचित्र है, धर्म यत्नसें अंगीकार गृहस्य लोकोने ये सर्व गिरिकरनां, और अधिक अधिक शुद्धा-वनके वृक्तोसें वांसें पालनां आराधनां चाहिये॥ सींचे, पाले इति चौथा धर्म जेद ॥ ४ ॥ हए होनेसें अ धिक फल, प त्र पुष्पवाले है, सदा सर-स बहु मोले फलादि देते है ॥४॥

एक धर्म दे इस वन समान चारित्र धर्मनी पुन् वताक वनस लाक बकुश कुशील निर्माथ स्नातका मान साधु ध दि विचित्र जोदमय है, विराधक श्रा-में है, देवता-वक साधुयोंका धर्म तोसरे मिण्यात्व के वनमें देव धर्ममें ग्रह करनेसे इस धर्ममें श्राव-

तायोंकी तार राघक यति धर्मवाले जाननें, तिनकों ताम्यतासं क्राज्यन्य सीधर्म देवलोकके सुखरूप फ कि मानोके लहै. ग्राराधिक श्रावक धर्मवालेसें ग्र क्रीमाकरनेकेधिक और बारा कटप देवलोक, नव नंदन वनादि प्रवेयकादि मध्यम सुख श्रोर जत्क-मेंन्री राजा एतो अनुत्तर विमानके सुख संसारि-के वनवत् जक श्रोर संसारातीत मोक्त फल देतेहैं, घन्य,मध्यम,इस वास्ते ते यह धर्म सर्व शाक्तिसें उत्तमवृक्त हो उत्तरोत्तर अधिक अधिक आराधना तेहैं, सर्व कतु चाहिये, यह सर्व धर्मासें उत्तम धर्महें, के फलवान्यह कथन उपदेश रत्नाकरसें किंचित् वृक्तोंके होने-लिखाहै ॥ सें ब्रीर देव-ताके प्रजाव-सें सर्व रोग विषादि दूर करे. मनचिं

तित रूप क-

रण जरा

लित नाइक इत्यादि बहु प्रजाववाली नेषधीयांपत्र फलादिकरके संयुक्तहे, पि-बले सर्व व-नोसं यह प्र-

धान वन है।। इति पाचमा धर्म जेद ॥५॥

प्र. १६१-जो जैनमतमें राजे जैनघर्मी होते होवेंगे, वे जैनघर्म क्यांकर पाल सक्ते होवें-गे, क्योंकि जैनघर्म राज्यधर्मका विरोधी हमकीं मालुम होताहै.

ज-गृहस्थावस्थाका जैनधर्म राज्यधर्म (रा ज्यनीति) का विरोधो नही है. क्योंकि राज्यधर्म चौर यार खूनी असत्यन्नाषो प्रमुखाकों कायदे मू जब दंग देनाहै. इस राज्यनीतिका जैनराजाके प्रथम स्थूल जीवहिंसा रूप व्रतका विरोध नही है, क्योंकि प्रथम व्रतमें निरपराधिकों नही मा- रमा ऐसा त्याम है, और चौर यार खूनी असत्य जामी आदिक अन्याय करनेवालेतो राजाके अ-पराधो है, इस वास्ते तिनके यथार्थ दंम देनेसे जैन घर्मी राजाका प्रथम वत जंग नही होताहै, इसी तरे अपने अपराधि राजाके साथ लमाइ करनेसे जी वत जंग नहो होताहे. चेटक महाराज संप्र ति कुमारपालादिवत्, और जैनधर्मी राजे बारां-वहरूप गृहस्थका धर्म बहुत अछी तरेसे पालते थे, जैसे राजा कुमारपालने पाले.

म. १६१-कुमारपाल राजाने बारांत्रत किस तरेंके करे, और पाले थे.

ज.-श्री कुमारपाल राजाके श्री सम्यक्त मूल बारांत्रत पालनके थे ॥ त्रिकाल जिन पूजा. १ अष्टमी चतुईशीमें पोषधोपवासके पारणेमें जो देखनेमें कोइ पुरुष आया तिसकों यथार्थ हित्त दान देकर संतोष करनां २ और जो कुमारपाल-के साथ पोषध करते थे तिनको अपने आवासमें पारणा करानां ३ दृटे हुए साधिमकका उद्धार क रनां, एक हजार दोनार देना ४ एक वर्षमें साध

र्मियोकों एक करोम दीनार देने, ऐसे चौदह वर्ष में चौदह करोम दोनार दोने ए अठानवे लाख ए० रूपक उचित दानमें दीने, बइत्तर ७२ वक्त रूपक इब्यके पत्र निसंतान रोनेवालीके फाने ७ इक्कीस ११ कोश (ज्ञानजंडार) विखवाए ए नित्य प्रतें श्री त्रिज्ञवनपाल विहार (जो कुमारपालने बान वे ए६ करोम रूपकके खरचसें जिन मंदिर बन-वाया था) तिसमें स्नात्रोत्सव करनां ए श्री हेम-चंड्सूरिके चरणोंमे दादशावर्त्त वंदन करनां १० पीं क्रमसें सर्व साध्योको वंदन करनां ११ जिस श्रावकने पहिलां पाषधादि वत करे होवे तिसको वंदन, मान, दानादि करनां १२ अठारह देशोमे **ब्रमारीपटह कराया १३ न्याय घंटा बजानां १४** और अठारह देशोके सिवाय अन्य चौदह देशो-में घनवलमें मैत्रीबलमें जीव रक्ताका करानाश्य चौदहसौ चौतालोस १४४४ नवोन जिन मंदिर बनवाए १६ सोबेसों १६०० जीर्प जिन मंदिरो-का नदार कराया १७ सातवार तीर्थ यात्रा करी १७ ऐसे अम्यक्तकी आराधना करी ॥ पहिले ब-

तमे सपराधी विना मारो ऐसे शब्दके कहनेसे एक उपवास करनां १ दूसरे व्रतमे जूबसे जूठ बोला जावे तो आचाम्लादि तप करनां १ तीसरे व्रतमें निसंतान मरेका धन नही खेनां ३ चौथे वतमें जैनी हुआ पीछे विवाह करणेका त्याग और चौमासेके चार मास त्रिधा शीख पाखनां, मनसें जंगे एक उपवास करनां, वचनसें जंगे एकाचा-म्ब, कायसें जंगे एकाइान. एक परनारी सद्दोदर बिरुद धरनां. ज्ञोपलदेवी आदि आठों राणोयोंके मरे पीं प्रधानादिकों के आयह सेंजी विवाह क-रनां नही, ऐसा नियम जंग नहो करा. श्रारात्रि-कार्थ सोनेमिय जोपलदेवीकी मूर्ति करवाइ, श्री हेमचंड्सुरिजीए वासक्तेप पूर्वक राजर्षि बिरुद दीना ४ पांचमे वृतमें इ करोमका सोना, आह करोमका रूपा, इजार तुला प्रमाण महर्घ म-णिरत्न, बत्तीस हजारमण घृत, बत्तीस इजारम सा तेल, लक्का झालि चने, जुवार, मूंग प्रमुख धान्योके मूंढक रस्के पांच लाख ५०००० अश्व, पांच हजार ५०००, हाम्री, पांचसी ५०० कंट,घर,

हाट, सञायान पात्र गामे वाहिनीये सर्व ब्रखग अलग पांचसो पांचसो रस्क इग्यारेसो हाथी ११००, पंचास इजार ५०००० संग्रामी रथ, इग्यारे लाख ११००००० घोमे, अठारह लाख १००००० सुन्नट. ऐसें सर्व सेनका मेख रखाः ए उदे वृतमें वर्षा-कालमें पट्टनके परिसरसें अधिक नही जाना ६ सातमें जोगोपज्ञोग वृतमें मद्य, मांस, मधु, म्र-क्तल, बहुबीज पंचोडं बरफल, अन्नक, अनंतका य, घृत पूरादि नियम देवताके विना दीना वस्त्र, फल ब्राहारादि नही लेनां. सचित्त वस्तुमें एक पानकी जाति तिसके बीमे आठ, रात्रिमें चारों आहारका त्याग. वर्षाकालमें एक घृत विकती खेनी, हरित शाक सर्वकात्याग. सदा एकाशनक करनां, पर्वके दिन अब्रह्मचर्य सर्व सचित विगय-का त्याग ७ आठमें तृतमें सातों कुत्यसन अपने देशसें काढ हेने, ए नवमें वृतमें उत्तय काल सा-मायिक करनां, तिसके करे हुए श्री हेमचंद्रसूरिके विना अन्य जनसें बोलनां नहीं, दिनप्रते १८ प्र-काहा योग ज्ञास्त्रके २० वीस वीतराग स्तोत्रके प

हने ए. दशमें वृतमें चतुर्भासेमें शत्रू जपर चढाइ नहीं करनी १० पोषधोपवासमें रात्रिमें कायोत्स र्ग करनां, पोषधके पारणे सर्व पोषध करनेवालों कों जोजन करानां ११ अतिथी संविजाग वृतमें इिखये साधार्मे श्रावक लोकांका, ७२ सक्त इट्य का कर ठोमनां, श्री हेमचंड्सूरिके उत्तरनेकी धर्म शालामें जो मुखविश्वकाका प्रतिलेखक साधर्मि-कों ५०० पांचसी घोमे और बारां मामका स्वामी करा, सर्व मुख विश्वकाके प्रतिलेखकांकों. ५०० पांचसौ गाम दीने १२ इत्यादि अनेक प्रकारकी शुज्जकरणी विवेक शिरोमणि कुमारपाल राजम्बे करीषो. यह गुरु १ धर्म १ और कुमारपालके व-ताके स्वरूप उपदेश रत्नाकरसें विखे है.

त्र. १६३-इस हिंड्स्थानमें जितने पंथ चब रहेहै, वे प्रथम पोर्ट किस क्रमसें हूएहै, जैसें आ चके जाननेमें होवे तैसें लिख दोजिये?

ड.-प्रथम रूपजदेवतें जेंनधर्म चला? पीछे सांख्यमत १ पोछे वैदिक कर्म कांमका ३ पीछे बे इांत मत ४ पीछे पातंजिल मत ५ पीछे नैयायि- क मत ६ पीं बौद्धमत ७ पीं वैशेषिक मत ए पीं होव मत ए पींच वामीयोंका मत १० पींचे रामानुज मत ११ पींचे मध्व ११ पींचे निंबार्क १३ पोंडे कबीर मत १४ पींड नानक मत १५ पीं वर्स्चन मत १६ पींग्ने दाइमत १९ पींग्ने रा-मानंदोयोंका मत १० पींचे स्वामिनारायणका मत १ए पीं ब्रह्म समाज मत १० पीं ब्रायी समाज मत द्यानंद सरस्वतोने स्थापन करा. ११ इस कथनमें जैनमतके शास्त्र १ वेदनाष्य १ दंत कथा ३ इतिहासके पुस्तकादिकोंका प्रमाण है॥ इत्यलम् ॥ अहमदावादका वासी श्रोर पालणपु-रमें न्यायाधोद्या राज्याधिकारी श्रावक गिरधरखा ल दोराञ्जाइ कत कितनेक प्रश्न तिनके उत्तर पा विताणेंमें चार प्रकार महा संघके समुदायने आ चार्य पद दत्त नाम विजयानंद सूरि अपर प्रसिद्ध नाम श्रात्माराम मुनि कृत समाप्त हुएहै ॥ इन सर्व प्रश्नोत्तरोंमें जो वचन जिनागम विरुद्ध नूख-सें जिखा होवे तिसका मिष्या डःकृत देताहुं। सर्व सुङ्ग जन ग्रागमानुसार सुधारके लिख दोजो, ग्रीर मेरे कहे उत्सूत्रका अपराध माफ करजो ॥ इति प्रश्नोत्तरावित नाम ग्रंथ समाप्तम्.

> (अथ गुरु प्रशस्तिः) [(अनुष्ठुप् वृत्तम्-)

श्रीमद्वीर जिनेशस्य शिष्य रत्नेषु ह्युत्तमः सुधर्म इति नाम्नाऽसूत् पंचमः गणभृत् सुधीः १ अयमेव तपागत्व मदादोर्मृत्रमुचकेः **क्रे**यः पौरस्त्यपट्टस्य जूषणं वाग्वि जूषणं परंपरायां तस्यासीत् शासनोत्तेजकः प्रधीः श्रीमदिजयसिंहाव्हः कर्मघः धर्म कर्मिश-तस्य पट्टांबरे चंडः विजयः सत्यपूर्वकः अभृत् श्रेष्ठ गुणयामेः संसेव्यः निखित्रे जैनैः पट्टे तदोयके श्रीमत् कर्पृरविजवाज्ञिवः आसोत् सुयशाः इश्न किया पात्रं सदोद्यमः ए तत्पट्ट वंश मुकासु मणिरिवेप्सितप्रदः सिद्धांत हेमनिकषः क्तमा विजय इत्यञ्जूत् Ę जिनोत्तम पद्म रूप कीर्त्ति कस्तूर पूर्वकाः विजयांता क्रमेणैते बभूवुर्बुद्धिसागराः 3 तस्य पट्टाकरे चिंता मिणिरिचेप्सितप्रदः
मिणिविजय नामाऽभूत् घोरेण तपसाक्रज्ञः ए
ततोऽजूत् बुद्धि विजयः बुद्ध्यष्टगुणगुम्फितः
प्रस्तुतस्या स्मदीयस्य गञ्चवर्यस्य नायकः ए
चक्रे शिष्येण तस्येयं जैन प्रश्लोत्तरावली
सद्युत्तया श्लीमदानंद विजयेन सविस्तरा १०
संवत् बाँण युँगांऽ कें डुः पोष मास्यऽसित्तवदे
त्रयोदद्यां तिथो रम्ये वासरे मंगलात्मनि ११
पद्धिव पार्श्वनाथाऽधिष्ठिते प्रव्हादनेपुरे
स्थित्वाऽयं पूर्णतांनीतः ग्रंथः प्रश्लोत्तरात्मकः १८

शुद्धि पत्र.

		`	<
पानु	लीटी.	अग्रद	थ्रद
म स् ता	वनाः		
3	૪	प्रपंड	मगट
3	૯	भिथात्त्रं	मिध्यात्यः
8	C	वात्रतो	दावतो
8	१०	जेने	जे ओ
8	१७	महद	यह त्
4	ą	छैनदे	छेवटे
4	१२	बाज	वाज
4	१६	आच्यो छे	आव्यो हे
Ę	ર	एक	ए के
હ	१४	इंहीराड	हेरीसरोड
ঙ	88	आगानंद	आत्मानंद
पश्ची	तर		
ર	९	सत्तर	सिस्तेर
३	१०	"	1,
२८	१९ .	गोप्टी	गोष्टी
4 3	१४	सरा	करा
३३	१७	स्वासीत्साससे	स्वासोस्वासां
३ ४	8	चुं च	चंचु
રૂ ૪	8	,,	,
·8·3·	१६	पांच 🐤	×

48	१ १		स्पाही	स्याहीः
G G	₹,		दुर्भक्ष	दुर्भिक्ष
५६	१७		द्वगुप्र	दवगुप्त
५७	१२		करीह	करी है
દ્વ ર	9 .		श्री क	श्री कक
ς8	3		बने	बने
16	6		प्रयाह	मुखा ह
66	१६		न हो है	न्स्ही है
9 ,0;	8 8		भक्षणकः	भक्षण करे
१०७	لع		पुस्हक	पुस्तक
१०९	Ę		श्रावकोंक्≱	श्चावकोको
११३	8 8		अव्भी	अवनी
११३	88		मनुष्यम्	म नुष्यमे
8 58	ર		ए कसाँ	×
284	१९		वजंत्रो	ब जीत्रो
११८	ર		केवल	केवछ
११८	9.3		वलदेव	ब लदेव
१२०	१६		आर्	औ। र
१२७	9		सूयर	सुवर
१३१	9		पडत	पढते
१४१	૪		धमन्	व्मन
१४६	6		मृढ	सूद
१६०	34	•	देशव्नती	देशवती

(३)

868	L	यंध	वं भः
१६८	१९	जूग	जुग ार
१९०	88	त्र	व
२१३	१३	(स्याद्वा),	(स्यादवाद्)
२१९	•	नंदन	लं डन
२१ ९	3 8º	प्रमाणं	प्रमाण् <u>।</u>
२२२	Ø	द्रपण	द्घण
२२२	१८	आवगः हनाः	अवगाहन
२२४	80	प्रमारम	प्रमाद् स
२्३ २	88	शकराम्	शक्राम्।
२४५	89	ज़ेन	ज्ञैन



